

पल्लवी प्रकाशन

अभ्यन्तर

Thoughtful passages from the literary corpora of Shri. Jagdish Prasad Mandal

Compilation by

डॉ. उमेश मण्डल

अभ्यन्तर

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश)

अभ्यन्तर

(जगदीश प्रसाद मण्डलक विचारोत्तेजक गद्यांश)

सङ्कलन एवम् सम्पादन

डॉ. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

ABHYANTAR (अभ्यन्तर)

Compilation by Dr. Umesh Mandal of Select Thoughtful passage of Shri. Jagdish Prasad Mandal

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 6200635563; 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452
फोण्ट सोर्स : https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts

दाम : 200/- (भा.रू.)

पहिल संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-93135-11-7

पोथीक मादे

'अभ्यन्तर' शब्दक अर्थ भीतरी, आन्तरिक, घनिष्ठ सम्बन्ध आदि होइत अछि। मुदा ऐठाम विचारोत्तेजक गद्यांश संकलनक नाओं अछि- अभ्यन्तर। संकलित गद्यांशक प्रथम संग्रह 'हेन्डबुकसँ फेसबुक धरि' प्रकाशित कए अनेको विद्वज्जनक प्रोत्साहन ओ आशीष पाबि उक्त विधामे द्वितीय संग्रह, 'समस्यासँ समाधान धरि' आ तृतीय 'निर्विकल्प'क पुस्तकाकार प्रकाशित कए आरो उत्साहित भऽ सम्प्रति चतुर्थ संग्रहक रूपमे 'अभ्यन्तर' सेहो प्रकाशित भऽ अपने लोकनिक हाथमे अछि।

उपरोक्त पोथीसभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक रचना-संसारसँ संकलित विचारोत्तेजक गद्यांशक संकलन छी। जे अनेको पाठकवृन्दकेँ आकर्षित केलकैन, कएटा शोधार्थी लोकैन सेहो उपयोगी पोथी हेबाक विचारसँ हमर मनोबलकेँ बढ़ौलैन। आ संगे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना कौशलसँ अवगत भऽ हुनक व्यक्तित्व ओ कृतित्वकेँ किछु विस्तारसँ जनबाक जिज्ञासा सेहो व्यक्त केलाह।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक जन्म 1947 इस्वीमे 5 जुलाईकेँ बेरमा गामक एकटा किसान परिवारमे भेलैन। 'बेरमा' मिथिलांचल अन्तर्गत मधुबनी जिलाक झंझारपुर अनुमण्डल स्थित लखनौर प्रखण्डक एक पंचायत अछि जे अपन प्रखण्डक उत्तरी-पच्छिमी कोणक अन्तमे पड़ैत अछि। ओना, बेरमा गाम तमुरिया रेलवे स्टेशनसँ तीन किलोमीटर उत्तर-पच्छिम आ एन.एच-57- चनौरागंजसँ दू किलोमीटर दच्छिन-पूबमे सेहो अछिए।

तीन पीढ़ीसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक परिवार एकपुरुखियाह रहलैन। द्रष्टव्य अछि- "दिनांक 5-7-1947 इस्वीमे जन्म भेल। भरल-पुरल परिवार। तीन पीढ़ीसँ एकपुरुखियाह परिवार चलि अबै छल। जहिना बाबा

तहिना पिता छला। घर लग पोखैर-इनार रहने पानिक सुविधा रहल।"[1]

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जखन तीनियेँ बर्खक अवस्थामे रहैथ तँ हुनक पिताक निधन भऽ गेलैन। मण्डलजी कहै छैथ- "पिताक मृत्युक किछुओ नै यादि अछि, सिरिफ गाछीमे जरैत अछिया टा...। जखन तीन बर्खक रही। दू भाँइक भैयारीमे छह बर्खक भैया रहैथ। पिताजी करीब एक मास बीमार रहला। इलाजोक नीक बेवस्था नहि, ताबत दरभंगा अस्पताल नै बनल छेलइ। झाड़-फूकसँ लऽ कऽ जड़ी-बुटीक इलाज समाजमे चलै छल।"

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पिता स्व. दल्लू मण्डल अगुआएल विचारक लोक छला। "एक तँ वंशगतो आधारपर आ दोसर जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पितोक ऊपर परिवारिक-समाजिक प्रभाव पड़ल छेलैन जइसँ किछु अगुआएल विचार रहैन।"[2]

पाँच-छह बर्खक अवस्थामे जगदीश प्रसाद मण्डलजी लोअर प्राइमरी स्कूल (बेरमा) जाए लगला। 1956 इस्वीमे प्राइमरीसँ उत्तीर्ण भऽ 1957 इस्वीमे अपर प्राइमरी स्कूल (कछुबी) मे नाओं लिखेलैन। तेकर पछाइत 1960 इस्वीमे केजरीवाल (झंझारपुर) उच्च विद्यालयमे नाओं लिखौलैन। आवागमनक असुविधा रहने पएरे झंझारपुर जाइत-अबैत रहला।

1965 इस्वीमे हायर सेकेण्ड्रीसँ उत्तीर्ण भेला। पहिने जनता कॉलेज-झंझारपुर, पछाइत सी.एम. कॉलेज- दरभंगामे नामांकन करौलैन। हिन्दी ओ राजनीति शास्त्र विषयसँ एम.ए. कऽ मण्डलजी अपन जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यकेँ अपनौलैन। ऐ प्रसंग मण्डलजी अपन पहिल औपन्यासिक कृति- 'मौलाइल गाछक फूल'क 'दू शब्द'मे कहलैन अछि- "जहिया एम.ए.क विद्यार्थी रही तहिए नोकरीसँ विराग भऽ गेल। आठ बीघा जमीन रहए। खेतीसँ जीवन-यापन करैक बिसवास भऽ गेल।"[3]

मण्डलजीकेँ खेती-किसानी कार्यसँ लगावक कारण की? ऐ प्रश्नक

---

[1] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 07*

[2] *तत्रैव, पृ.- 07*

[3] *मौलाइल गाछक फूल, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 09*

उत्तरमे दू गोट महत्वपूर्ण बात सोझामे अछि। पहिल, आत्मनिर्भरताक संस्कार आ दोसर परिस्थितिजन्य। परिस्थिति ई जे जगदीश प्रसाद मण्डल जखन तीनियेँ वर्षक छला तँ हुनक पिता मरि गेलैन। ई बात लगभग 1950-51 इस्वीक छी। मुदा ई गुण रहलैन जे पितेक अमलदारीसँ दू भाँइ पिसियौत आबि परिवारमे रहए लगलखिन। (कोसीक उपद्रवसँ भागल पीसा बेरमे माने सासुरेमे रहि गेल रहथिन।) तत्काल गार्जनी हुनके दुनू भाँइपर छेलैन। मुदा ओहो लोकैन अर्थात् दुनू "पिसियौत भाए 1960 ईस्वीमे अपन गाम 'हरिनाही' चलि गेला।"[4] मण्डलजीक परिवार बिनु पुरुष गार्जनक भऽ गेलैन। तइ समयमे ओ अपर प्राइमरी स्कूलक छात्र रहैथ। द्रष्टव्य अछि- "दुनू भाय, श्री कुलकुल मण्डल 1954 इस्वीमे आ हम 1957 इस्वीमे गामक स्कूलसँ निकैल अपर प्राइमरी स्कूल कछुबीमे नाओं लिखौने रही। 1960 ईस्वीसँ परिवारक बोझ पड़ल।"[5] स्पष्ट अछि जे तेरहे बर्खक अवस्थासँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक लगाव पारिवारिक क्रिया-कलापसँ, खेती-बाड़ीसँ रहलैन अछि। अर्थात् उपरोक्त प्रसंगक ईहो एक महत्वपूर्ण कारण भेल।

ओना, जगदीश प्रसाद मण्डलजीक माए (मकोवती देवी) साहसी ओ शिक्षाक घोर प्रेमी रहैथ। ओइ परिवारक रहैथ, जइ "परिवारमे मामा 1942 ईस्वीमे अंग्रेजक गोली खा चुकल छला।"[6] "अपन गहना, जमीन बेच देल बच्चाकेँ पढ़बै खातिर।"[7] अत: जगदीश प्रसाद मण्डलजी एम.ए.क अहर्ता सेहो प्राप्त केलैन।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल संवेदनशील व्यक्ति छैथ। हिनकापर पिताजीक प्रभाव सेहो छैन। स्वतंत्रता संग्रामक समयमे सामाजिक-आर्थिक स्थितिसँ उपजल विडम्बनाक प्रति साकांक्ष आ मंथनक प्रवृतिक व्यक्ति छैथ। 1947 इस्वीमे स्वतंत्र भेल भारत मुदा ई स्वतंत्रता आधा स्वतंत्रता अछि- ई

---

[4] *मौलाइल गाछक फूल, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 09*

[5] *तत्रैव, पृ.- 09*

[6] *तत्रैव, पृ.- 09*

[7] *तत्रैव, पृ.- 09*

विचार हिनका छात्र जीवनहिसँ उद्वेलित करैत रहलैन अछि। समाजक स्थितिपर हिनकर मन सदैव उद्वेलित होइत रहलैन। "सामन्ती सोच आ सामन्त मजगूत छल, जइसँ आम-अवामक बीच आक्रोश पनपए लगलै। राजा-रजबारे जकाँ शासन पद्धति चलए लगल।"[8] ..खेतमे काज करैबला बोनिहारोक स्थिति बद-सँ-बदत्तर छल। समस्यासँ ग्रसित राज्य सभ छलैहे तेँ भूदान आन्दोलन सेहो उधियाएल।"[9]

समस्याक प्रति सजग व्यक्तित्व जगदीश प्रसाद मण्डलपर सामाजिक अवस्थाक प्रभाव पड़लैन आ 1967 इस्वीक चुनावी दौड़मे जनवरी 1967मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्यता ग्रहण केलाह। 1967 इस्वीमे कामरेड भोगेन्द्र झा संसद सदस्य भेला पछाइत हुनकर पहिल आम सभा सकरीमे भेल छल जइमे पन्द्रह-बीस व्यक्तिक संग लाल झण्डा लऽ जगदीश प्रसाद मण्डलजी सेहो गेल छला। "अढ़ाइ-तीन घन्टाक पछाइत सभा विसर्जन भेल। सभामे भाग लेनिहार चारूकातक लोक चलि गेला। ..स्टेशनेपर भोगेन्द्रजीसँ पहिल भेँट भेलैन।"[10] ई क्रम मण्डलजीक कम्युनिस्ट पार्टीसँ लगावक पहिल सोपान अछि। मण्डलजी ओहिना कम्युनिस्ट दिस अग्रसर नहि भेला। एकरा पाछू समाजक दीर्घ समस्या सभ छेलैन जेकर क्रमवार परिचय निम्न तरहेँ अछि।

सृजनकर्त्ता संवेदनशील होइ छैथ। ओ केतेको तरहेँ अनुभव करै छैथ- 'पोथीसँ', 'प्रकृतिसँ', 'समाजसँ' आ 'समाज-देशसँ उठैत समस्यासँ', सुरुजक सौन्दर्य आ तापक अनुभव सभ व्यक्ति करैत अछि। मण्डलजी समस्याकेँ नीक जकाँ अनुभव केलैन आ ओइ समस्यासँ प्रेरित होइत रहला। यएह प्रेरणा हिनक धरोहर बनलैन।

किसानक समस्या- बाढ़िक समस्यासँ किसान त्रस्त होइ छल। ऊचगर जमीनपर बसब आ खेती लेल जंगल-झाड़केँ साफ कऽ उपजाऊ जमीन

---

[8] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 18*

[9] *तत्रैव, पृ.- 21*

[10] *तत्रैव, पृ.- 42*

बनाएब किसानक लेल अनिवार्य कार्य छल। बाढ़िसँ गामक गामकेँ घेरा जाएब आ फसलक बर्बादीसँ उपजल कष्टसँ परित्राणक आकांक्षा जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ जोर मारैत रहलैन। "मधुबनी जिलाक सीमा-कातमे हरिनाहियो आ हर्ड़ियो गाम बसल अछि। तइ बीचमे एकटा मरना धार अछि जे हरिनाहियो आ हर्ड़ीओ दुनू गामकेँ उपटौने छल।"[11]

चुनावमे धान्धली- स्वतंत्रता प्राप्तिक पछाइत सत्तापर कब्जा कऽ सुख-भोगक प्रवृत्तिक उदय भेल। तइले चुनावमे धान्धली पसरल- "चुनावमे जिला भरिक बूथपर खूब धाँधली भेल। ओना, जहिना खूब धाँधली भेल तहिना गामे-गाम मारियो-पीट खूब भेल आ केसो-मोकदमा खूब बढ़ल।"[12] ..पूर्व बिहार सरकारक छह गोट मंत्रीक विरूद्ध अय्यर साहेब रिपोर्ट देने छला। करोड़ोक लूट साबित भेल छल। द्रष्टव्य अछि हुनक शब्दमे- "बैद्यनाथ राम 'अय्यर', सुप्रीम कोर्टक जज छला। दक्षिणक छैथ। करीब पनचानबे-छियानबे बर्खक छैथ। जीविते छैथ। पूर्व बिहार सरकारक छहटा मंत्रीक विरूद्ध अपन जाँच रिपोर्ट दऽ देलखिन। करोड़ोक लूट साबित कऽ देने रहथिन।"[13] सामन्ती प्रथा टुटि रहल छल। देशमे लोक सभा आ विधान सभाक चुनाव लाठी हाथे शुरू भेल। जेकरा जतेक हँसेड़ी ओकर जीत निश्चित होइत रहए। दलित आ कमजोर वर्गकेँ भोँट खसबैये ने देल जाइ छल। मालिकक हुकुम ईश्वरक हुकुम मानल जाइ छल। एतबहि नहि, गिनतीमे धान्धली होइत रहल- "बहुमत अल्पमतमे नामो बदैल देल जाइ छल।"[14]

ऐ प्रकारेँ देशमे राजनीतिक पराभव भेल। अइमे स्वार्थ आ जाति भेद मुख्य आधार बनल। विशेष रूपसँ सामन्तवादी प्रथाक नव रूप सोझाँ आएल।

---

[11] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 37*

[12] *तत्रैव, पृ.- 40*

[13] *तत्रैव, पृ.- 40*

[14] *तत्रैव, पृ.- 88*

खेतीसँ लगाव- 1960 इस्वीमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी खेती दिस अग्रसर भेला। हिनकर अधिकतर कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी तथा पद्य-रचनामे सेहो प्रकृति प्रदत्त पानि, रौद, मेघ, बाढ़ि आ गाछ-बिरीक्षक वर्णन अछि। कुशल ज्ञानवेता सदृश समस्त प्राकृतिक उपादानक वर्णन ओकर लाभ-हानि सभ किछु हिनका रचनामे अछि। कोन मासमे कोन फसल हएत। जौं फसल बाढ़िमे भाँसि गेल तइ बीचमे कोन फड़ कोन जड़िमे भेटत, जेकरा खाकऽ जीवन निर्वाह हएत, एकर पूर्ण ज्ञान मण्डलजीकेँ छैन। खेतीसँ जीवनमे केना परिवर्तन होएत आ कोन फसिल नगदी हएत आ कोन पारम्परिक, तेकर विशद् वर्णन हिनक रचना सभमे छैन। हिनकर ई ज्ञान अनुभवसँ उपजल अछि। हिनक सम्पर्क कामरेड भोगेन्द्र झासँ रहैन। हुनकर विविध देश-विदेशक ज्ञानसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी लाभान्वित भेला- "जगदीश प्रसाद मण्डल खेतीसँ थोड़-बहुत जुड़ि गेल रहैथ। मिरचाइ, भट्टा, कोबी, अल्लू इत्यादि खेती शुरू केलैन। धान, मरूआ, रब्बी-राइक खेती जने हाथे हुअ लगलैन।"[15] ..भोगेन्द्रजीक सम्पर्कमे एला पछाइत जगदीश प्रसाद मण्डलजीक खेतीक प्रति आरो जिज्ञासा तेज भेलैन। तेज ऐ दुआरे भेलैन जे जर्मनी, जापानक खेतीक बात ओ मनमे बैसा देलखिन। हिसाब जोड़ैथ तँ दस कट्ठा खेत एक परिवारक (पाँच गोरे) लेल बेसीए बुझि पड़ैन।[16] एक तँ अपन हाथक पूजी खेत, दोसर जखन राजनीतिसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी जुड़ि गेलैथ तखन तँ काजो बढ़ि गेलैन। ..पूसा मेलासँ खेती-बाड़ीक किताब कीनि-कीनि आनए लगला। तैसंग किसानक जे कार्यक्रम होइ तइमे सेहो जाए-आबए लगला।"[17] विस्तृत अनुभवक उपयोग कऽ मण्डलजी खेती करए लगला।

जातिवादी प्रथा- जगदीश प्रसाद मण्डलजी समरस समाजक समर्थक छैथ। हिनक रचनामे जातिगत विद्वैष नहि देखल जा सकैए। सभक प्रति नम्र

---

[15] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 60*

[16] *तत्रैव, पृ.- 61*

[17] *तत्रैव, पृ.- 62*

आ आदरपूर्ण व्यवहार देखल जा सकैए। तखन तँ पूर्वसँ जकड़ियाएल समाज अछि। एकाएक मलेरिया-रोग जकाँ दवाइसँ भगौल नहि जा सकैए। हिनक रचनामे जातिगत स्वार्थक आकलन अछि। ऐ वर्णनसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी समाजकेँ सावधान करै छैथ। ओतइ टुटैत जाति-प्रथाक समर्थन सेहो करै छैथ-

"जगदीश प्रसाद मण्डलजी सभ विचार केलैन जे समाजक उत्थानमे जातिक कट्टरपन बाधा छी। ओना, जौं जातिक बीच कथा-कुटुमैती होइत अछि तँ ओ दू समाजक बीचक प्रश्न बनि जाइत अछि। मुदा समाजक बीच जातिक छूआ-छूत बहुत नमहर खाधि बनबैए...।

तँए महिनामे एकबेर बैसार करब आ ओ करब टोले-टोल घुमि-घुमि, ई सबहक विचार भेलैन। बैसारमे कोनो बेसी जोगारक प्रश्न नहि, मुदा टोलबैयाक विचारसँ, जौं ओ सभ खाइ-पीबैक बेवस्था करैथ तँ सेहो बढ़ियाँ, सभ खाएब, ई सबहक विचार भेलैन।"[18] ई विचार समरसता आ जाति प्रथाकेँ तोड़बाक हेतु एकगोट सुलभ तरीका खोजलैन जे मण्डलजीक समरस विचारक द्योतक अछि।

बटेदारी प्रथा- पुरातन कालसँ जमीन्दार गरीब लोककेँ जमीन बटाइपर दैत रहल अछि। जमीन्दारक ओइ जमीनपर खेती करत बटेदार। ऊपजामे बाटल जाएत। उपजा बाँटक भिन्न-भिन्न प्रथा। जमीन्दारक शोषण कायम रहल। समाजमे ई भावना उठए लगल रहैक जे 'कमाइबला खाएत' मुदा जमीन्दारक शोषणसँ आहत बटाइदारमे रसे-रसे विद्रोहक भावना उठल, जेकरा दबबैले लठैत हँसेड़ीक प्रचलन चलल। 'जेकर लाठी तेकर भैंस', ऐ तथ्यकेँ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल ऐ रूपेँ वर्णन केने छैथ- "हल्ला सुनिते-देरी जे जेत्तै रहए से तत्तैसँ लाठी लऽ कऽ दौगल। टोल आ दोकानक बिच्चेमे मारि फँसि गेल। जबरदस मारि भेल। केते गोरेकेँ कान-कपार फुटल। केस-फौदारी आ जहलक भय समाप्त भऽ गेल छेलइ। एकतीस दिनक भीतर

---

18 जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 63

अट्ठाइसो मुदालहक जमानत भऽ गेलैन। जमानतक पछाइत जमीनक दखल-दिहानी शुरू भेल। गड़बड़ भऽ गेल रहै जे, जे असल बटेदार रहै ओ केस नै केलक आ जे बटेदार नै रहै ओ केस केलक।"[19] बटाइदारी कानूनक पछातियो समाजमे ई प्रथा रहल जे अवसानक करीब-करीब पहुँचि चुकल अछि। छूआछूत सेहो समाप्त भऽ चुकल अछि। सुलभ शौचालयमे सभ वर्णक लोक काज करैत अछि। स्वरूचि भोजनमे परसयबलाकेँ जाति नहि पुछल जा रहल अछि।

भूदान आन्दोलन- विनोबा भावेक द्वारा चलाओल आन्दोलन सामन्तक कौर भऽ गेल रहए। जेकरा पाइ-जमीन रहैक ओकरो भूदानक जमीन दिअ लगलय। घूसक कुप्रथा लागू भऽ गेल रहैक। जगदीश प्रसाद मण्डलजी ऐ कुप्रथाकेँ अपना सोझमे देखने छैथ। हिनकापर एकरहु प्रभाव पड़लैन- "भूदानी आन्दोलन अपन स्वरूप बिगाड़ि पाइक अड्डा बनि गेल, जइसँ मामला आरो ओझरा गेल। ओझरा ई गेल जे एक्के जमीनक पर्चा तीन-तीन गोरेकेँ भेटल। जइसँ जमीनबलाक झगड़ा जमीन लेनिहारोक बीच फँसि गेल।"[20]

भ्रमण एक अनुभव- जगदीश प्रसाद मण्डलजीक बेसी जिनगी गामे-घरमे बीतल छैन। एकर नीक लाभ ई भेलैन जे हिनक अनुभूति-अनुभवक संसार पैघ छैन। कोन पाबैन कहिया हएत, कोन मासमे कोन फसल लगौल जाएत, कोन गाछक की उपयोगिता छै, कोन गाछक रोगक की उपाय होएत आदिक संग गाम-घरक दंगा-फसाद, जमीनक झंझटि-विवाद इत्यादि हिनक अनुभावात्मक संसार छैन, जेकर क्षेत्रफल बहुत पैघ छैन। एकदिन मण्डलजीक मनमे एलैन जे कोन राज्य कतय अछि? ऐ हेतु ओ एटलस बहार कऽ ताकए लगला। अइसँ हिनका मनमे भ्रमणक इच्छा जगलैन आ बहरा गेला भ्रमणक हेतु। हैदरावाद, त्रिपुरा, अगरतला, असम आ बंगालक भ्रमण केलैन। भ्रमणेटा नहि केलैन बल्कि ओतुक्का संस्कृति, भाषा, परिवेश,

---

[19] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 80*

[20] *तत्रैव, पृ.- 82*

लोकरंग इत्यादिकेँ सेहो एक जिज्ञासु सृजनकर्त्ताक रूपमे दर्शन केलैन।

“असामक उत्तर-पूबसँ लऽ कऽ दच्छिन धरि मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर, अरूणाचल, नागालैंड राज्य अछि। ट्रेनक रस्ता थोड़ेक आगू धरि अछि। ऐठामक मुख्य सवारी बस-ट्रक छी। जंगल-पहाड़सँ भरल इलाका। हजारो किस्मक गाछ-बिरीछ। उपजाऊ जमीन कम। ओना, जैठाम रंग-रंगक गाछ-बिरीछ अछि तैठाम खाइबला फल सेहो हेबे करतै। ठढ़िया साग बाध-बोनक घास जकाँ उपजल।”[21]

“पूर्वांचल (असाम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, अरूणाचल, नागालैंड आ सिक्किम) मिला अपने-आपमे एक देश छी। जंगल, पहाड़, झील, नदी घाटीक समूह। भाषाक दृष्टिसँ सेहो बहुभाषी अछि। अपन-अपन क्षेत्रक भाषा सेहो छइ। मोटा-मोटी बंगला, अंगरेजी, हिन्दी, खासी, गारो, ककवार्क, मणिपुरी, मिजो, आओ, कोंयक, अंगामी, सेमा, लोथा, मोंपा, अका मिजू, शर्दुकमेन, निशि, अपतनी, हिलमिदि, तगिन, अदी, इदु, दिगारू, मिजिखम्री, सिंगफू, तंगला, नोक्टे, वांचू, लोपचा, भोटिया, नेपाली लिंबू इत्यादि।”[22]

ऐ प्रकारेँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ आन-आन क्षेत्रक भौगोलिक, सामाजिक, आचार व्यवहार आ प्राकृतिक रूपकेँ दर्शन भेलैन।

मण्डलजीकेँ अपन पैघ अनुभवसँ अप्रत्यक्ष रूपेँ कम्युनिस्टक आकर्षण बढ़ैत गेलैन। वस्तुत: क्रिया रूपमे जखन अएला तँ पार्टीक मिटिंग, कार्यक्रममे सम्मिलित होइत रहला। गाम-घरमे जमीनक विवादसँ लऽ कऽ आनो-आन केतेको तरहक सामाजिक मुद्दासँ सम्बन्धित केस-मोकदमा लड़ला। केतेको बेर जहलक यात्रा करए पड़लैन। “1999 ई. अबैत-अबैत आशा-निराशाक बीच संक्रमणक स्थिति बनए लगलैन। 1998 ई.मे दफा 307क केसमे सजाए भऽ गेल रहैन। हाइ कोर्टमे अपील होइमे 20-25 दिन लागि गेलैन। तइ समयमे रामपट्टी जेलमे रहैथ। मने-मन आश्चर्य होनि जे

---

[21] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 99*

[22] *तत्रैव, पृ.- 103*

बिना किछु केनौं जहलमे छैथ। तहियो आ अखनो मन नै मानि रहल छेलैन जे कोनो गलती हुनकासँ भेल हुअए। खाएर, अपील भेल, जमानत भेलैन।"[23]

जगदीश प्रसाद मण्डलजी अपन आस-पासमे होइत तमाम घटना, यथा- प्राकृतिक घटना, समय परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन, राजनैतिक परिवर्तन, लोक मानसक परिवर्तनकेँ साकांक्ष भऽ सर्वेक्षण करैत रहला, एकरहि परिणाम अछि जे हिनक रचनामे सभ कथुक दर्शन होइत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ नव काल्हि देखैक इच्छा शुरूहेसँ रहलैन। से ओहिना नहि, केलाक पछाइत आरो मजगूत भेलैन। ऐ प्रसंगमे श्री गजेन्द्र ठाकुर लिखित हिनक वायोग्राफीमे आएल अछि- "जेतए परिवारमे साधारण शिक्षाक आगमन भेल छेलैन। तैठाम मण्डलजी एम.ए. तक पढ़लैन। परिवारे नहि, गामेमे पहिल एम.ए. भेला। ओना, पैछला पीढ़ीमे संस्कृतक माध्यमसँ एक-पर-एक विद्वान बेरमामे भेला मुदा जेनरलमे जगदीश प्रसाद मण्डलेटा रहैथ। ..दोसर उदाहरण- बोरिंग-करौने खेतियोमे किछु नवता आबि गेल छेलै गाममे। दुनू रंगक खेती करै छला मण्डलजी। दुनू रंगक सँ मतलब- अन्नो आ नगदियोक। नगदी खेतीमे तरकारी आ फलक खेती सेहो करए लगला। ओना, जइ रूपे करए चाहै छला ओइ रूपे नै होइक कारण छल, किछु समैयोक अभाव आ किछु उपद्रवो। खेतीक एहेन उजाड़ि होइत रहैन जे जौं मारि-झगड़ा करए लगितैथ तँ दिनमे तीन बेर होइतैन। पैघ समस्याक आगू छोट गौण पड़ि जाइ छइ। मुदा मन तोड़ैक तँ अस्त्र भेबे कएल। उपद्रवो चाहे जेतए हउ मुदा मनकेँ प्रभावित तँ करिते अछि। तहूमे खेतीक उजाड़ि जइमे मेहनत आ पूजीक संग समैयक क्षति सेहो होइत।"[24]

हजारो बर्खक गाछ किछु-ने-किछु अपनामे नवीनता अनिते रहैए। चाहे नव टुसा हउ आकि नव मुड़ी आकि नव पात आकि नव कलश। मण्डलजी पहिने विपुल अनुभव प्राप्त केलाक पछाइत लेखन दिस अग्रसर

---

[23] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 123*

[24] *तत्रैव, पृ.- 124-125*

भेला।

साहित्यक प्रति हिनक दृष्टिकोण जे छैन ओ द्रष्टव्य अछि- “मैथिली साहित्य जगत समाजसँ एते दूर हटि गेल अछि जे जोड़ब असान नै अछि। ओना, ई सिरिफ मैथिलीए-मे नहि, आनो-आन साहित्यमे भरपूर अछिए। जेना- कबीर दासक चर्च मैथिली साहित्यमे कम अछि मुदा कबीर दासक जे जिनगीक (जीवन पद्धति) इतिहास प्रस्तुत कएल गेल अछि ओ विवेकपूर्ण जकाँ नै अछि। विवेकपूर्ण नै हेबाक कारणेँ कबीर दर्शन समाजसँ हटि गेल अछि। जेहो सभ दर्शनक प्रचार-प्रसार कऽ रहल छैथ ओहो सभ या तँ अपनो गुमराहे छैथ, नहि तँ लाथी छैथ, जे गुमराह केने छैथ।

तहिना तुलसी दास ‘गोस्वामी’ कहबै छैथ, मुदा केतेक गाए पोसने छला? जरूरत अछि युगानुसार साहित्यक निर्माण करब।

तहिना जाधैर मैथिलियो साहित्य समाजक वस्तु (समाजक साहित्य) नै बनत ताधैर के केकरा की कहै छिऐ से भाँज थोड़े लगत। तँए शुभेक्षु साहित्यकारक दायित्व बनैए जे एक आँखि समाजपर रखि दोसर आँखि जखन कागत-कलमपर रखता तखन मैथिली साहित्ये नहि मिथिलाक कल्याण हएत। राज्यक अर्थ जौं राजधानीक एकटा कार्यालयसँ लइ छी तँए मिथिलाक समाज छुटि जाइए। मिथिलाक समाजिक पद्धति वैदिक पद्धतिसँ आगू बढ़त तखने सर्वांगीन विकास हएत।”[25]

2000 इस्वी धरि जगदीश प्रसाद मण्डलजी समाज सेवामे संलग्न रहला। रूढ़ि एवम् सामन्ती व्यवहारक खिलाफ लड़ाइ लड़ैत रहला, केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे हिनक लगभग चारि दसक समय बीति गेलैन, पछाइत साहित्य लेखनमे एला। द्रष्टव्य अछि- “पैंतीस साल धरि समाज सेवा केला पछाइत अपन हहरैत शरीर देखि किछु लिखै-पढ़ैक विचार जगल।”[26]

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पहिल रचना औपन्यासिक कृति ‘मौलाइल गाछक फूल’ छिऐन जे 2004 ईस्वीमे लिखला। 2008 इस्वी

---

[25] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 127*

[26] *तत्रैव, पृ.- 09*

धरिक अवधिमे पाँच गोट उपन्यास, एक नाटक तथा किछु कथादि लिखि चुकल छला। मुदा कोनहुँ पत्र-पत्रिकादिमे एक्को गोट रचना प्रकाशित नहि भेल रहैन। तथापि हिनक कलम, लिखबाक क्रम जारी रहलैन- प्रस्तुत अछि ऐ प्रसंगमे हुनकहि लिखल बात- "मौलाइल गाछक फूल 2004 ईस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन धरि पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचनाकारकेँ छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। 'भैंटक लावा' कथा सेहो दू-हजार चारिक पहिल कथा छी।"[27]

8 नवम्बर 2008 मे मिथिलाक प्रसिद्ध 'सगर राति दीप जरय'क 64म कथागोष्ठी डॉ. अशोक अविचलक संयोजकत्वमे हुनक गाम- रहुआ संग्राम (मधेपुर)मे आयोजित भेल छल जइमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी उपस्थित भऽ 'भैंटक लावा' कथा केर पाठ केलैन। ऐ गोष्ठीमे भाग लेबाक आग्रह डॉ. तारानंद 'वियोगी' केने रहैन। ओना, सगर राति दीप जरयक गोष्ठीमे भाग लेबए लेल आयोजक/संयोजकक हकार अनिवार्य नहि होइत अछि। कोनहुँ माध्यमसँ पता चलल वएह भेल हकार। 'वियोगीजी'सँ जगदीश प्रसाद मण्डलक पहिल भेँट 2008 इस्वीमे मधुबनीमे भेल छेलैन।

साहित्य क्षेत्रमे जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पहिल मञ्च रहुआ संग्राम 64 सगर राति दीप जरय कथागोष्ठीकेँ कहल जा सकैए। जैठामसँ हुनक रचना सार्वजनिक हएब शुरू भेल। ओना, पहिने बेरमा पंचायत आ रहुआ संग्राम, दुनू मधेपुर ब्लौकक अन्तर्गत पड़ै छल। जे कि जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कर्म क्षेत्र रहल छैन। समर्पित समाजसेवीक क्रिया-कलाप रहल छैन। 8.11.2008 लक्ष्मीनाथ गोसाँइक स्थानमे कार्यक्रम भेल छल। ओना, केतेक बेर राजनीतिक मञ्चपर रहुआमे बाजि चुकल छला, कर्म क्षेत्र छेलैन तँए कथा वचैमे संकोच नइ भेलैन।[28]

2008 इस्वीसँ पूर्व जगदीश प्रसाद मण्डलजीक एक्को गोट रचना

---

[27] *जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा वायोग्राफी, पल्लवी प्रकाशन, गजेन्द्र ठाकुर, पृ.- 09*

[28] *मौलाइल गाछक फूल, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 10*

सार्वजनिक नहि भेल छेलैन। कोनहुँ पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित नहि भेल छेलैन। पहिल रचना 'घर बाहर- पटना'सँ प्रकाशित भेलैन। जइ कथाक पाठ रहुआ संग्राममे केने छला, खूब प्रशंसा भेल छेलैन। ऐ प्रसंग मण्डलजीक वानगी निम्नांकित अछि-

"डॉ. रामानन्द झा 'रमण'जी ओ कथा मांगि लेलैन। किछुए मासक उपरान्त 'घर बाहर' पत्रिकामे प्रकाशित केलैन। सिद्ध पुरुषक स्थानमे प्रतिष्ठा भेटल। डायरी-कलम भेटल। गमछा-पाग भेटल। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक मुर्ति सेहो भेटल।"[29]

घर-बाहरमे एक आर रचना (कथा) प्रकाशित भेलैन। पछाइत 'मिथिला दर्शन- कोलकाता'मे 'चुनवाली' नामक कथा प्रकाशित भेलैन। चुनवाली, भैंटक लावा आ बिसाँढ़, कथा प्रकाशित होइते 'विदेह'क सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजीसँ सम्पर्क भेलैन। तेकर बाद मण्डलजीक रचना सभ पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित हुअ लगलैन। ऐ सन्दर्भमे जगदीश प्रसाद मण्डलजी 'अप्पन बात'मे लिखलैन अछि- "घर बाहरमे भैंटक लावा आ बिसाँढ़ छपल आ फेर मिथिला दर्शनमे 'चुनवाली' कथा पढ़िते अनेको बधाइ फोन आएल जेना- पञ्जीकार विद्यानन्द झाजीक। एकटा महत्वपूर्ण फोन श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक रहल। हिनकर फोन सुनिते जिनगीक ओहन चौबट्टी टपि गेलौं जे चौबीस घन्टाक खुशी मनमे आबि गेल।"[30]

2009 सँ 2013 इस्वीक बीच जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 27 गोट पोथी श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल छैन। जइमे हिनका एक्कहु पाइ प्रकाशनक हेतु खर्च नहि देबए पड़लैन। ई चीज स्पष्ट होइत अछि दू ठामसँ, पहिल जे लेखक स्वयं अपन 'तरेगन' पोथीक 'मनमनियाँ'मे लिखने छैथ- "समय-समयपर गजेन्द्रजी (श्री गजेन्द्र ठाकुर, मेंहथ)क आग्रह आ सुझाव आ संगहि श्रुति प्रकाशनक श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारीक भरपुर सहयोग भेटलासँ लिखैक नव उत्साहो आ आशो मनकेँ सक्कत बना

---

[29] *मौलाइल गाछक फूल, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 10*

[30] *तत्रैव, पृ.- 10*

देने अछि।"[31]

आ दोसर- 'अंशु' समालोचनाक पोथीमे श्री शिव कुमार झा टिल्लू लिखने छैथ- "जगदीश प्रसाद मण्डलजीक लघुकथा 'बिसाँढ़' आ 'भैंटक लावा' घर-बाहरमे आ 'चुनवाली' मिथिला दर्शनमे प्रकाशित होइते मैथिली पत्रिकाक सम्पादक मण्डलक संग-संग प्रबुद्ध पाठकक मध्य हड़होरि मचि गेल। 'पहिने आउ आ पहिने पाउ'क आधारपर विदेहक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर हिनक रचना सभकेँ अपन पत्रिकामे छपबए लेल हथिया लेलनि। ऐ प्रकारक शब्दक प्रयोग करबाक हमर तात्पर्य अछि जे जगदीशजी कोनो नव रचनाकार नै छथि, तिरसठि बर्खक माँजल साहित्यकार छथि, मुदा हिनक रचनाक प्रदर्शन नै भेल छल। समग्र रचना-संसार हिनक पुत्र श्री उमेश मण्डलजीक कम्प्यूटरमे ओझराएल छल किएक तँ छपबैले कैंचा केतएसँ आएत?"[32]

ऐ तरहेँ जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आगमन मैथिली साहित्यक दुनियाँमे होइ छैन। बिनु पाइक अर्थात् बिनु खर्चेक पोथी प्रकाशन मैथिली साहित्यमे नव उदाहरण छल। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 27 गोट पोथी एकसंग श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेलैन। वर्तमानमे ओही तरहेँ पोथीसभक प्रकाशन पल्लवी प्रकाशन, निर्मलीसँ भऽ रहलैन अछि।

प्रस्तुत अछि मण्डलजीक रचना संसार- **लघु कथा संग्रह-** 01. गामक जिनगी, 02. अर्द्धांगिनी, 03. सतभैंया पोखैर, 04. गामक शकल-सूरत, 05. अपन मन अपन धन, 06. समरथाइक भूत, 07. अप्पन-बीरान, 08. बाल गोपाल, 09. भकमोड़, 10. उलबा चाउर, 11. पतझाड़, 12. गढ़ैनगर हाथ, 13. लजबिजी, 14. उकड़ू समय, 15. मधुमाछी, 16. पसेनाक धरम, 17. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 18. फलहार, 19. खसैत गाछ, 20. एगच्छा आमक गाछ, 21. शुभचिन्तक, 22. गाछपर सँ खसला, 23. डभियाएल गाम, 24. गुलेती दास, 25. मुड़ियाएल घर, 26. बीरांगना, 27. स्मृति शेष, 28. बेटीक पैरुख,

---

[31] *तरेगन, जगदीश प्रसाद मण्डल, पल्लवी प्रकाशन, पृ.- 06*

[32] *अंशु, शिव कुमार झा 'टिल्लू', श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.- 53*

29. क्रान्तियोग, 30. त्रिकालदर्शी, 31. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 32. दोहरी हाक, 33. सुभिमानी जिनगी, 34. देखल दिन, 35. गपक पियाहुल लोक, 36. दिवालीक दीप, 37. अप्पन गाम, 38. खिलतोड़ भूमि, 39. चितवनक शिकार, 40. चौरस खेतक चौरस उपज, 41. समयसँ पहिने चेत किसान, 42. भौक, 43. गामक आशा टुटि गेल, 44. पसेनाक मोल, 45. कृषियोग, 46. हारल चेहरा जीतल रूप, 47. रहै जोकर परिवार, 48. कर्ताक रंग कर्मक संग, 49. गामक सूरत बदैल गेल, 50. अन्तिम परीक्षा, 51. घरक खर्च, 52. नीक ठकान ठकेलौं, 53. जीवनक कर्म जीवनक मर्म, 54. तरेगन, 55. बजन्ता-बुझन्ता, 56. शंभुदास, 57. रटनी खढ़, 58. संचरण, 59. भरि मन काज, 60. आएल आशा चलि गेल, 61. जीवन दान तथा 62. अप्पन साती।

कविता संग्रह- 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा।

नाटक- 01. मिथिलाक बेटी, 02. कम्प्रोमाइज, 03. झमेलिया बिआह, 04. रत्नाकर डकैत, 05. स्वयंवर।

एकांकी संचयन- 13. पंचवटी।

एकांकी- 01. कल्याणी, 02. सतमाए, 03. समझौता, 04. तामक तमघैल, 05. बीरांगना।

उपन्यास- 01. मौलाइल गाछक फूल, 02. उत्थान-पतन, 03. जिनगीक जीत, 04. जीवन-मरण, 05. जीवन संघर्ष, 06. नै धाड़ैए, 07. बड़की बहिन, 08. भादवक आठ अन्हार, 09. सधवा-विधवा, 10. ठूठ गाछ, 11. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 12. लहसन, 13. पंगु, 14. आमक गाछी, 15. सुचिता, 16. मोड़पर, 17. संकल्प, 18. अन्तिम क्षण, 19. कुण्ठा।

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना- 01. पयस्विनी।

'सगर राति दीप जरय' मैथिली कथा-साहित्य गोष्ठीमे जगदीश प्रसाद

मण्डलजी नियमित रूपसँ उपस्थित होइत रहला हें। 81म कथागोष्ठी श्री ओम प्रकाश झाक संयोजकत्वमे देवघर (झारखण्ड)मे आयोजित भेल छल। जेकर अध्यक्षता श्री जगदीश प्रसाद मण्डल ओ मञ्च संचालन श्री गजेन्द्र ठाकुर केने छला। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक उक्त अध्यक्षीय उद्बोधन यथावत निम्नांकित अछि-

"उदय-प्रलय शाश्वत सत् जहिना छै तहिना जिनगियो आ जिनगीक किरिया-कलाप सेहो छइ। मैथिली साहित्याकाशमे बीसम शताब्दीक आठम दशक ओहने ऊर्जावान साहित्यकारक टोली छल जेहेन बरसातक पछाइत ओस-पाला, गर्दा-धूरासँ स्वच्छ वायुमण्डलक संग अकास रहैए। एक संग हरिमोहन बाबू (हरिमोहन झा), तंतर बाबू (तंत्रनाथ झा), मधुपजी (काशीकान्त मिश्र 'मधूप'), किरणजी (काञ्चीनाथ किरण), मणिपद्मजी (ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म'), शेखरजी (शुधांशु शेखर चौधरी), योगाबाबू (योगानन्द झा), राघवाचार्यजी, (बोध नारायण झा), बहेड़जी (राधाकृष्ण झा 'बहेड़') आ राधाकृष्ण चौधरीजी सन मैथिली साहित्यकाशमे दुनियाँक सभ दिशा देखनिहार छला। दार्शनिक रहितो हरिमोहन बाबूकेँ मैथिली साहित्य हास्यसँ आगू नै बढ़ए देलकैन! एकैसम शदीक मांग अछि जे हुनक समीक्षा मिथिलाक चिन्तनधारा, अध्यात्म दर्शनक कसौटीपर हुअए। तहिना राधाकृष्णजीक इतिहासक मूल तत्त्वक सेहो। चौधरीजीक इतिहास समाजमे पाठकक बीच एक नब सोच आ नब दृष्टि दैत अछि तँए ओइ दृष्टिसँ हुनका देखल जाए। भऽ सकैए किछु पोथी हाथ नै पड़ल होइन, मुदा इतिहासो तँ इतिहासे छी। जे अखन तक राजा-रजबारासँ आगू नै बढ़ल अछि, तैठाम इतिहासक पूर्णता देखब उचित नहि। दुर्भाग्य रहल अछि जे अखन धरिक इतिहास सामाजिक ताना-बानाकेँ नीक जकाँ नै ताकि सकल अछि। अखनो मिथिलाक खान-पान आ घर-दुआर अपन आदिम स्वरूपकेँ बँचौने अछि। मात्र देखैक नजैरक जरूरत अछि। जे मधुपजी पोरो सागकेँ देखि सकै छैथ ओ साग खेनिहारकेँ नै देखि पबितैथ? रहस्यमय अछि। किरणजी तँ सहजे मैथिलीक किरणे छला। कठही पैडिलक साइकिलपर शतरंजी चौपेतले रहै छेलैन। शरदक चान जकाँ चमकैत सोभाव। मात्र चाहपर अभ्यागती! बीचमे

एकटा प्रश्न उठैए, ओहन टोली आइ किए ने? साहित्यजगतमे जागरण छल, समाजक बीच जिज्ञासा छल जे कि साहित्य हमरो छी। किरणजीक स्पष्ट कहब छेलैन, जहिना बजै छी तहिना लिखू, जहिना समाजकेँ देखै छिऐ तेहने विषय बनाउ, वएह भेल साहित्य। जेहने विचार किरणजीक रहैन तेहने विचार राहुल सांकृत्यायनजीक सेहो रहैन। हुनको कहब छैन अपन बात आन आ आनक बात अपने नीक जकाँ बुझि जाइ, वएह भेल ओइ भाषाक व्याकरण। भाषाक धाराक अंग भेल शब्द। भाषाक धारा ओइसँ वृहत अछि। आन भाषा केना आन भाषामे प्रवेश करैए ओ अलग प्रक्रिया भेल। मणिपद्मजी, सचमुच साहित्यक मर्म बुझनिहार मणिपद्म भेला। ओना अपनो जिनगीक अनुभव आ दरभंगा जिलाक पुबरिया हिस्साक अखनो की गति अछि ओइ अनुकूल हुनक सृजन छैन। बेछप साहित्यकार। एकभग्गू कविए मात्र नै छला, लोकगाथाक मर्म बुझनिहारो छला। आठम दशक उर्वर होइक कारण यएह सभ छला। जहिना आठम दशकक उर्वरता छल तहिना नअम दशक उसराह बनैत गेल, बनियेँ गेल। मुदा तैयो साहित्यक धार बहिते रहल अछि। एकटा बात आरो, आठम दशक ओहन रहल, जइमे गाम-गाममे हेराएल-भुतिआएल किछु साहित्यकार सेहो भेटला। मुदा अखनो बहुत हेराएल छैथ। किछु हेराएलो गेला।

सगर राति दीप जरय, कथा गोष्ठीक आयोजनक अवधारणाक जन्म किरणजीक जयन्तीक अवसरपर लोहना (धर्मपुर)मे एकत्रित साहित्यकारक बीच भेल। मुदा साकार भेल प्रभास कुमार चौधरीजीक माध्यमसँ। एकटा बात बीचमे, किरणजी सन खोद-बेद केनिहारक जयन्तीक अवसर, दोसर प्रभासजीक स्थापना। जिनक बेछप जिनगी, बेछप सोच, बेछप सृजन, बेछप नजैर..। असीम जिज्ञासाक सम्वेदना रग-रगमे रमल छेलैन। जेकर परिचय जीवन्त रचना अखनो दाइए रहल छैन।

साहित्यकारक बीच सहमत बनल जे जहिना पंजाबी सहित्यमे 'दीवा जले सारी रात' कथा गोष्ठी भरि रातिक होइए, तहिना मैथिलियोमे हुअए। नब उत्साह नब जिज्ञासाक संग प्रभास भाय डेग उठौलैन। मनमे छेलैन जे साहित्यिक धारा समाजक संग चलए। मुदा किछुए साल पछाइत मरि गेला।

पहिल कथा गोष्ठीक आयोजन मुजफ्फरपुरमे भेल। ओतए प्रभासजी नोकरी करै छला। रेणुजीक अध्यक्षतामे गोष्ठी भेल। रेणुजी सेहो समाजकेँ निष्पक्ष ढंगसँ देखै छला। तइ दिनसँ अखन धरिक कथा गोष्ठी मैथिली साहित्यक धरोहर छी, पूजी छी। एक तँ कथा गोष्ठी, दोसर साहित्यक मुख्य विधा, तँए पहिल सन्तानो कहल जा सकैए।

पहिल कथा गोष्ठी जनवरी 1990 इस्वीमे भेल। पहिल गोष्ठीमे कथापाठ केने रहैथ, रमेशजी- 'थाक', श्रीनिवासजी (शिव शंकर श्रीनिवास)- 'वसातमे बहैत लोक', विभूति आनन्दजी- 'अन्यपुरुष', अशोकजी- 'पिशाच', सियाराम सरसजी- 'ओहि साँझक नाम', प्रभासजी- 'खूनी', रविन्द्र कुमार चौधरीजी सेहो कथा पाठ केलैन। तैबीच डॉ. नन्द किशोर जे एल.एस. कौलेजक नीक शिक्षक, हिन्दीमे कथा पाठ केलैन। मुदा दुर्भाग्य ईहो जे ओ मैथिलीभाषी रहितो हिन्दीमे पाठ केलैन। समीक्षको छैथ। कथाक समीक्षक रूपमे कथाकारक संग रामानन्द झा 'रमण'जी, भीम भाय (भीमनाथ झा), मोहन भारद्वाजजी, जीवकान्त, कथा पाठ जीवकान्त केलैन कि नहि से जनतबमे नइ अछि। इत्यादि समीक्षकक संग किछु दर्शको रहबे करैथ।

तेसर कथा गोष्ठीसँ पोथीक लोकार्पण शुरू भेल, जे बढ़ैत-बढ़ैत दरभंगा गोष्ठी शीर्षपर पहुँच गेल। एक संग पैंतीस-चालिसटा पोथीक लोकार्पण! निर्मली कथा गोष्ठीसँ पूर्ब धरि शीर्षपर रहल। निर्मली गोष्ठीमे पैंतालिस-पचासटा पोथीक लोकार्पण भेल। कथा गोष्ठीसँ कथाधारामे एक गति आएल, नब-नब रचनाकारक प्रवेश गोष्ठीमे होइत रहल, गोष्ठी आगू बढ़ैत रहल। मुदा गोष्ठीक बीच एकरूपता नै रहल, केतौ एहेन आयोजन भेल जे साँझसँ भोर भेलो पछाइत कथाकारक कथा रहि जाइ छैन तँ केतौ अधरतियेमे बेवस्थापक चाह-पान समेट लइ छैथ, खाएर जे भेल। साहित्य गोष्ठी साहित्यकारक मञ्च छी। जइ मञ्चपर सभकेँ अपन विचार रखैक हक छैन। जखन सभ कियो मिथिलाक विकास चाहै छी तखन मत-मतान्तर किए? कथा गोष्ठीक संग कथा-विचार मंचोक तँ जरूरत ऐछे। लिखैक मानदण्ड, समीक्षाक मानदण्ड के बनौत? समयानुकूल दृष्टिये तँ समसामयिके ने जिम्मा भेल। समसामयिक रचनाकारक रचनाकेँ स्तरानुसार सिलेबसमे

स्थान आवश्यक अछि।

दुनियाँमे पैघ-पैघ शिक्षण संस्थान जनसहयोगसँ चलि रहल अछि, की अपना ऐठाम नै चलि सकैए? एकटा विश्वविद्यालय अछि, रेडियो स्टेशन अछि, ओ केना नीक जकाँ बढ़ि सकए, सबहक जिम्मा भेल। एकटा विश्वविद्यालय अछि, जे सोलहन्नी सरकार दिस तकैए, तहूमे लूटिक बाढ़ि छइहे, तइसँ केते आशा कएल जा सकैए। मिथिलामे पाइबला शिक्षण प्रेमी नै छैथ, सेहो बात नै अछि। गजेन्द्रजीक (गजेन्द्र ठाकुर) सम्पादनमे नागेन्द्रजीक (नागेन्द्र झा, श्रुति प्रकाशन) सहयोगसँ केते पोथी प्रकाशित भेल अछि ओ अपने-आपमे एकटा उदाहरण अछि। ओना बेकतीगत रूपमे गजेन्द्रजीकेँ केना बिसरल जाए जे टैगोर पुरस्कारमे एँड़ी-चोटी एक केने छैथ। कोंचिन जाइ काल पटना एयरपोर्टपर अपन गाड़ीसँ पहुँचा सभ किछु देखा-सुना दुर्गानन्द मण्डलक संग विदा केलैन। स्पष्ट सोच छैन जे आर्थिक दृष्टिये कमजोर रचनाकार लोकनिक रचना प्रकाशित करब। से करबो केलैन आ करितो छैथ।

अन्तमे, बेवस्थापक ओम बाबू (ओम प्रकाश झा) निर्मली गोष्ठीमे अपन गजल संग्रह नेने लोकार्पण करबए पहुँचला। ओना किछ-किछ पहिनौंसँ बुझल छल मुदा चेहरा देखि झुझुआ गेलौं। किछु करैक जिज्ञासा तँ मनमे छैन्हे। ऐगला बात आगू, अखन तँ अशे धरि। अन्तमे, अन्हरा-अन्हरी माए-बापकेँ कन्हेठ जहिना श्रवणकुमार चारू धाम देखबए विदा भेला तही आशाक संग अपन दू शब्दमे विराम लगबै छी। धन्यवाद! जय मैथिली।”

‘सगर राति दीप जरय’क शतांक आयोजनक अवसरिपर सेहो श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक वक्तव्य महत्वपूर्ण रहल छैन। उक्त कथागोष्ठी निर्मली (सुपौल) मे दिनांक 22 दिसम्बर 2018क आयोजित भेल छल। जइमे सगर ‘राति दीप जरय’क मादे ‘शुभकामना’ व्यक्त केने छला। प्रस्तुत शुभकामनाकेँ रेकॉडिग कऽ लिपिबद्ध कएल यथावत रूप निम्नांकित अछि-

“आइ अध्यक्ष वा अन्य पदाधिकारीक चुनाव तँ नहियेँ भेल। ई नीक बात, तँए अध्यक्षजीक सम्बोधन केना करी, तखन विद्वज्जन...।

आइ सौमा कार्यक्रमकेँ पाबैन हम-सभ मना रहल छी और ऐ पाबैनकेँ कोनो कार्यक्रम–जे साहित्यिक कार्यक्रम होइ वा राजनीतिक कार्यक्रम होइ–भार लेनिहारमे जखन ई भावना आबि जाइ छैन जे कार्यक्रम अप्पन छी, जँ केतौ त्रुटियो भऽ रहल हेन तँ ओकरा अनठबैत, कार्यक्रमकेँ अधिक-सँ-अधिक सफल केना बनाबी, नीक-सँ-नीक केना बनाबी..; ई औझुका कार्यक्रमक स्पष्ट प्रमाण अछि। जे सबहक जिज्ञासा एहेन रहलैन जे कार्यक्रम सफल हुअए...!

ऐठाम पैघ-पैघ बहुत लोक सभ छैथ, पैघ-पैघ माने साहित्यिक क्षेत्रमे, साहित्यिक काज केनिहारक क्षेत्रमे...। आइ भाषाक दृष्टिकोणसँ अहाँ कहबै जे कि मैथिलीकेँ की जान छै? तँ एक्केटा शब्द हम कहब जे अंगरेजी डिक्सनरी लिअ और अहाँ मैथिलीमे, डिक्सनरी नइए जँ कियो लिखनौं छैथ तँ प्रकाशित जकाँ नइ भेल छै, भऽ सकै छै जँ गोटे-आधे प्रकाशित भाइयो गेल होइ तँ, हम नइ देखलिऐ हेन। जे एकटा, जैठाम एकटा शब्द अंगरेजीमे छै तैठाम मैथिलीमे अहाँकेँ दर्जनो शब्द ओइ शब्दक छइ! एतेक समृद्ध भाषा मैथिली अछि। जनभाषा छिऐ। और ई धरतीसँ ऐ भाषाक जन्म भऽ रहलै हेन, आ हेतइ, आगूओ हेतइ। भाषाक जन्म और भाषाक विकास अवरूद्ध नै कहियो हेतै, ओ समयक अनुकूल परिवर्तित होइत चल जेतइ! और बढ़ैत जेतइ...!

तँए भाषा कमजोर नइए। हँ, साहित्यक क्षेत्रमे भलेँ कहबै जे रचना हमरा सबहक कम अछि। और रचनो जे अछि ओइमे सभ विधापर...। समाजकेँ..। आइ, हम सभ अतीत दिस कनी बेसी बढ़ि जाइ छी, जे रचनाकारमे हमरा कनीक दोष बुझाइए। ई बात जरूर जे ओ इतिहास छी, ओ पुराण छी, ओ परम्परा छी..! मुदा ओकरा ओइ दायरामे राखए पड़तै। ओकरा अगर आइ हम वर्तमान वा भविसकेँ नजैरमे राखि कऽ जँ मनुखकेँ देखबै तँ ओ कल्याणकारी नइ हेतइ। कल्याणकारी लेल दुनू दिस देखए पड़त। ओइसँ अहाँकेँ सीख लिअ पड़त- अतीतसँ, मुदा ओकरे पूजा-पाठमे उतारि देबै, ओकरे हम भविस बनाकऽ ओही दिशामे बढ़ि जेबै तखन

साहित्य अवरूद्ध भऽ जेतइ।

औझुका जे कार्यक्रम देखलौं हेन जइमे ठीके शिवकुमार बाबू कहलैन हेन जे “किछु गोरे ग्रूप बना कऽ..!”

मुदा नहि.., आइ जहिना एकठाम सभकियो एक विचारसँ, एक समस्याकेँ मानि कऽ, जे मैथिलीक कल्याणक सबाल अछि ऐ बिन्दुपर अगर जँ हम एकजुट भऽ अहिना आगू बढ़ैत रहब तँ मैथिलीक विकास, जे चाहै छिऐ, विकास तँ भाइये रहलै हेन आ हेबै करतै, ओ तँ विकासक एक प्रक्रिया छिऐ, ओ तँ समयक मांग छिऐ, ओ रूकतै नहि, भलेँ ओ मनथर गतिसँ होइ वा द्रूत गतिसँ होइ, तँए चाहब जे अधिक-सँ-अधिक कार्यक्रम अहाँक साहित्यमे हुअए, अधिक-सँ-अधिक हमसभ एकठाम भऽ कऽ अपन विचारक जे ‘आदान-प्रदान’ अछि ओ करैत रही। किए? आइ, मानि लिअ जे अहूँ नीक चाहि रहलिऐ हेन जे मैथिलीक कल्याण होइ, हमहूँ चाहि रहलिऐ हेन जे मैथिलीक कल्याण होइ, तरखन मतभेद केतए? फेर मतभेद केतए भऽ जाइए? सभ दृष्टिकोणमे...। ऐठाम जे इतिहास रहलै हेन, इतिहासे नहि रहलै हेन, जेकरा ‘वैदिक बात’ कहै छिऐ वा ‘शास्त्रीय बात’ कहै छिऐ ओहीमे दू दिशा भऽ गेलिऐ! सभठाम..!

आब, जेना ऐठाम ब्रह्मेक विषयमे लिअ, कियो अद्वैत मानलैन, कियो द्वैत मानलैन, कियो द्वैताद्वैत मानलैन, कियो विशिष्टाद्वैत मानलैन...। ढेर तरहक विचार, ढेर तरहक विचारक जरूरत और ढेर तरहक मतवाद जे छै जे उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। तँए ई सभ अलग बिन्दु अछि। मुदा मैथिली, जे अपना सबहक भाषा छी, अपना सबहक साहित्य छी, ई केकर छिऐ, केकरा-ले छिऐ? ऐ चीजकेँ नजैरमे राखि हम सभ मैथिलीकेँ दशा-दिशा दिऐ। और मैथिलीक प्रगतिक माने मैथिलीक भाषा कि मैथिली साहित्यक प्रगति नहि होइ छै, मिथिला समाजक होइ छै, हमर-अहाँक होइ छइ। ई कल्याणकारी बात एकरे भीतरमे छिपल छै, ऐपर हम सभ नजैर राखी और अहिना कार्यक्रम अनवरत चलैत रहए।

और दिलीपोजीकेँ हम आग्रह करबैन जे सघन कार्यक्रमक दिशामे.., अहाँ जेनरल हकार दियौ कोनो कार्यक्रम होइ, हम जेनरल हकार दिऐ कोनो

कार्यक्रममे, अहिना जे कियो छैथ, कमल बाबू छैथ। सभ कियो कार्यक्रम कऽ रहला हेन। नारायण बाबू छैथ, ईहो बहुत सक्रिय लोक छैथ, आ बहुत कार्यक्रम कऽ रहला हेन। सभकियो एकदम समान दृष्टिसँ, जेनरल दृष्टिकेँ अपनाकऽ जे सबहक कार्यक्रम छी, सबहक चीज छी, हम सभ एकठाम बैसी। कियो आबैथ, कियो नइ आबैथ अइमे तँ बहुत तरहक बात होइ छइ। केते गोरेकेँ कए तरहक समस्या भऽ जाइ छैन, कए तरहक समस्या उपस्थित भऽ जाइ छैन। एकर माने ई नइ हेबाक चाही जे एह! फल्लाँ रूसि रहला तँए फल्लाँ नइ एला..। नइ गलत बात! ई बात नइ हेबाक चाही। हम सभ एकजुट भऽ कऽ अहिना जहिना मैथिली भाषा और साहित्यक झण्डा उठा कऽ आइ सौमा कार्यक्रम कऽ रहलिऐ हेन तहिना उठा कऽ फेर हम सभ ऐगला सौ केर बाद जे कार्यक्रम छै, और अनेको जे कार्यक्रम छै, ओइ सभमे अहिना सक्रिय बनल रही और अहिना कार्यक्रम चलैत रहए...।

औझुका कार्यक्रमकेँ जे सफल बनेबाक लेल विद्वज्जन एकठाम भऽ सौमा पाबैन मना रहल छैथ ऐ लेल हम बहुत खुशी छी और चाहब जे अहिना हमरा सबहक अनवरत गाड़ी चलैत रहए। अही आशाक संग हम अपन विचारमे विराम दइ छी।"

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक साहित्य सेवा लेल समय-समयपर सम्मान/पुरस्कार सेहो भेटैत रहलैन अछि। यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साक्षर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सेमिनरी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक क्षेत्रमे अमूल्य योगदान हेतु ज्योत्स्ना-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा

‘स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान- 2018’, चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध ‘यात्री चेतना पुरस्कार- 2020’, मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा ‘राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020’, भारत सरकार द्वारा ‘साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021’ तथा साहित्य ओ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मञ्च द्वारा ‘अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022’

अन्तमे, हम समस्त विद्वज्जनक प्रति सदा अभारी रहबाक विचार व्यक्त कऽ रहल छी, जनिक प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रोत्साहन पाबि ऐ कार्यकेँ कऽ सकलौं अछि। संगे, आदरणीय प्रो. धीरेन्द्र कुमार, श्री राजदेव मण्डल, श्री नन्द विलास राय, श्री रामविलास साहु आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजी केँ केना बिसैर सकबैन जे डेग-डेगपर संगे रहै छैथ। पल्लवी, तुलसी, मानू आ पत्नी-पूनम-दे की कही, हिनकहि सबहक सहयोगे हमरा द्वारा कोनो कार्य सम्भव भऽ पबैत अछि।

जय मैथिली.. जय साहित्य.. आजुक जीवन आजुक साहित्य.! ■

-उमेश मण्डल

तुलसी भवन, निर्मली

सुपौल

ओना, शास्त्रीजी कें सोल्होअना भंगतराह नहि कहबैन। परिवारक जे अस्त-व्यस्ता छैन, ओ शास्त्रीजी कें एकाग्र हुअ'ए ने दइ छैन, जइसँ केलहो श्रम हेरा-ढेरा जाइ छैन। एक तँ श्रम अपने-आपमे अनमोल रत्न छीहे मुदा ओकरा परेखब आ प्राप्त करब तँ आरो, माने जखन कुशल परेखनिहार आ प्राप्तकर्ता रहता तखने ने भेट सकै छैन।

भाय, साहित्य जगत छी माने साहित्यकारक समाज छी, ऐ बीच शास्त्री, उपशास्त्री, आचार्य, उपाचार्य इत्यादिक भरमार अछियो आ रहक्को चाहबे करी। अपना गाममे माने किसानपुर गाममे सेहो गोटि-पंगरा साहित्यकार साहित्यसँ जुड़ल छथिए। भाय, ऐठाम एहेन धोखा नइ हुअए जे एहनो-एहनो गाम सभ अछि जइमे छेहा माने सोल्होअना साहित्यकारे छैथ आकि सोल्होअना प्रोफेसरे वा डॉक्टरे छैथ। गोटि-पंगरा साहित्यकार, वैज्ञानिक, प्रोफेसर, डॉक्टर गामे-गाम आइये नहि, सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि।

किसानपुर गाममे माने अपना गाममे रविकान्त भाय सेहो साहित्यसँ जुड़ल छैथ। रविकान्त भाइक संग चारि-पाँच आरो साहित्यकार ओहिना काँखमे झोड़ा टंगने रहै छैथ जहिना भाड़ा-किराया पाबि सीताराम सीताराम करैबला मंडली सभ अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे हम हुनकर खिदहौंस करै छिऐन। हुनकर एकनिष्ठता छैन। जखन समाजमे ओहन वस्तुक मांग बढ़ल तखने ने एहेन-एहेन मंडलीक माल उठिकऽ ठाढ़ भेल। आजुक जे भोज-भात अछि, ओ जँ प्राचीन पद्धतिक समाजसँ चलैत, तँ गाम-गाममे भानस करैबला श्रमिक वर्ग बनि केना पबैत? जे अखनो भरि दिन चुल्हिक आगि लग अपन देह झड़कबैए। तेतबे नहि, भोज्य-विन्यासक सैंकड़ो नब रूप गढ़ैक लूरि सेहो रखने अछि। मुदा ओकर मेहनताना केते होइए? खाएर

ऐठाम से नहि। बस एतबे जे रविकान्त भाय साहित्य सेवामे लगल छैथ।

रविकान्त भाय एक उमेरिया छैथ। ओना, अपन जीवनकेँ ढंगसँ पकैड़ रविकान्त भाइक सीमा धरि जरूर पहुँच गेल छी मुदा पण्डित जवाहरलाल नेहरूजी जकाँ चाचा बनैमे देरी अछिए। नइ तँ विज्ञान पढ़निहार केतौ इतिहास लिखैथ। अपने जीवन जकाँ जँ बुझबैन, तखन हुनकर जीवन नीक जकाँ नहि ने बुझि सकब, मुदा जखन हुनकर जीवन-साधनाक बाट पकैड़ देखब, तखन हुनकर वास्तविक रूपक स्वरूप जरूर देखि लेब।

साहित्य मंचसँ जुड़ल जहिना शास्त्रीजी छैथ तहिना रविकान्त भाय सेहो छैथ। ओना, दुनू भैयारीमे जहिना भाय-भाइक भैयारीक सम्बोधनसँ होइए, तहिना दुनू गोरेक बीच सेहो होइ छैन। अपन आ रविकान्त भाइक एक तँ एकठाम घर रहने दिनमे तीन बेर भेँटो होइते छैथ। आ दोसर, अपनो जिज्ञासा रहैए जे गामसँ बाहर तँ वएह बेसीकाल निकलै छैथ, अपने तँ भरि दिन परिवारेमे ओझराएल रहै छी। तँए, साँझूपहर-के बड़बैर भेँटो करिते छिऐन। भाय, पोखरिक महारपर जे नट सभ बसल अछि ओ सभ जहिना साँझूपहरमे अपन परिवारकेँ माने पत्नीकेँ, ताड़ी पीला पछाइत लठियेबो करैए आ भरि राति सेवो नइ करबैए सेहो केना नइ कहल जाए। केतबो मारि-गारि किए ने सुनए मुदा अंगरेज जकाँ तलाक नइ ने देत।

शास्त्रीजी आ रविकान्त भायमे चेहराक रंग विचित्र रहितो एकचित्र बनल छैन्हे। माने ई जे जीवनमे, आयुक हिसाबसँ, रविकान्त भाय ऊपर छैथ। माने बीस बरख ऊपर छैथ आ शास्त्रीजी निच्चाँ छैथ। मुदा साहित्यिक जीवनसँ देखल जाए तँ शास्त्रीजी ऊपर छैथ। माने जैठाम रविकान्त भाइक साहित्यिक जीवन बीस बर्खक छैन, तैठाम शास्त्रीजीक जीवन पैंतीस-चालीस बर्खक छैन। साहित्यसँ माने सम्पूर्ण साहित्यसँ जेतेक रूचि शास्त्रीजीकेँ जे रहल होनु, मुदा कवितासँ रूचि शुरूहेसँ रहलैन, तँए पैंतीस-चालीस बर्खक कवि शास्त्रीजी भेबे केलाह। तैसंग कखनो-काल मंचक अनुकूल आरो-आरो साहित्यिक विधामे सेहो वक्तव्य दइते छथिन। शास्त्रीजीक अपन मनक बात छिऐन जे अपन विचार अनका खूब सुनबए चाहै छैथ आकि अनको बात सुनए चाहै छैथ। भाय एहेन विचार शास्त्रीएजी

टामे छैन सेहो बात नहियेँ अछि। अपनोमे अछिए। माने ई जे सदिकाल मनमे रहैए जे अपन बात आन सुनबेटा नहि मानबो करए, मुदा अनकर बात सुनैले, मानैक तँ कोनो गप्पे नहि, अपना छुट्टीए ने अछि।

पैंतीस-चालिस बर्खसँ शास्त्रीजी साहित्यिक विधामे किछु-ने-किछु लिखैत आबि रहल छैथ, मुदा सोभावसँ भंगतराह रहने कोनो लिखित रचनाक ठेकान नहि छैन। कहब जे भंगतराह किनका कहबैन? भांग पीबि कियो शिव-दरबारमे माने महादेवक दरबारमे शिव-भक्ति वा महादेव भक्ति करै छैथ आ कियो चौक-चौराहापर भाँगक दोकानसँ भाँग कीनिकऽ पीबि रस्ते-पेरे अर्र-दर्र करै छैथ।

ओना, शास्त्रीजी कैँ सोल्होअना भंगतराह नहि कहबैन। परिवारक जे अस्त-व्यस्तता छैन, ओ शास्त्रीजी कैँ एकाग्र हुअ'ए ने दइ छैन, जइसँ केलहो श्रम हेरा-ढेरा जाइ छैन। एक तँ श्रम अपने-आपमे अनमोल रत्न छीहे मुदा ओकरा परेखब आ प्राप्त करब तँ आरो, माने जखन कुशल परेखनिहार आ प्राप्तकर्ता रहता तखने ने भेट सकै छैन।

शुरूमे माने हाइ स्कूलमे जखन साइंस, आर्ट, वाणिज्य इत्यादि विषयक पढ़ाइ फुटैए, तइ समयमे शास्त्रीजी साइंसक विद्यार्थी छला, जे कौलेजमे आबि बी.एस-सी.क क्रममे मोड़ लेलकैन आ साइंस पढ़ब छोड़ि संस्कृत विषय पढ़ब शुरू केलाह। विश्वविद्यालयसँ 'शास्त्री'क उपाधि पौलैन। ओना, लगनशील एहेन जे वैदिक साहित्यकैँ धांगि देलैन। मुदा कोन रूपमे धँगलैन, से वएह बुझै छैथ।

तीन भाँइक भैयारीक बीच माझिल छैथ शास्त्रीजी। पाँच बीघा जमीन परिवारमे। शास्त्रीजी घुमन्तू भइये गेला। इलाकाक हिसाबसँ शास्त्रीजीक विवाह गड़बड़ भेलैन। इलाकाक हिसाबक माने भेल जे भौगौलिक बनाबटक कारणेँ कोनो इलाकामे श्रमशील माने शरीरसँ श्रम करैबला मनुक्खक निर्माण होइए आ कोनो इलाकामे श्रमक बदलल स्वरूप रहने वौद्धिक मनुक्खक निर्माण होइते अछि। विवाह गड़बड़ ई भेलैन जे पढ़ल-लिखल पत्नी रहने परिवारक स्तर ऊपर उठलैन, मुदा आर्थिक संकटसँ खसैत रहलैन। किसान परिवार शास्त्रीजीक छैन्हे। आ तैपर शास्त्रीजी घुमन्तू

भइये गेल छैथ। कविता पाठ, भागवत-पुराणक प्रवचन, गीता प्रवचन इत्यादिमे अपन सोल्होअना समय लगैबते छैथ।

जेठो भाय आ छोटो भाय, माने तीन भाँइक बीच शास्त्रीजी माझिल छैथ, गामक खेत हथिया लेलकैन। जाबे तक छोट परिवार शास्त्रीजीक रहलैन ताबे तँ कोनो समस्या नइ बुझि पड़लैन, मुदा जखन अप्पन दुनू बेटा छँटगर भेलैन, परिवारमे खेत-पथारक विवाद शुरू भेलैन, तखन अपन आमदनी कमलैन आ खर्च बढ़लैन।

अखन तकक जे जीवन शास्त्रीजीक रहलैन ओ परिवारक बेवहारक अनुकूल नइ रहलैन। परिवार बुझि शास्त्रीजी अपन पत्नियोँ आ बच्चो सभकेँ भाएपर ओंगठौने रहला मुदा अप्पन कमाइक कोनो हिसाबे ने रहलैन। सभ बुझिते छी जे लोअर प्राइमरीक बच्चाक पढ़ाइमे की खर्च अछि। तैठाम साहित्यकार सन भुखाएलक की खर्च हएत। ओना, साहित्य जगतक बीच शास्त्रीजीक एहेन वफादारी छैन्हे जे जैठामसँ हुनका हकार पड़ै छैन, तैठाम ओ जरूर पहुँचै छैथ। साइठ बर्खसँ ऊपरक उमेर भेलो पछाइत शास्त्रीजी पएरे वा साइकिलक सवारीसँ जीवन चला रहला अछि।

परिवारक विवादक एहेन स्वरूप बनि गेल छैन जे कोर्ट-कचहरीक काज दिनो-दिन बढ़िते जा रहल छैन जइसँ दिन-रातिक बीच एक्को पल चैन भेटब कठिन भऽ गेल छैन। गारजनक हैसियतसँ शास्त्रीजी जवाबदेह छथिए। अपन जे जीवन छेलैन, माने केस-मुकदमासँ हटल, तइमे काफी बदलाव आबि गेलैन। एक दिस आमदनीक कमी हुअ लगलैन, दोसर दिस यत्र-तत्र खर्चा बढ़ि गेल छैन। खाएर किछु छैन मुदा मनुक्ख बनि अखन तक तँ शास्त्रीजी ठाढ़ छथिए। नइ सभ कार्यक्रममे, माने साहित्यिक कार्यक्रममे, भाग लऽ पबै छैथ, तँए नहियेँ लइ छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

स्वभावसँ शास्त्रीजी साहित्यकारक ठाठ-बाठक लोक छथिए। अर्थशास्त्रसँ कहियो भेँट नहि भेलैन जे बुझि पेबितैथ, भावलोकक अर्थनीति की अछि आ भुवनलोकक अर्थनीति की अछि। अखनो शास्त्रीजीक अप्पन मन गवाही दइते छैन जे दानी बनि दान देब महादान छी, तँए मानबकेँ मानि लेबा चाही।

साहित्यिक कार्यक्रमक जे परिदृश्य बदैल रहल अछि तइ अनुकूल

शास्त्रीजीक विचारक परिमार्जन नहि भऽ सकलैन। अपना संयोजकत्वमे शास्त्रीजी साहित्यिक कार्यक्रम करैक निश्चय केलैन। तिथि निर्धारित कऽ लेलैन। साहित्य संसारमे बिरले कियो बाँचल हेता जिनकासँ शास्त्रीजीक सम्बन्ध नहि छैन। वहुआयामी वृत्तिक शास्त्रीजी छथिए, तँए सम्बन्ध स्थापित होइमे देरी लगिते ने छैन। परिवारोसँ फ्री छथिए। आजुक परिद्दश्यमे महिलाक हाथ-मुट्ठीमे की सभ छैन। बुझल बात अछिए जे महिलाक अधिकार दिआबैले सभ अपसियाँत छी, मुदा कोन घर एहेन छुटल अछि जइ घरमे महिला शासक नहि छैथ।

निर्धारित समयपर रविकान्त भाय अपन संगीक संग शास्त्रीजीक ऐठाम पहुँचला। जहिना सतयुगमे ऋषि-मुनि गाछक निच्चाँमे माने छाहैरमे अपन कला-संस्कृतिक प्रदर्शन करै छला तहिना शास्त्रीजीक दरबज्जाक आगूमे तीनटा आमक गाछ छैन्हे।

❑❑❑

❑❑

❑ **अप्पन साती (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या : 58-62**

गरीबीक चलैत मिथिलावासी आइए नहि,
पूर्वहिसँ नेपाल, बंगाल, आसाम धरि रोजी-रोटीक
लेल जाइत रहल छैथ। पटुआ काटब, धान रोपब,
धान काटब हुनका सबहक मुख्य कार्य छेलैन। सालक
छह मास ओ सभ कमाइ छला। मुदा ओइसँ पैघ-पैघ
उपलब्धि सेहो भेटल। अपना संग अपन भाषो, कलो-
संस्कृति लेनौं अबै छला आ लैयो जाइ छला जइसँ
दुनूक बीचक सम्बन्धमे प्रगाढ़ता अबैत रहल।

गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानक बीच बसल मिथिलो आ कामरूपोक रहने उपजा-बाड़ीसँ लऽ कऽ जिनगीक आनो-आनो सम्बन्ध सहज अछि। जहिना कामरूप तलहटी मैदानसँ लऽ कऽ पहाड़-पठार, वनक संग प्रवाहित होइत जलधारासँ सम्पन्न अछि तहिना बिहारो अछि। बंगालक खाड़ीसँ उठैत मानसुनसँ जहिना कामरूपक भूमि सिंचित होइत तहिना मिथिलांचलोक। ओना, मुँहपर पड़ने कामरूपमे अधिक बरखा आ जेना-जेना पछिम मुहेँ ससरैत तेना-तेना कम होइत जाइत, मुदा दुनूक बीच नजदीकी रहने बहुत बेसी अन्तर नहि पड़ैत। गंगा-ब्रह्मपुत्रक एक तलहटी रहने माटियो आ माइटिक सुगंधोकेँ एकरंगाह बनौने अछि। उत्तरी पहाड़सँ निकलैत (नदी धारा) जल धारो एक-रंगाहे रहल अछि। जैठाम जेहेन माटि-पानि तैठाम तेहन उपजा-बाड़ी। जैठाम जेहेन उपजा-बाड़ी तैठाम तेहने खानो-पान आ आचारो-विचार। जैठाम जेहेन खान-पान, आचार-विचार तैठाम तहिना कला-सांस्कृतिक सम्बन्ध। जे दुनूक बीच अदौसँ रहल अछि। ओना, खेती-बाड़ीमे एक-रूपतो अछि आ भिन्नतो। अधिक मध्यम बर्षा भेने, पनिसहू फसिलो आ फलो-फलहरीमे अन्तर होइत, से ऐछो। जइ कामरूपमे नारियल, सुपारी, चाहक बहुतायत अछि ओ मिथिलांचलमे कम अछि। ओना, मिथिलांचलमे सिरिफ आम हजारो किस्मक अछि। मुदा पटुआ आ धान

जहिना कामरूपक मुख्य फसिल अछि तहिना मिथिलोक। मुदा जहिना नीलक नब अविष्कार भेने नीलक खेती मारल गेल तहिना पोलीथिनक आगमनसँ पटुआक खेती प्रभावित भेल अछि।

मिथिलाक उर्वर भूमि। जहिना माटि-पानि तहिना स्वच्छ हवो। जइसँ सभ कथूक वृद्धि। चाहे ओ खेती हुअए आकि जीवन पद्धति हुअए आकि कला-संस्कृति। मिथिलांचलक चिन्तन धारामे सिरिफ उच्च कोटिक मनुक्खे नहि, उच्च कोटिक समाज आ सामाजिक-पद्धतिक सेहो दिशा-दर्शन रहल अछि। जन-गणक नगर जनकपुर। आ जनकपुरक राजा जनक। जनिक कन्या जगत जननी जानकी। एक-सँ-एक चिन्तक, तत्त्ववेत्ता, दार्शनिक मिथिला भूमि पैदा केने अछि। जेकर वानगी इतिहास-पुराण जीवित अछि।

जहिना सौंसे देश गुलामीक शिकंजामे हजारो बर्खसँ रहल तहिना देशक उत्तर-मध्य बसल मिथिलो अछि। ओना, मिथिला दू देशमे बटल अछि। साठि-पैंसैठ बरख पहिने भारत स्वतंत्रताक साँस लेलक जहन कि नेपालक मिथिला हालमे साँस लेलक। जहिना अभावी परिवारमे अभावक चलैत जीवनक सभ किछु प्रभावित होइत, तहिना भेल। जीवन-पद्धतिमे खोंट अबैत-अबैत खोंटाह होइत गेल अछि। जेकर असर अधलाह पड़ैत गेल। मुदा तैयो मिथिलाक वएह भूमि छी जे अदौसँ रहल।

मिथिलांचलक उर्वर भूमि रहने मनुक्खोक बाढ़ि सभ दिनसँ रहल, अखनो अछि आगूओ रहत। कतबो मिथिलावासी पड़ाइन (पलायन) केलैन, दुनियाँक कोन-कोनमे बसला अछि, तैयो मिथिलाक जनसंख्या पर्याप्त अछिए। जइसँ गरीबी रहल अछि। एक दृष्टिये देखलासँ जहिना पर्याप्त जनसंख्या अछि तहिना प्रचुर सम्पैतो अछि। मुदा दुनूक संयोगमे भिन्नता अछि। जइसँ दुनूक बीच भारी खाधि बनि गेल अछि। जिनकर गाम तिनकर सम्पैत नहि आ जिनकर सम्पैत तिनकर गाम नहि। जइसँ मुट्ठी भरि लोक पूर्ण सम्पैत हथियौने छैथ। जेकर ज्वलन्त उदाहरण पड़ाइन (पलायन) अछि।

गरीबीक चलैत मिथिलावासी आइए नहि, पूर्वहिसँ नेपाल, बंगाल, आसाम धरि रोजी-रोटीक लेल जाइत रहल छैथ। पटुआ काटब, धान रोपब,

धान काटब हुनका सबहक मुख्य कार्य छेलैन। सालक छह मास ओ सभ कमाइ छला। मुदा ओइसँ पैघ-पैघ उपलब्धि सेहो भेटल। अपना संग अपन भाषो, कलो-संस्कृति लेनौं अबै छला आ लैयो जाइ छला जइसँ दुनूक बीचक सम्बन्धमे प्रगाढ़ता अबैत रहल। एकठाम रहने दुनूक बीच सभ तरहक सम्बन्ध बनैत रहल आ अखनो प्रवाहमान धारा सदृश्य बनि बहि रहल अछि।

❑❑❑

❑❑

❑ पयस्विनी (2021), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 34-36

राता-राती मशीन दस गुणा आगू बढ़ि सकैए, मुदा मनुक्खक जीवनमे से थोड़े सम्भव अछि.! खाएर जेतए जे अछि से अछि तइसँ जीवानन्द भाय आ कुलानन्द भायकेँ तइसँ कोन मतलब छैन, कोन मतलब छैन जे मिथिलाक पंचदेवोपासनाक बीचक रग्गड़मे अनेरे पड़ल रहता। जीवन जीवन छी जे सभ अपन कल्याण चाहैए। जीवन जीबैक ढंग जहिना धर्म छी तहिना धर्मक ढंग सेहो तँ जीवन छीहे।

अखन धरिक जे साहित्यिक प्रवाह मैथिलीक अछि ओ समाजक प्रवाहसँ थोड़-थाड़ हटलो अछि आ थोड़-थार सटलो अछिए। अही धाराक प्रवाहमे कुलानन्द भाइक सम्बन्ध जीबानन्द भायसँ भेलैन। ओना, उमेरक हिसाबसँ दुनूमे पचीस बर्खक अन्तर छैन। अखन तकक जीवनमे, माने सम्बन्ध बनैसँ पहिने धरिक जे जीवन दुनू गोरेक अपन-अपन छेलैन तइमे, बुनियादी अन्तर छैन। ओना, जीवन माने बेवहारिक जीवनक संग वैचारिक जीवन सेहो होइए मुदा तइमे बाधा बीचमे घेरतो अछि आ नहियोँ घेरैए। ओ निर्भर करैए जीवनक गति-विधिपर।

जीवनक दू अवस्था बीचक दू जीवनक सम्बन्ध अछि। एक जीवन ओहन अछि जे जीवनक नीचमुँह ढालपर अछि आ दोसर जीवनक ऊपर मुँह चढ़ाइपर। समय अपना गतिये चलबे करत तँए फौतियो एबे करत आ भदबारि सेहो एबे करत। अखन धरिक जीवन, जीवानन्द भाइक जे पचपन-साइठक बीचक छेलैन, ओ माटिपर सँ माने सहीट जीवनपर सँ उठल जीवन छेलैन, तँए पहाड़ जकाँ धरतीसँ जुड़ल छेलैन जइमे दुर्घटना वा खसै-पड़ैक डर कम छेलैन। तँए कहब जे ओतबे ऊपरमे जँ हवाइ-जहाजपर रहब तखन तँ खसै-पड़ैक सम्भावना नै रहैए से नहि, ओइ अपेक्षा बेसी रहिते अछि।

समय अपना गतिये चलिये रहल अछि। परिवेशमे मोड़ एने किछु कारोबार, खेती-गिरहस्तीक संग आनो-आन, मारियो खेलक आ किछु बढ़बो तँ करबे कएल अछि। जहिना कबीर बाबा कहने छैथ जे 'दो पाटन के बीच में, बाँकी बचे ने कोई' तहिना परिवेश बनि रहल अछि। एक दिस हवाइ जहाजपर बिआहक मड़बा सजैए, भोज-भात होइए तँ दोसर दिस साबे जौड़क बान्हल खरही-बत्तीक बनौल मड़बापर सेहो बिआह रचल जाइते अछि। खेतमे काज करैबला वा करबैलाक ऐगला पीढ़ी, अपना ऐठाम मोटा-मोटी बीस बर्खमे पीढ़ी बदलैए, खेतसँ हटि कारखाना पहुँच रहल अछि, जइसँ जीवनमे मोड़ आबि ऐगला पीढ़ी पैछला पीढ़ीक वैचारिक पद्धतिकेँ मोड़ि रहल अछि। सोभाविक अछि, जीवनमे मोड़ एने एना हेबे करत, तेकर अनेको कारण अछि, आर्थिक आमदनीक बढ़ोत्तरीक संग ओहन नब जगह जे जीवनक मूल आवश्यकताकेँ पूर्ति करैबला बनि गेल अछि, तैठाम ग्रामीण जीवन आ शहरी जीवन पद्धतिक मोड़ वर्तमान जीवनकेँ मोड़बे करत।

अखन धरिक अपना ऐठामक जे जीवन पद्धति चलैत आबि रहल अछि, तइमे सामाजिक रूपक संग वैचारिक दुनियाँमे समरसपन अछि जइसँ समाजक धुरी गतिशील अछि। मुदा जे जीवन नब पद्धतिसँ उठिकऽ ठाढ़ हुअ चाहि रहल अछि वा भेल अछि, तैठाम तँ एहेन प्रश्न अछिए किने जे जीवन पद्धति मशीनक गतिये नहि चलि सकैए। सामाजिक जीवन जहिना समाजक संग जुड़ै-बनैमे समय लगबैए तहिना ने ओकरा छोड़बोमे समय लगबे करत। राता-राती मशीन दस गुणा आगू बढ़ि सकैए, मुदा मनुक्खक जीवनमे से थोड़े सम्भव अछि.! खाएर जेतए जे अछि से अछि तइसँ जीवानन्द भाय आ कुलानन्द भायकेँ तइसँ कोन मतलब छैन, कोन मतलब छैन जे मिथिलाक पंचदेवोपासनाक बीचक रग्गड़मे अनेरे पड़ल रहता। जीवन जीवन छी जे सभ अपन कल्याण चाहैए। जीवन जीबैक ढंग जहिना धर्म छी तहिना धर्मक ढंग सेहो तँ जीवन छीहे।

संगी भेटने मनमे होइते अछि जे दुनियाँमे जीबैक एकटा थम्ह, ओना, केरा-गाछकेँ थम्ह कहल जाइए मुदा थम्हक दोसर माने ईहो अछिए जे कोनो

वस्तु वा विचारकेँ थाम्हब, भेटल। जखने एकसँ आगू बढ़ि, माने अपनासँ आगू बढ़ि दोसरक थम्ह जीवनमे भेटैए तखने विचारक संग काजमे सेहो थम्हपन अबिते अछि। सभ जनिते छी जे मनुक्खकेँ अपन लेख-जोख अपन हाथ-पैरक संग काज दइते अछि।

❑❑❑

❑❑

❑ अप्पन साती (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या 07-09

केते कहब बहिन। जेते खर्चमे पहिने लोक
प्रोफेसर बनै छला तेते अखैन बच्चाक स्कूलमे खर्च हुअ
लगल अछि। केकर बेटा पढ़त। शिक्षा केहेन भऽ गेल अछि
जे धोती-कुरताबला आ पेन्ट-कोटबला अपनामे रगड़ केने
छैथ जे हम नीक तँ हम नीक। के फड़ियौत? जखैन कि
प्रश्न नान्हिटा अछि जे जइसँ जिनगी नीक-नहाँति
आगू मुहेँ समैयक संग ससरै।

(दुर्गास्थानक आगूमे एक भाग पुरुख एक भाग महिला बैसल। एकटा डायरी, पेन नेने महिला दिससँ आगूमे कल्याणी-प्रतिज्ञा। पुरुख दिससँ सूर्यदेव, क्षितिजदेव, निष्कान्त बैसल।)

सूर्यदेव- आजुक बैसार लेल कल्याणी आ प्रतिज्ञाकेँ हृदेसँ शुभकामना दइ छिऐन जे एकटा नव परम्पराक शुभारंभ केलैन। आशा संग आगू बढ़ति सएह शुभकामना।

कल्याणी- भाय साहैब, अहाँ सभ तरहेँ अगुआएल छी तँए आगूक बाटक जेते ज्ञान अहाँकेँ अछि ओते हम थोड़े बुझै छी।

(बिच्चेमे निष्कान्त)

निष्कान्त- सुरजू भाय, हमरो बात सुनि लिअ। काल्हिये दुनू परानीक झगड़ाक पनिचैतीमे गेल छेलौं। वेचारा विसनाथकेँ देखिते छिऐ जे डेढ़ सौ रूपैआक कमाइ घर जोड़ैयामे करैए। सभ दिन कमा कऽ अबैए आ घरवालीक हाथमे दऽ दइ छै। घरवाली केहेन जे टी.भी. कीनैले पाइ जमा करैत जाइए। रौद-बसातमे काज करैबलाकेँ एकटा गंजीसँ थोड़े पार लगतै। तइले घरवाली पाइए ने दइ छै।

कल्याणी- (मुड़ी डोलबैत) की पनचैती केलिऐ?

निष्कान्त- सँए-बहुक झगड़ा पंच लबरा। हम नै बुझै छिऐ जे पावरक लड़ाइ छी। दुनू गोरेकेँ थोड़-थाम लगा देलिऐ। दू विचारक लड़ाइ हमरे बाप बुते फड़ियाएल हएत।

सूर्यदेव- अच्छा एकटा कहऽ जे दुनू गोरेमे घरक गारजन के छी?

निष्कान्त - उँ-हूँ सौंसे गामेमे सबहक घरमे मौगियेक जुति अछि। एहेन जे लोकक दशा भेल छै से किए? कमाइ छै कोइ, हुकुम केकरो। कोनो घर आकि कोनो गाम, जाबे मरदक जुतिमे नै चलत ताबे ओहिना गाम आगू मुहेँ ससैर जाएत?

कल्याणी- कबिलाहाक खेल देखबै। दिन पनरहम गुरुकाका कानि-कानि कहैत रहैथ जे सभ दिन परदा-पौसकेँ मानलौं। पुतोहुजनीकेँ बेटा नोकरी लगा देलकैन। दस कोसपर स्कूल छैन। दुनू परानी जे जेतए छैथ, खाइ-पीबै राति धरि घुमि कऽ अबै छैथ। बेटा तँ बेटा भेल मुदा पुतोहुक सेवा सासु करैन, ई हमरा पसिन नै अछि?

सूर्यदेव- ई नै पुछलहुन जे समय एना किए भेल?

निष्कान्त- आठ घन्टा खटनीक पछाइत जे समय बँचैए तेतबे ने समाजमे समय लगाएब, ओते पुच्छा-पुच्छी जे करए लगब से ओते निचेन रहै छी।

कल्याणी- भैया, नारीकेँ बरबैर अधिकारक हवा चलि रहल अछि से की?

सूर्यदेव- मदारी सबहक खेल छी। नारी, पुरुखसँ हीन केना बनैत गेल? जाधैर ऐ इतिहासकेँ नै देखब ताधैर कारण केना पाएब। केकरोसँ अधिकार मंगबै? ऐ लेल विकासक प्रक्रियाकेँ नीक जकाँ बुझए पड़त।

कल्याणी- काज केना शुरू कएल जाए, भाय।

सूर्यदेव- बहुत बातक जरूरत अखैन नै अछि। मुदा किछु बात कहि दैत छी। पहिल, नारीकेँ चिन्हैले नजैर ओतए दिअए पड़त जैठाम

हवाइ जहाजमे उड़ैत, इलाइची फोड़ि-फोड़ि मुँहमे दैत जिनगी अछि तँ दोसर दिस भरि-भरि छाती पानि टपि (खच्चा, धार) भीजल कपड़ा पहीरि गोबर बिछैक जिनगी अछि।

कल्याणी- (नमहर साँस छोड़ैत) अद्भुत बात भाय अहाँ कहलौं।

सूर्यदेव- कल्याणी, अहाँ अखैन फुलाइत फुलक कली छी। तँए जरूरत अछि शुद्ध माटि-पानिक। प्रत्येक साल समाजमे माने गाममे साएसँ ऊपर आन गामक बेटी अबै छैथ। गामक बेटी जेबो करै छैथ। प्रश्न उठैत सिरिफ देहेटा अबैत-जाइत आकि लूरि-बुधि सेहो अबैत जाइत अछि।

कल्याणी- अखैन तँ आरो विकट भऽ गेल अछि जे देशक एक कोनसँ दोसर कोनमे रहनिहारक (पालल-पोसल) बीच सम्बन्ध स्थापित भऽ रहल अछि। जइसँ खान-पान, बात-विचार लूरि-ढंग सभ टकरा रहल अछि।

सूर्यदेव- अहिना खाइ-पीबैमे देखियौ। एक आदमीक (परिवारक) एक दिनक खर्च जेते होइत अछि दोसर दिस ओहन परिवारक भरमार अछि जइ परिवारमे दसो-बर्खक आमदनी ओते नै छै। केकरो असली नोर चुबै तब ने से तँ पियौजक झाँसक नोर चुबबैए।

कल्याणी- खेती-बाड़ीक की स्थिति अछि?

सूर्यदेव- सरकारी मेला लगल। गाममे चारिटा ट्रेक्टर चलि आएल। एक तँ बाढ़िमे बारह आना बरद गाममे मरि गेल, दोसर जे चारि आना बँचल ओहो सभ गोबर उठबै दुआरे बेचि लेलैन। अखैन गाममे एक्कोटा बरद नै अछि। ले बलैया ट्रेक्टर कदबामे सकबे ने करै छै। खेती केना हएत?

कल्याणी- अजीव-अजीव बात सभ कहै छी, भैया?

सूर्यदेव- केते कहब बहिन। जेते खर्चमे पहिने लोक प्रोफेसर बनै छला

तेते अखैन बच्चाक स्कूलमे खर्च हुअ लगल अछि। केकर बेटा पढ़त। शिक्षा केहेन भऽ गेल अछि जे धोती-कुरताबला आ पेन्ट-कोटबला अपनामे रगड़ केने छैथ जे हम नीक तँ हम नीक। के फड़ियौत? जखैन कि प्रश्न नान्हिटा अछि जे जइसँ जिनगी नीक-नहाँति आगू मुहेँ समैयक संग ससरै।

❑❑❑

❑❑

❑ कल्याणी, एकांकी, जगदीश प्रसाद मण्डल, 2013, पृष्ठ संख्या : 41-46

सहज जीवनकेँ लोक अपन सहजतासँ आगू बढ़ैबते अछि, मुदा असहज जीवन भेने दोसराक जरूरत सेहो पड़िते अछि। दुनियाँ तँ दुनियेँ छी जे सात अरब लोकसँ भरल अछि। तहूमे अपन मिथिला तँ सहजे मिथिला छीहे, पचासो बर्खसँ अबैत सरकार परिवार नियोजन अखन तक नियंत्रित नहियेँ केलक अछि, केतबो चोरा-नुका कऽ भ्रूण-हत्या किए ने होइए, मुदा तइ सभसँ लोकक बढ़वारि थोड़े कमल अछि आकि कमत।

अखन धरिक अपना ऐठामक जे जीवन पद्धति चलैत आबि रहल अछि, तइमे सामाजिक रूपक संग वैचारिक दुनियाँमे समरसपन अछि जइसँ समाजक धुरी गतिशील अछि। मुदा जे जीवन नब पद्धतिसँ उठिकऽ ठाढ़ हुअ चाहि रहल अछि वा भेल अछि, तैठाम तँ एहेन प्रश्न अछिए किने जे जीवन पद्धति मशीनक गतिये नहि चलि सकैए। सामाजिक जीवन जहिना समाजक संग जुड़ै-बनैमे समय लगबैए तहिना ने ओकरा छोड़बोमे समय लगबे करत। राता-राती मशीन दस गुणा आगू बढ़ि सकैए, मुदा मनुक्खक जीवनमे से थोड़े सम्भव अछि.! खाएर जेतए जे अछि से अछि तइसँ जीवानन्द भाय आ कुलानन्द भायकेँ तइसँ कोन मतलब छैन, कोन मतलब छैन जे मिथिलाक पंचदेवोपासनाक बीचक रग्गड़मे अनेरे पड़ल रहता। जीवन जीवन छी जे सभ अपन कल्याण चाहैए। जीवन जीबैक ढंग जहिना धर्म छी तहिना धर्मक ढंग सेहो तँ जीवन छीहे।

जीवानन्द भाय आ कुलानन्द भाइक बीचक सम्बन्धमे, माने बेकतीगत वैचारिक जीवनक सम्बन्धमे, तेते प्रगाढ़ता आबि गेलैन जे जीवनक सम्बन्ध चतुर्मुर्खी पुष्पित-फलित भऽ गेलैन। एक संग घन्टो-घन्टो बैस दुनू बेकती अपन जीवन-मरणक विचार-विमर्शसँ लऽ कऽ गाम-समाजक बीचक जीवन-मरणक संग सुख-दुखकेँ निवाड़ैक रास्ताक खोज सेहो करए लगला।

पारिवारिक जीवनक संग, पारिवारिक गति-विधिमे सेहो एक-दोसरक मददगार भेला। जखने दुनियाँमे संगी भेटैए तखने संगपनक प्रगाढ़ता बढ़िते अछि। ओना, दू रंगक बेवहारक बीच दुनूक जीवनो रहलैन आ दू रास्तासँ ठाढ़ सेहो छैथ। एकक जीवन माने कुलानन्द भाइक जीवन ओहन रहलैन माने ओइ परिवेशक परिवार रहलैन जइमे सभ तरहक सुविधा रहैत अछि। माने ई जे पढ़ल-लिखल माता-पिताक संग विद्वज्जनक परिवार-समाज सेहो रहलैन, दोसर दिस जीवानन्द भाइक जीवन ओहन रहलैन जे स्वनिर्मित होइत अछि। तहू स्वनिर्मितमे सामाजिकता सेहो प्रमुख रहलैन। सामाजिकता ई जे समाजकेँ वास्तविक जीवनधारामे आनि विकासोन्मुखी केना बनाएल जाए। यएह धारा बेकतीगत जीवनमे सेहो चलैए जे समाजसँ जुड़ल सेहो चलिते अछि, तहिना सामाजिक जीवन सेहो होइए जे समाजक धाराकेँ बेकतीगत धार धारामे प्रवाहित करैत गतिशील सेहो बनैबते अछि।

खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहउ। तइसँ जीवानन्दे भाय आकि कुलानन्दे भायकेँ कोन सरोकार छैन। सरोकार छैन अपन दुनू संगीक संग संगपन निमाहबसँ। बेवहारिक रूपमे जहिना अपनाकेँ दुनू गोरे इमानदारीक बीच सम्बन्ध ठाढ़ केलैन तइमे अखन तक दुनूक बीच कोनो मन-मनान्तर आकि इमानक संग हत्या नइ भेल अछि।

सामाजिक परिवेशमे सम्बन्धक भीतर किछु विद्रूपन एबे कएल, जइसँ सम्बन्धमे दूरी बनब शुरू भेल। मुदा दूरी बनलाक पछातियो विचारमे कमी नहि आएल अछि। हँ, ईहो नकारल नहियेँ जा सकैए जे थोड़-बहुत मनान्तर काजकेँ बाधित नहि केलक अछि। जइसँ दुनू संगीकेँ किछु-ने-किछु घाटा भेबे केलैन अछि।

सामाजिक परिवेश एते तँ दुनू गोरेकेँ, माने जीवानन्दो भाय आ कुलानन्दो भायकेँ, वैचारिक रूपमे प्रबलता आनिये देलकैन जे मनुक्ख असगरो धरतीपर हँसी-खुशीसँ, माने जइ दुनियाँमे बसै छी तहू दुनियाँमे जीवन बसर कइये सकैए। जखने मनुक्ख अपन जीवनकेँ थाहि लइए, तखने थाहे-थाह थाहैत, केहनो-केहनो धार पार कइये लइए। अनाड़ी-धुनारीक जीवनक संग आ जग-जगाएल जीवनक संग सम्बन्धमे अन्तर अछिए, एकमे जहिना

खीचपन रहने टुटैक बेसी सम्भावना रहैए, तहिना विचारक प्रबलता रहने दोसरमे से नइ होइए।

अपन विचारक अनुकूल भविष्यमे जखन बाधा अबैए तखन विचारकर्ताक मनमे पुन: विचारैक खगता आबिये जाइए। ओना, जीवानन्द भाय निरविचारी लोक छैथ, तँए ई अपन विचारानुकूल जीवन यात्रा कइये रहल छैथ, जइमे बिघ्न-बाधाकेँ टबकब सोभाविक बुझिते छैथ। जइसँ यात्राक बीचक गतिमे केतौ तेजी रहै छैन तँ केतौ मन्दक संग विलमाउ-ठहराव सेहो अबिते छैन, जेकरा ओ लेनिनक ओइ विचारक अनुकूल अंगीकार करैत मानिकऽ चलै छैथ जे एक कदम आगू, दू कदम पाछू, अपन जीवनानुकूल अनुभवक आधारपर कहने छैथ।

संयोग बनल, कुलानन्द भाइक विचारमे ठहराव एने, दृष्टिमे सेहो दृश्य एलैन जइसँ मन मानि गेलैन जे चलैक बाटमे, जीवन जीबैक रास्तामे केतौ-ने-केतौ कमी जरूर अछि। सहज जीवनकेँ लोक अपन सहजतासँ आगू बढ़ैबते अछि, मुदा असहज जीवन भेने दोसराक जरूरत सेहो पड़िते अछि। दुनियाँ तँ दुनियेँ छी जे सात अरब लोकसँ भरल अछि। तहूमे अपन मिथिला तँ सहजे मिथिला छीहे, पचासो बर्खसँ अबैत सरकार परिवार नियोजन अखन तक नियंत्रित नहियेँ केलक अछि, केतबो चोरा-नुका कऽ भ्रूण-हत्या किए ने होइए, मुदा तइ सभसँ लोकक बढ़वारि थोड़े कमल अछि आकि कमत।

कहब जे केना कमि सकैए? कमैक असान ढंग अछि। ओ अछि मनुक्ख अपन बुनियादी जीवनकेँ पकैड़ जखने भविष्योन्मुख हेता तखने अपन जीवनानुकूल जीवन आ परिवार बना चलए लगता, से जखने चलए लगता कि अनेरे ने परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरि नियंत्रण हुअ लगत। खाएर जे से, तइसँ जीवानन्दे भाय आकि कुलानन्दे भायकेँ कोन मतलब छैन, मतलब छैन अपन जीवनक जहानसँ।

❑❑❑

❑❑

❑ अप्पन साती, जगदीश प्रसाद मण्डल, 2022, पृष्ठ संख्या : 08-11

“भाय साहैब, फोटो देखि अपन मन कहलक जे पनरह किलोक कदीमा जरूर हएत। ओना, अपने आइ धरि कदीमा-खेती नइ करै छेलौं, किए तँ जहिना बड़का पोरो डाइन होइए तहिना कदीमो कोढ़िया छीहे। सजमैनिक खैती करै छेलौं, सामाजिको मान्यता सजमैनकेँ छल, माने भोज-काजमे चलैत रहइ। मुदा जखन समाज एकरा अमान्य कऽ देलक तखन कदीमेक ने उठाइन हएत। एते दिन जहल अपराधी-ले छल आब साधु-सन्तक ठकुर-वाड़ी बनियेँ गेल अछि किने।”

‘अपन कुरथी बलुआएब’ मिथिलांचलक एक कहबी छी, जेकर माने होइए- अपन लाभ उठाएब। ..अपने अनचोकेमे ई रही जे मधुबनीसँ घुमल गाम अबैत रस्ताक बीचक दोकानपर गेल रही। गाए पोसने छी, तेकरे बरसाती घासक ओरियान-ले खेत पटौने रही, जे मौसमक परसादे बेहाल भेल जा रहल छल। तेही घासक बीआ कीनैले एक-दू-तीन-चारिम दोकानपर पहुँचल रही। मनमे कछमछी लगले छल जे जँ काल्हि बीआ बाउग नइ करब ते पटौनीक खर्च बुड़ि जाएत। डेढ़ साए रूपैये घन्टा दमकलसँ खेत पटौने छी। तीन कट्ठा खेत दू घन्टामे पटल।

पानिक सतहकेँ निच्चाँ उतरने बोरिंगक पानियोँ कमियेँ गेल, तैसंग जमीनक अप्पन हाल निच्चाँ उतरैत-उतरैत जरिये गेल अछि, तँए दू घन्टामे तीन कट्ठा खेत पटब सोभाविक अछिए। ओना, जैठाम बिजली बोरिंग वा नहरक बेवस्था अछि तैठाम तँ पानि कनी सस्तो अछि मुदा जैठाम तेलबला दमकल चलैए तैठाम तेलक दाम बढ़ने दमकलक चार्ज तँ बढ़ि जाइए। मुदा जँ कनी-मनी डीजलक दाम घटबो करैए तैयो बोरिंग-दमकलक रेट ओहिना रहैए। ओकरो–माने दमकल रखनिहारोकेँ सेहो–हनुमानेजी जकाँ नमगर-चौड़गर पुछड़ी लटकले अछि। माने दमकलक तेहेन पार्ट-पुरजा सभ आबि गेल

अछि जे ओ–बेचनिहार–बेचनिहार नहि, किसानी जिनगीक एक हिस्सेदार बनियेँ गेल अछि।

तैबीच अपने सीढ़ीपर सँ उतैर दोकानक निच्चाँ कतबाहिमे राखल ब्रेंचपर जा बैसलौं। पहिनेसँ जे तीनू-चारू गहिंकी बैसल छला ओहो सभ एक-दोसरकेँ खाली मुँह तकै छला मुदा बजैथ कियो किछु ने। मनमे भेल जे जँ आब अपने मुँह नहि खोलब तँ अनेरे सबहक नजैरमे दोखी हएब। बजलौं- “की बात छी से जड़िसँ बाजब तखने ने बुझब?”

हमर बात सुनिते दोकानदारो आ ओ (लगारीलाल) गहिंकी सेहो ठमकल। लगारीलाल बाजल-

“भाय साहैब! दोकानदारेकेँ पुछियौ जे की कहि केहेन कदीमाक बीआ देने छल, आ उपज केहेन भेल से हम कहब।”

लगारीलालक बात सुनि एते तँ बुझैमे आबिये गेल जे कदीमा खेतीक बात छी। बजलौं-

“ओना, नीक हएत जे अपनेमे अहाँ दुनूगोरे फरिछा लिअ। जँ से नहि करब तँ बेरा-बेरी दुनू गोरे अपन-अपन बात राखू।”

ओना, अपनो मन दोकानदारपर छनगले छल किए तँ जइ घासक बीआ कीनैले तीन दिनसँ दोकाने-दोकान वौआ रहल छी, सभ दोकानमे बीओ अछि, जे खरीदबाल सभसँ भाँज लगले अछि, मुदा मुहाँ-मुहीं सभ दोकानदार यएह कहैए जे ‘काल्हिये बीआ सठि गेल।’

ओना, ई बात पछाइत बुझलौं जे दोकानदार सभ महग बेचै दुआरे एना करैए। कहबी छै जे ‘चोर बाजे जोरसँ’ मुदा साधु मुँह चुप राखए सेहो तँ नीक नहियेँ भेल। ओहने साधुकेँ ने लोक मुँहचोर कहै छैन...।

जहिना लगारीलाल अपन बात रखैले तैयार भेल तहिना दोकानदारो। ओना, ई बात मनमे उठैत रहए जे कोनो विवाद वा झंझटक निपटान जँ सबहक, माने दुनू पक्षक जिनगीकेँ नजैरमे रखि हुअए तँ ओ बेसी नीक हएत। मुदा होइ तँ से नहि अछि, जे पक्ष अपनाकेँ सबल बुझलक ओ दोसरकेँ अबल बुझि दबबे करैए।

कुरताक ऊपरका जेबीसँ कदीमा बीआक खाली पैकेट आगूमे रखैत लगारीलाल बाजल- "भाय साहैब, दाम-छाप पछाइत पढ़ब, पहिने कदीमाक जे फोटो बनल अछि, तेकरा मेहिया कऽ देखियौ।"

अपना मनमे हुअए जे तेहेन-तेहेन फोटो खिंचैबला ओजार सभ आबि गेल अछि जे बौका कैँ मंचपर चढ़ा भाषण करा दइए आ पैरटुट्टाकैँ ताड़क गाछपर चढ़ा दइए, तैठाम फोटोसँ कोनो चीज देखि कऽ केना आँकि लेब?

मुदा तैयो मेहिया-मेहिया कऽ फोटो देखए लगलौं। अपन आँखि तँ पैंतीस किलोक कदीमा सेहो देखने अछि, आ धरमपुरिया लदीमा किलो-किलो भरिक सेहो देखनहि अछि। तँए कोनो थाह पेबिये ने रहल छेलौं।

तैबीच एकटा आरो भेल। आरो ई भेल जे पहिनेसँ जे चारि गोरे दोकानपर बैसल छला, ओइमे सँ दू गोरे लगारीलालक संग भऽ गेला। लगारीलाल बाजल-

"भाय साहैब, फोटो देखि अपन मन कहलक जे पनरह किलोक कदीमा जरूर हएत। ओना, अपने आइ धरि कदीमा-खेती नइ करै छेलौं, किए तँ जहिना बड़का पोरो डाइन होइए तहिना कदीमो कोढ़िया छीहे। सजमैनिक खेती करै छेलौं, सामाजिको मान्यता सजमैनकैँ छल, माने भोज-काजमे चलैत रहइ। मुदा जखन समाज एकरा अमान्य कऽ देलक तखन कदीमेक ने उठाइन हएत। एते दिन जहल अपराधी-ले छल आब साधु-सन्तक ठकुर-वाड़ी बनियैँ गेल अछि किने।"

लगारीलालक बात सुनि बजलौं- "दुनियाँक पाछू अनेरे नइ वौआइ छी। अपन कि बात अछि से बाजू।"

लगारीलाल बाजल- "भाय साहैब, पनरह-बीस किलोक फड़क बात दोकानदारो कहलक।"

अपन नाम सुनिते दोकानदारो बाजल-

"हमर कि कोनो अपन कारोबार अछि, बाहरसँ समान अबैए आ ओकरा आगू बढ़बैत बेचै छी, तइमे जे कमीशन बँचैए से कमाइ भेल। जेना-जेना कम्पनीक एजेन्ट कहैए तेना-तेना हमहूँ बजै छी।"

जहिना लगारीलालक आश टुटल देखि रहल छेलौं तहिना दोकानदारोक अपन आश–बदनामी भेने जहिना व्यक्तित्वो टुटैए तहिना ने कारोबार सेहो टुटिते अछि–सएह देखि रहल छेलौं। बजलौं-

“भाय दोकान छिऐ। खरीद-बिक्रीक जगह छी। हमहूँ काजे आएल छी। अखन हमरो अगुताइ अछि।”

लगारीलाल बाजल-

“हँ, से तँ ठीके बजलह हेन। आरो विचार दोसर दिन करब।”

हमहूँ बजलौं-

“अखन जाइ छी, फेर आबए।”

❑❑❑

❑❑

❑समयसँ पहिने चेत किसान (2019), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 52-55

“केते कमाएब! जेहने बैमान सरकार अछि तेहने ओकर मनसी छइ। चारि दिनमे एकटा पजेबा ढेरी फोड़ै छी तँ तीन-बीस रूपैआ दइए। तइसँ तीन तूरक पेट भरत? भरि दिन ईंटा फोड़ैत-फोड़ैत देह-हाथ दुखाइत रहैए मुदा एकटा गोटियो कीनब से पाइ नै बँचैए।”

“मालिक बजबै छथुन, चलही?”

गिट्टी फोरब छोड़ि मरनी उनैट कऽ सिपाही दिस तकलक। सिपाहीकेँ देखि मने-मन सोचए लगल, ने हम कोनो ममिलामे फँसल छी आ ने कोनो बैंकक करजा नेने छिऐ, तहन किए हमरा सिपाही बजबैए...।

मन सक्कत करि मरनी बाजल-

“तूँ नै देखै छहक जे अखन हम काज करै छी। जेकर बोइन लेबै ओकर काज नै करबै। अखन जा। काजक बेर उनैह जेतै तब एबह।”

मरनीक बात सिपाहियो आ ठीकेदारो सुनलैन। एक-दोसरकेँ देखि आँखि निच्चाँ कऽ लेलैथ। ठीकेदारक मन पीपरक पात जकाँ डोलए लगलैन। कखनो मरनीक इमानदारीपर तँ कखनो ओकर अवस्थापर। जइ देशक श्रमिक श्रममे एते बिसवास करैए ओइ देशक विकास जँ बाधित अछि तँ जरूर केतौ-ने-केतौ संचालनकर्तामे बेइमानी छइ। ई बात मनमे अबिते ठीकेदार अपना दिस घुमि कऽ तकला तँ अपन दोख सामनेमे आबि ठाढ़ भऽ गेलैन।

सिपाही कड़ैक कऽ मरनीकेँ कहलक- “नै जेबही तँ पकैड़ कऽ लऽ जेबौ?”

सिपाहीक गर्म बोली सुनि मरनी बाजल- “तोहर हम कोनो करजा खेने छिअ जे पकैड़ कऽ लऽ जेबह। अपन सुखलो हड्डीकेँ धुनै छी, खाइ छी।”

मरनीक बात सुनि सिपाहियोक मन उनटए-पुनटए लगलै। एक दिस मालिकक आदेश दोसर दिस मरनीक विचार। आखिर, एहेन लोकक बीच एहेन सक्कत विचार अबैक कारण की अछि? अनका देखै छिऐ जे खाली

सिपाहीक वर्दी देखि डेरा जाइए, भलेँ ओ सरकारक सिपाही नहियोँ रहए। मुदा हमरा तँ सभ किछु अछि तैयो ऐ बुढ़ियाकेँ डर नै होइ छइ।

..फेर मनमे एलै, हम किछु छी तँ नोकर छी मुदा ई किछु अछि तँ स्वतंत्र बोनिहारिन। स्वतंत्र देशक स्वतंत्र श्रमिक। जे देशक अधार छी। आखिर देश तँ एकरो सबहक छिऐ।

सिपाहीकेँ ठाढ़ देखि ठीकेदारे पाछू ससैर कऽ मरनी लग एला। मरनियोँ सभकेँ देखैत आ मरनियोकेँ सभ। ठीकेदार मरनीक आँखिपर अपन नजैर देलैन। नजैर पड़िते मरनीक आँखिमे सुरुजक रोशनी जकाँ प्रखर ज्योति देखलैन। ललाटसँ आत्म-बिसवास छिटकैत देलखैन।..मधुर स्वरमे ठीकेदार पुछलखिन- "चाची, अहाँक परिवारमे के सभ छैथ?"

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक आँखिसँ नोर खसए लगल। मोन पड़ि गेलै अपन पति, बेटा आ पुतोहुक मृत्यु। टघरैत नोरकेँ आँचरसँ पोछि बाजल- "बौआ, हमर घरबला, बेटा आ पुतोहु ठनकामे मरि गेल। अपने छी आ पिलुआ जकाँ दूटा पोता-पोती अछि।"

"बच्चा सभ स्कूलो जाइए?"

"नहि। एक तँ गाममे स्कूल नइ छइ। तहूमे पहिने गरीब लोकक धिया-पुताकेँ पेट भरतै तब ने जाएत। ने भरि पेट अन होइ छै आ ने भरि देह बस्तर, ने रहैक घर छै, तहन इसकूल केना जाएत।"

मरनीक बात सुनि ठीकेदार सहैम गेला। मने-मन सोचए लगला, जे आँखिक सोझमे देखै छिऐ ओ झूठ केना भऽ सकैए। एते भारी काज केनिहारक देहपर कारी खट-खट कपड़ा छै, तोहूमे सैयो चेफड़ी लागल, काज करै-जोकर उमेर नइ छै, तैपर एते भारी हथौरी पजेबापर पटकैए..!

ठिकेदारक मन दहैल गेलैन। जहिना अकास आ पृथ्वीक बीच क्षितिज अछि, जैठाम जा चिड़ै-चुनमुनी लसैक जाइए, तहिना ठीकेदारक मन सुख-दुखक बीच लसैक गेलैन। जेना सभ किछु मनक हेरा गेलैन तहिना सुन्न भऽ गेला। ने आगूक बाट सुझैत रहैन आ ने पाछूक। मरनीसँ आगू की पुछब से मनमे रहबे ने केलैन। साहस बटोरि पुछलखिन- "भरि दिनमे केते रूपैआ कमाइ

छी?”

ठिकेदारक प्रश्न सुनि मरनीक मनमे झड़क उठलै। बाजल-

“केते कमाएब! जेहने बैमान सरकार अछि तेहने ओकर मनसी छइ। चारि दिनमे एकटा पजेबा ढेरी फोड़ै छी तँ तीन-बीस रूपैआ दइए। तइसँ तीन तूरक पेट भरत? भरि दिन ईंटा फोड़ैत-फोड़ैत देह-हाथ दुखाइत रहैए मुदा एकटा गोटियो कीनब से पाइ नै बँचैए।”

ठिकेदारक आँखिमे नोर आबि गेल। मनुखता जागि गेल। मुदा ई मनुखता केते काल जिनगीमे अँटकत? जिनगी तँ उनटल अछि।

❑❑❑

❑❑

❑ **गामक जिनगी, 2009, जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या : 80-82**

अदौसँ दाव-चापक समाजक बीच अपन समाज रहल अछि, जइसँ जीवन शैली विपरीत दिशामे मुड़ि गेल। तँए जाधैर गाम-समाजक बीच प्रीति-पथ नइ बनत ताधैर सुधारमे गुणात्मक रूप नइ औत। आजुक जे गामक परिदृश्य बनि गेल अछि वा बनैक प्रक्रियामे अछि तैपर नजैर तँ दिअ पड़त...।

"माए, कनी एम्हर अबिहें।"

चिपरी पाथैत माए बजली- "बौआ, काजो अधखड़ुआ भऽ गेल अछि आ हाथोमे तेना गोबर लागल अछि जे धोइमे जेतेक समय लागत तइसँ पहिने काजे उसैर जाएत।"

परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिक एक-एक विचार आ एक-एक काजकेँ दौड़ लगा देखै-परखैक परियास रीतलाल मने-मन कए रहल छल। ओना, लोको आ लोकक मनो अपन-अपन होइए, कियो कीर्तन कम करैए आ जयकार बेसी दइए, तँ कियो कीर्तनेमे तेना हेरा जाइए जे जय-जयकारक ठेकाने बिसैर जाइए जे कोन पतियानीक पछाइत केहेन जय-जयकार करब।

गोबरक चिपरी पाथि सुचिता रीतलाल लग आबि बजली- "बौआ, मन किए खसल देखै छिअह?"

मातृ सोभावक जे गुण अछि, बच्चाक हर अधला रूपकेँ नीक जकाँ निखारि बनाबी जइसँ हँसै-हँसबैक रूपेँ बिला जाइए। हँसमुख फुटा कऽ किए हँसत। जे कनमुँह अछि वा कननमुँह अछि ओकरा ने फुटा-फुटा कऽ हँसबैक खगता अछि, मुदा से केते अछि आ केना बनत, यएह ने मूल भेल...।

जगैत चेतनाक चेतल जकाँ रीतलाल बाजल- "माए, मन खसल कहाँ अछि! हँ, कनी गहींर दिस झूकि गेल अछि।"

अवोध माए सुचिता, तँए रीतलालक भावकेँ नीक जकाँ नहि पकैड़ पेलैन।

ओना, मातृत्वक जुआर-मन सुचिताक रहबे करैन। जँ देखल जाए तँ परिवारक सभसँ महत्पूर्ण काज बच्चाक उत्पैतसँ लऽ कऽ पालन-पोषन करब धरिक होइते अछि, मुदा ई तँ एहेन बेवहारिक रूप पकैड़ नेने अछि जे अज्ञानी-सज्ञानी मनुखक कोन बात जे पशु-पक्षीसँ लऽ कऽ चुट्टी-पीपरी धरिकेँ ई वोध छइहे। विचारधारी मनुखक होइक नाते ई विचार करबे करै छैथ जे परिवारक सृजन पुरुख-नारीक बीचक जे पुरुषपनक सम्बन्ध अछि तइसँ होइए।

रीतलालक बात बिनु बुझने सुचिता बजली- "बौआ, अखन हम हाथी सन माए तोरा आगूमे छिऔ, बाप परोछ भऽ गेलखुन तइसँ की, तोरा कोनो चिन्ता हमरा रहैत नइ करक चाही।"

ओना, रीतलाल मने-मन बुझि रहल छल जे माए अपन माइयक भाषामे बाजि रहली अछि, मुदा ओइ सिनेहकेँ रोकबो तँ कठिन अछिए किने। समाजक बीच अपनो आ अपन परिवारक संग अपन समाजोक (समाजक माने जातिक समाज) रूप-रेखा रीतलाल देखि रहल छल तइमे ई देखि रहल छल जे बहुतो गाम एहेन अछि जे अपन-अपन सुधरल रीत-रिबाज बनौने अछि, अपने जैठाम छी ओकरा सुधारि चलब अपन मानवीय कर्तव्य जरूर होइए। मुदा एहेन स्थितिकेँ सुस्थिति केना बनाएब..!

जहिना धिया-पुता पोखैर वा कोनो फलेक गाछपर अन्हा-गाहिंस गोला फेक दइए तहिना रीतलाल सेहो अन्हा-गाहिंस बाजल- "माए, ऐ गाममे नइ रहब..!"

तीस बर्खक जिनगी बितौल अनुभवी सुचिता, गामक रीत-नीत अंग-अंगमे समा गेल छेलैन। छोट जिनगी तँए पैघ घटनासँ भेँटि किए भेल रहितैन। सुचिता बजली- "बौआ, जेमे नेपाल कपार संगे जेतौ। एहेन गाम संसारमे केतए अछि जे तेकरा छोड़ि कऽ जेमे। परिवार नइ रहने अहिना लोकक मन छुछुआइए। ऐबेर तोरो बिआह करि देबौ।"

मातृसागरमे दहाइत-भँसियाइत माइक रूप देखि रीतलाल दिल खोलि कऽ हँसियो रहल छल आ समुद्रमे भँसैत माएकेँ भाषित करैत बजबो कएल-

“माए, जखन गामेक काजमे रौदी लागि गेल अछि तखन परिवारक काज तँ सहजे रौदियाएल रहबे करत। तँए गाममे नीक नइ लगैए।”

ओना, बजैक क्रममे रीतलाल बाजि गेल मुदा मनक मेघमे घुमैड़ रहल छेलइ। आइये नहि, अदौसँ दाव-चापक समाजक बीच अपन समाज रहल अछि, जइसँ जीवन शैली विपरीत दिशामे मुड़ि गेल। तँए जाधैर गाम-समाजक बीच प्रीति-पथ नइ बनत ताधैर सुधारमे गुणात्मक रूप नइ औत। आजुक जे गामक परिदृश्य बनि गेल अछि वा बनैक प्रक्रियामे अछि तैपर नजैर तँ दिअ पड़त...।

सामंजस करैत सुचिता बजली- “बौआ, अपनेटा परिवार एहेन नइ ने अछि जे रहै-जोकर नइए। अपना सन-सन परिवारसँ ते गामे भरल अछि।”

माइक विचारकेँ सीमांकन करैत रीतलाल बाजल किछु ने, मुदा गामो आ गामक लोकोक चित्र-विचित्रक संग विचित्र-चित्र सेहो मने-मन देखए लगल।

❑❑❑

❑❑

❑चितवनक शिकार (2019), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 88-91

> देश स्वतंत्र भेला पछातियो आ पहिनौं शासन क्रियाक ओहन रूप रहल जे सौंसे समाजक हिसाबसँ, माने समुच्चा गामक लेल ने कोनो योजना बनैए आ ने कोनो काज होइए। जइसँ समाजक किछु लोक सुविधा सम्पन्न छैथ, बाँकी सुविधा हीन। फलाफल गाम-गामक समाजमे विघटनक वातावरण बनैत रहल अछि।

सीतापुर गामक आठ साए परिवारमे डेढ़ साए परिवार उच्च जाइतिक अछि। उच्च जाइतिक माने भेल- ब्राह्मण, राजपुत, कायस्थ आ भूमिहार। ओहू उच्च जातिमे कायस्थ नहियेँ छैथ, बाँकी तीन जातिमे राजपुतक संख्या सभसँ कम आ भूमिहारक संख्या राजपुतसँ बेसी आ ब्राह्मणसँ कम अछि। तीनूमे सभसँ बेसी ब्राह्मण छैथ। शिक्षाक प्रचार-प्रसारमे अनुपातक हिसाबे तीनू एकरंगाहे भेला मुदा संख्याक हिसाबसँ ब्राह्मण बेसी भेला।

मध्यम श्रेणीक जे जाति अछि ओकर संख्या, जातियोक हिसाबसँ आ जनसंख्योक हिसाबसँ बेसी अछि। जहिना उच्च जातिमे तीन जाति अछि, तहिना मध्यम जाइतिक संख्या करीब बीस अछि आ निम्न जाइतिक, माने-हरिजनक संख्या जहिना जाइतिक हिसाबसँ मात्र चारि अछि तहिना जनसंख्याक हिसाबसँ सेहो कम अछि। ओहूमे चारि जातिमे मुसहरक संख्या बेसी अछि बाँकी तीन जाइतिक संख्या कम अछि। ओहू चारूमे आर्थिक दृष्टिये दू जाति–दुसाध आ चमारक बीच अपन घर-घराड़ीक संग किछु जोतसीमो जमीन छै आ गाछियो-बिरछी छै मुदा दू जाइतिक बीच–डोम आ मुसहरक बीच, अपन जमीन नइ छइ। शुरूमे जखन दुनू जाइतिक प्रवेश सीतापुरमे भेल छल तखन गामक आधासँ बेसी जमीन परतिये-परात छेलै, जेकर कियो ने मालिक छल, ओहीमे ओ सभ बसल। ओना, वृत्तिक हिसाबसँ डोम मुसहरसँ अगुआ गेल। किएक तँ डोम मवेशी पालनकेँ अपन

जातीय वृत्ति बनौलक, तैसंग बाँसक वस्तु-जात सेहो बनबए लगल, जेकर जरूरत लोककेँ छेलैहे, मुदा से मुसहरकेँ नहि भेल। ने जातीय वृत्तिक हिसाबसँ कोनो निसचित काज मुसहरकेँ भेल आ ने खेतीए भेल। ओना, छोट-छीन कारोबार- पशुपालनक जरूर भेल से भेल बकरी पोसब। ओकरा सबहक सोल्होअना जीवन बोनिये-बुत्तापर रहल, जे अखनो अछिए।

आने गाम जकाँ सीतापुरक जमीनक अधिकार सम्बन्धी इतिहास सेहो अछि। ब्रिटिश राज भारतमे जमीनक बन्दोवस्त 1793 इस्वीमे केलक। जइ प्रावधानक मुताबिक राजस्व संग्राहककेँ जमीनक मालिक बना देल गेल। अही तरहेँ जमीन्दारीक प्रथा शुरू भेल। ओना, तइसँ पहिनौं राज दरभंगा द्वारा जमीनक मालगुजारी ओसलल जाइ छल, तँए ओइ प्रावधानकेँ राज दरभंगा विरोध केलक। ओना, ई दीगर बात भेल जे मालगुजारीमे एकरूपता ने पहिनहि छल आ ने पछातिये रहल। उच्च जाइतिक ओहन जमीनक मालगुजारी कम छेलइ। जेहने जमीनक मालगुजारी मध्यम श्रेणीक जाइतिक लेल बेसी छल। तैसंग ईहो जे ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ आ मुसलमानकेँ विवाहदानी टेक्स नहि लगैत रहै, जे आन जातिकेँ लगैत रहइ। विवाहदानी टेक्सक माने भेल- लड़का-लड़कीक बिआहक टेक्स। जिनकर बेटीक बिआह हेतैन हुनका सबा रूपैआ आ जिनकर बेटाक बिआह हेतैन हुनका दसअना टेक्स दिअ पड़ैन।

आने गाम जकाँ सीतापुरमे सेहो गामक आधारपर एक समाज बनल आबि रहल अछि, मुदा समाजक भीतर शुरूए-सँ बिखण्डनक रूप सेहो चलैत आबि रहल अछि। ओ बिखण्डनक रूप अछि- जाति-धर्मक बेवहार। ओना, जँ जातिकेँ मनुख जाति आ धर्मकेँ जिनगीक तृप्तिक हिसाबसँ देखल जाए तखन भेद-भावक कोनो बेवहारिक पक्ष नहि रहैत। मुदा से तँ अछि नहि, जाति-जाइतिक बीच निच्चाँ-ऊपर सीढ़ीनुमा खाँच बना देल गेल अछि, जइसँ एक-दोसरमे भेद अछि, ओ भेद सिर्फ वैचारिके क्षेत्रटा मे नहि अछि, बेवहारिक क्षेत्रमे सेहो अछिए। तहिना धर्मोक अछिए। रंग-रंगक देवी-देवताक सृजन कए जाइतिक बीच बँटवारा कऽ देल गेल अछि, जेकर परिणाम अछि जे एक-दोसरमे एतेक दूरी बनि गेल अछि जइसँ एक-दोसरमे जे सामाजिक सरोकार हेबा चाही ओ मेटा गेल अछि। तेतबे नहि, मनुखे जकाँ देवी-देवतामे सेहो छूत-अछूतक बेवहार बनि गेल अछि। फलस्वरूप जाति-धर्मक

प्रभाव समाजपर एतेक पड़ि गेल अछि जे ऊपर-सँ-निच्चाँ तक खाधि बनि गेल अछि। तेकर फलाफल एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबैक खियालसँ अधिक काल गाम-गाममे झगड़ा-झंझट होइते रहैत अछि।

देश स्वतंत्र भेला पछातियो आ पहिनौं शासन क्रियाक ओहन रूप रहल जे सौंसे समाजक हिसाबसँ, माने समुच्चा गामक लेल ने कोनो योजना बनैए आ ने कोनो काज होइए। जइसँ समाजक किछु लोक सुविधा सम्पन्न छैथ, बाँकी सुविधा हीन। फलाफल गाम-गामक समाजमे विघटनक वातावरण बनैत रहल अछि। विघटनक वातावरण आने गाम जकाँ सीतापुरमे सेहो अछिए। मुदा किछु अछि तँए कि सीतापुरक सामाजिक सम्बन्ध नइ अछि, सेहो केना नइ कहल जाएत। किछु मामलामे एकमुहरी सम्बन्ध अछिए। जँ केकरो घरमे आगि लगै छै तँ सौंसे गामक लोक मिझबैले जाइते अछि। तैठाम जातीय छूआ-छूत, भेद-भाव मेटाएल रहैत अछि। मुदा लगले जखन गाममे कोनो सामाजिक वा धार्मिक क्रिया-कलाप होइत अछि तखन ओ भेद-भाव नीक जकाँ जागि कऽ जगजिआर भऽ जाइए। तहिना बिआह-दान आ भोज-काजमे सेहो नीक जकाँ जातीय बन्धन जगले अछि। मुदा तँए कि कियो अपनाकेँ सीतापुरबला कहब छोड़ि देने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। देशक आने भाग जकाँ मिथिलांचलमे सेहो अंगरेजी शासनक विरूद्ध आन्दोलन चलिये रहल छल। आन्दोलनकर्तामे दू रंगक विचार नीक जकाँ उजागर भेल। एक पक्षक विचार छेलैन जे अंगरेजी शासककेँ देशसँ भगाएब। जे रंग-रंगक शोषणो करैए आ जनताक बीच जोर-जुल्म सेहो करैए। ओना, अंगरेजी शासक दू रूपक हथियारक प्रयोग करैत छल। एक तँ शासन सूत्र ओ सभ अपना हाथमे रखने छल, तैसंग देशक भीतर जे राजा-रजबार छला तिनका सभकेँ शोषणक हथकण्डा बनौने छल। हिनके सबहक माध्यमसँ अनेको तरहक शोषण करैत छल। अनेको तरहक शोषणमे प्रमुख छल आर्थिक शोषण। तँए आन्दोलनकारीक दोसर पक्ष जे छला ओ अंगरेजक संग देशी राजा-रजबार आ जमीन्दारक विरोधमे सेहो ठाढ़ भेला।

❑❑❑

❑❑

❑ पंगु (2018), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 23-26

“बौआ, खिच्चड़ि आ खीर दुनू होइए
गिलगरे। भात जकाँ टकुआ-तान नइ होइए,
मुदा दुनूकेँ एक कहबहक?”

समाजक बीच राजनीतिक रूप सेहो बदैलिये रहल अछि। देखिते छी जे जीवितक चर्च कम आ मृत्युक चर्च बेसी भइये रहल अछि। खाएर तइसँ मोतीलालकेँ कोन मतलब। अपना जीवनकेँ मोतीलाल अपना मुट्ठीमे बान्हि रखने छैथ, जेकरा सोभाविक जीवन कहि सकै छिऐ। जेकर सिहन्ता अपनो मनमे लगल अछि। सामाजिक परिवेशक विपरीत मनमे विचार उठल जे परसू जे मोतीलाल भायसँ गप-सप्प भेल, तँ कहलैन- ‘बौआ, समय केहनो दुरकाल, भागवत-पुराणक धुन्धकारी जकाँ, भेल मुदा पचहत्तैर बरख पूर्व अपन देखल ओ दिन, आइयो ओहिना मन-मस्तिष्कमे बैसल अछि जहिया चौदह अगस्तकेँ अधरतियामे पटना रेडियो स्टेशनसँ नाजिर हुसेन शहनाईक टाँहि आ लालकिलापर स्वतंत्रताक तिरंगा झण्डाकेँ फहराएब, शुरू भेल।’

ओना, ओछाइनेपर रही तखने मोन पड़ि गेल जे आइ मोतीलाल भाइक जन्म-दिन छिऐन, किए ने जन्म-यज्ञक मंगल गीत, ‘आएल शुभ केर लगनमा, शुभे हे शुभे’, लगमे जा कऽ बधैया गीत जकाँ गाबि मुँहक मांग मांगि आबी।’

बिछानेपर, अपन दिन भरिक रूटिंग तैयार करए लगलौं। तइमे पहिल काज मोतीलाल भायकेँ शुभ सन्देश देब भेल। केतबो धड़फड़ेलौं मुदा सुतिकऽ उठैक जे नअबजिया समय अपन अछि, से भइये गेल। ओना, मनमे ईहो उठि गेल छल जे शुभ सन्देश शुभ दिनक शुभ बेलामे देब बेसी नीक होइत अछि, मुदा तइमे कनी पछुआ गेबे केलौं। जइसँ प्रभात बेलाक शुभ किरण छुबैमे देरी भइये गेल, मुदा पहुँचलौं।

दरबज्जापर बैसल मोतीलाल भाय जेना किछु मने-मन सोचिकऽ मुस्किया रहला छल, तहिना बुझि पड़ल। कनी हटलेसँ बजलौं- “भाय साहैब, नब वर्षक शुभकामनाक बधाइ अछि.!”

जेना ओंघाएलकेँ टोकलापर भक्क खुजैए तहिना मोतीलाल भाय आँखि खोलि देखिते बजला- “बौआ, तोरे शुभकामने हम थोड़े शुभ-शुभ जीब, जीब तोहर सुकर्मे। मुदा तोँहूँ ठीके कहलह, किए तँ समाजमे दुनू धारा ओहिना प्रवाहित होइए जहिना बंगालक गंगाक धारमे होइए। सोलह घन्टा उत्तरसँ दच्छिन दिस, माने पहाड़सँ समुद्र दिस बहैए आ आठ घन्टा दच्छिनसँ उत्तर दिस, माने समुद्रसँ पहाड़ दिस बहैए। तहिना कर्म आ भावक बीच सेहो अछिए। कखनो कर्मक धार होइत भाव प्रवाहित होइए तँ कखनो भवधाराक संग कर्म सेहो प्रवाहित होइते अछि।”

मोतीलाल भाइक विचार सुनि विचारए लगलौं कि बिच्चेमे मोतीलाल भाय कहलैन- “बौआ, चारिम दिन रामसेवकक समाद भेटल जे भेँट करए आबि रहल छैथ। से तोहर की विचार?”

जहिना मोतीलाल भाय अपन भार दिअ चाहलैन तहिना अपनो घुमौआ भार, घुमौआ भार भेल गाम-गामक भार जे गामे-गाम तीन-गाम-चारि गाम घुमि बाइस-तेबाइस होइत असल जगहपर पहुँचैए, दैत बजलौं-

“भाय साहैब! अहाँ तँ अपने विचारवान छी, जे नीक होइ से कहि दिअ। अपनेक कि कोनो आदेश हम काटब।”

कनीकाल गुम्म भऽ मोतीलाल भाय मने-मन विचारए लगला जे केते दुखद विषय अछि जे समाजक पढ़ल-लिखल लोक माने रामसेवक जखन एते पुरान, एते बेवहारिक सम्बन्धकेँ जोड़िकऽ नहि रखि सकल तखन..? जेना मनक उद्वेग मोतीलाल भाइक विचारमे ठोकर मारलकैन, तहिना बुझि पड़ल, बजला- “बौआ! जिनगीक सम्बन्धक रस, दुनू गोरेक बीच सुखि गेल। आब तोंही कहह जे की नीक हएत?”

ओना, मोतीलाल भाइक भितुरका की भाव छेलैन से तँ ओ अपने बुझैत हेता मुदा अपना बुझि पड़ल जे मने-मन मर्माहत जरूर छैथ। उधकी दैत उधकबैत पुछलयैन- “से की भाय साहैब?”

जहिना अपने उधकियौलिऐन तहिना उधैक कऽ मोतीलाल भाय बजला-

“बौआ, खिच्चड़ि आ खीर दुनू होइए गिलगरे। भात जकाँ टकुआ-तान नइ

होइए, मुदा दुनूकेँ एक कहबहक?”

बजलौं- “हमहीं कि आनो कियो ने एहेन बात कहता।”

ओना, मोतीलाल भाइक विचारक सहे-सह अपनो ओम्हरे झुकाइत रही मुदा तइ बिच्चेमे मोतीएलाल भाय बजला- “खीर आ खिच्चड़िमे की अन्तर अछि, बुझै छहक?”

अखन तक अपने यएह बुझै छेलौं जे नून देने खिच्चड़ि भेल आ चिन्नी देने खीर। बजलौं- “नूने-चिन्नीक तँ खेल अछि, खिच्चड़ि बनाबी कि खीर।”

हमर बात जेना मोतीलाल भाइक हृदयकेँ छुबि देलकैन तहिना हृदयसँ मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, खीर आ खिच्चड़िक अपन-अपन जीवन-चरित्र अछि।”

दुनूक अपन-अपन जीवन सुनि मन धकमकाएल। धकमकाइक कारण भेल, जैठाम अपने नून-चिन्नीक खेल बुझै छेलौं तैठाम दुनूक जीवनक चर्च मोतीलाल भाय केलैन अछि.! पुछलयैन-

“से केना भाय साहैब?”

जहिना कोनो कथाकार वा कवि अपन एक शीर्षकक शब्दमे कथा वा कविता सुना दइ छैथ तहिना मोतीलाल भाय बजला- “यएह जीवन दृष्टि छी जे जीवन देखबैए।”

सच पुछी तँ मोतीलाल भाइक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं, तँए कहब जे सुनबो नइ केलौं सेहो झूठ नइ बाजब। मुदा मोतीलाल भाइक भवधारमे किछु बाजब, कठिन अछिए। पुछलयैन- “से केना भाय साहैब?”

हमर विचार जेना मोतीलाल भाइक हृदयकेँ चुहुटिकऽ पकैड़ लेलकैन तहिना हीय खोलि बजला-

“बौआ, खिच्चड़ि ओ भेल जइमे दालि-चाउरक सम्बन्धक जीवन छी।”

जेना सोल्होअना मोतीलाल भाइक विचार मनमे गड़ि गेल तहिना बजलौं- “छीहे।”

मोतीलाल भाय बजला- “मुदा, खिच्चड़िमे जहिना दालिक ठेकान नइ अछि,

माने राहैड़सँ खेसारी धरि, तहिना चाउरक ठेकान सेहो नइ अछि। मोटका चाउरसँ महिक्का धरि जहिना, तहिना अरबासँ उसना धरि।"

ओना, जेतेक जल्दीमे मोतीलाल भाय बजला तेतेक जल्दीमे अपन मन नहि बुझि सकल। एकर माने ईहो नइ जे किछु ने बुझलौं। बजलौं-

"हँ, से तँ ठीके।"

हमर 'ठीक' जेना मोतीलाल भायकेँ पीठ ठोकि देलकैन तहिना ठोकाएल मने बजला- "बौआ, रामसेवक आ अपन जीवनमे यएह अन्तर अछि। जहिना खीर मात्र एकटा अन्न अपन संगीक संग माने दूध-चीनी इत्यादि विन्यासक संग चलैए, यएह चलब ओकर जीवन छी।"

मोतीलाल भाय जइ हिसाबसँ बजला तइ हिसाबसँ अपने नइ बुझि पेलौं। तँए बजैमे कनी धड़फड़ाएब भेबे कएल जे एना बजा गेल- "लोको खीर-खिच्चड़ि होइए, भाय साहैब। तखन तँ ओहो ने खिच्चड़िये भेल जे बिनु हारि-जीतक जिनगी जीबैए।"

मोतीलाल भाय बजला किछु ने मुदा गम्भीर जरूर भेला।

❑❑❑

❑❑

❑ **अप्पन साती (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 53-57**

कठिन काज-ले कठिन मेहनतक जरूरत अछि। सिरिफ कठिन मेहनते केलासँ सभ कठिन काज नइ भऽ सकैए। कठिन मेहनतक संग, सही समझ आ सही रस्ताक बोध सेहो जरूरी अछि। तँए कठिन मेहनत, गम्भीर चिन्तन आ आगू बढ़ैले काज करैक अदम्य साहस सेहो सभमे हेबा चाही। तैसंग मजगूत संकल्प सेहो होएब जरूरी अछि।

विचारक संग-संग हीरानन्दक मनमे कठिन कार्यक संकल्प सेहो अपन जगह बनबए लगल। भिनसुरका समय तँए लाल सुरुजमे ठंढपन सेहो रहबे करए। एक टकसँ सुरुज दिस देखैत हीरानन्द अपन विचारकेँ संकल्प लग लऽ जा दुनूकेँ हाथ पकैड़ दोस्ती करौलैन। दुनूक बीच दोस्ती होइते मनक नव उत्साह शरीरमे तेजी आनए लगलैन।

दरबज्जाक आगुए देने उत्तरे-दच्छिने रस्ता। हीरानन्द शशि शेखरकेँ कहलखिन-

“चलू, कनी बुलियो-टहैल लेब आ एकटा गप्पो करब।”

दुनू गोरे दरबज्जापर सँ उठि आगू बढ़ला आकि उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ तीनटा ढेरबा बच्चाकेँ जाइत देखलैन। तीनूक देह कारी खटखट। केश उड़ियाइत। डोरीबला फाटल-कारी झामर पेन्ट तीनू पहिरने। देहमे केकरो कोनो दोसर वस्त्र नहि। तीनूक हाथमे पुरना साड़ीक टुकड़ाकेँ चारू कोण बान्हल झोरा। तीनू गप-सप्प करैत उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ जाइत। तीनूक गप-सप्प सुनैले हीरानन्द कान पथलैन।

..मुस्कियाइत बेंगबा बजैत रहए-

“रौतुका बसिया रोटी आ डोका तीमन तेते ने खेलियौ जे चललो ने होइए। पेट ढब-ढब करैए।”

दहिना हाथ बढ़बैत फेर बाजल- “हे सुंहीं, हमर हाथ केहेन गमकै छै! जेना

बुझि पड़तौ जे कटुक-मसल्ला लगल छइ!"

हाथ समेट बाजल- "तूँ की खेलैंह गै रोगही?"

सिरसिराइत रोगही बाजल-

"हमरा माए कहलक जे जो डोका बीछि कऽ ला-गे। ताबे हमहूँ मड़ूआ उला-पीसि कऽ रोटी पकेने रहबौ। डोका चटनी आ रोटी खइहें।"

रोगहीक बात सुनि बेंगबा कबुतरीकेँ पुछलक-

"तूँ गै कबुतरी?"

"काल्हि जे माए डोका बेचैले गेल रहै तँ ओमहरेसँ मुरही किनने आएल। सएह खेलौं।"

कबुतरीक बात सुनि बेंगबा पनचैती केलक जे तोहर जतरा सभसँ नीक छौ। आइ तोरा सभसँ बेसी डोका हेतौ। सभसँ बेसी तोरा, तइसँ कम हमरा आ सभसँ कम रोगहीकेँ हेतइ।"

बेंगबाक पनचैतीक विरोध करैत रोगही बाजल-

"बड़ तूँ पण्डित बनै छँह। तोरे कहने हमरा कम हएत आ तोरा सभकेँ बेसी। हमरा जकाँ तोरा दुनू गोरेकेँ डोका बीछैक लूरि छौ? घौदियाएल डोका केतए रहै छै से बुझै छीही?"

मुँह सकुचबैत बेंगबा पुछलक-

"केतए रहै छै से तोंहें कह?"

"किए कहबौ। तूँ जे खेलैं से हमरा बाँटि देलैं?"

बेंगबा- "बाँटि दैतियौ से हम अगरजानी जननिहार भगवान छी। तूँ कहलैं हेन अखनी आ बाँटि दैतियौ अँगनेमे?"

बेंगबाक बात सुनि रोगही निरूत्तर भऽ गेल। हीरानन्द आ शशि शेखर तीनूक बात चुपचाप ठाढ़ भऽ सुनलैन। ताधैर तीनू गोरे हीरानन्दक लग पहुँच गेल रहए। हाथक इशारासँ तीनू गोरेकेँ हीरानन्द सोर पाड़ि पुछलखिन- "बौआ, तूँ सभ केतए जाइ छह?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि बेंगबा धाँइ-दे बाजल- "डोका बीछैले!"

“डोका बीछि कऽ की करै छहक?”

“अपनो सभतूर खाइ छी आ माए बेचबो करैए। बाउ कहने अछि जे डोका बेच कऽ पाइ हेतौ तइसँ अँगा-पेन्ट कीनि देबौ। घुरना बिआहमे पिहिन कऽ बरियाती जइहेँ।”

बेंगबाक बात सुनि हीरानन्द रोगहीकेँ पुछलखिन- “बच्चा तूँ?”

रोगही- “हमहूँ डोके बीछैले जाइ छी। माए कहलक जे डोकासँ जे पाइ हेतौ, तइसँ शिवरातिक मेलामे महकौआ तेल, महकौआ साबुन, केश बन्हैले फीता आ किलीप कीनि देबौ।”

मुस्कियाइत हीरानन्द बातक समर्थनमे मुड़ियो डोलबै छला आ मने-मन विचारबो करैथ जे केतेक आशासँ गरीबोक बच्चा जीबैए। शशि शेखर दिस देखि आँखिक इशारासँ कहलखिन-

“एकरा सबहक बगए देखियौ आ आशा देखियौ!”

तेसर बचियाकेँ पुछलखिन- “बौआ, तूँ?”

हीरानन्दक आँखिमे आँखि गड़ा कबुतरी कहलकैन-

“हमरा माए कहने अछि जे डोका-पाइसँ सल्बार-फराक कीनि देबौ।”

काजक समय दुइर होइत देखि हीरानन्द तीनूकेँ कहलखिन- “जाइ जाह।”

हीरानन्द आ शशि शेखर घुमि कऽ दरबज्जापर एला। ओ तीनू बच्चा गप-सप्प करैत आगू बढ़ल। थोड़े आगू बढ़लापर कबुतरी बेंगबाकेँ पुछलक-

“बेंगबा, तूँ बिआह कहिया करमेँ?”

बिआह सुनि बेंगबाकेँ मनमे खुशी भेलइ। हँसैत बाजल-

“अखनी बिआह नै करबै। मामा गाम गेल रहिऐ तँ भैया कहलक जे कनी और बढ़मेँ तँ तोरा भिबन्डी नेने जेबौ। ओतै नोकरी करबै। जखन बहुत रूपैआ हेतै तब ईंटाक घरो बनेबै आ बिआहो करबै।”

बिच्चेमे रोगही कहलकै- “तोरा सनक ढहलेल बुते बौह सम्हारल हेतौ?”

बौहुक नाओं सुनि बेंगबाक हृदय खुशीसँ गदगद भऽ गेल। हँसैत बाजल-

“आँइ गे रोगही, तूँ हमरा पुरुख नइ बुझैछेँ। हम तँ ओहेन पुरुख छी जे

एगोकेँ के कहए, तीन गो बौहुकेँ सम्हारि लेब!”

कबुतरी-

“खाइले की देबही बौहकेँ?”

बेंगबा- “भिबन्डीमे जब नोकरी करबै तँ बुझै छीही जे केते कमेबै? दू हजार रूपैआ एक्के महिनामे हेतइ।”

हँसैत रोगही बिच्चेमे टिपलक- “दू हजार रूपैआ गनलो हेतौ?”

“बीस-बीस कऽ गनबै। रूपैआ हेतै तँ फुलपेन्ट सिएबै, खूब चिक्कन अँगा किनबै, घड़ी किनबै, रेडी किनबै, मोबाइल किनबै, डोरीबला जुत्ता किनबै..; तब देखयहैन जे बेंगबा केहेन लगै छइ।”

“तोरा नोकरी के रखतौ?”

“गामबला भैया नोकरी रखा देतइ। कहलक जे जही मालिक ऐठीम हम रहै छिऐ तही मालिक ऐठीम हमरो रखा देतइ। बड़ धनीक मालिक छइ। मारिते नोकर छइ। हम जे मामा गाम गेल रही तँ भैयो गाम आएल रहए। ओ कहै जे हम मालिकक कोठीमे रहै छिऐ। दरमाहा छोड़ि कऽ बाइलियो खूब कमाइ छइ। मालिककेँ एकटा बेटी छइ। उ बड़का स्कूल-कौलेजमे पढ़ै छइ। अपनेसँ हवागाड़ी चलबै छइ। सभ दिन हमर भैया ओकरा स्कूल संगे जाइ छइ। उ पढ़ै छै आ हमर भैया गाड़ी ओगरै छइ। जखनी छुट्टी भऽ जाइ छै तखनी दुनू गोरे संगे अबै छइ। उ मलिकाइन हमरा भैयाकेँ मानबो खूम करै छइ। संगे-संग सिलेमा देखैले जाइ छइ। बजार घुमैले जाइ छइ। बड़का दोकान-होटलमे दुनू गोरे खूम लड्डू खाइए। अना तँ बड़का मालिक सभ नोकरकेँ दीयाबत्तीमे चिकनका कपड़ा दइ छै, हमरो भैयाकेँ दइ छइ। छोटकी मलिकाइन अपने दिसनसँ निकहा-निकहा फुलपेन्ट, निकहा-निकहा अँगा कीनि-कीनि दइ छइ। रूपैओ खूम दइ छइ...।”

तीनू गोरे बाध पहुँच गेल। बाध पहुँचते तीनू तीन दिस भऽ गेल। तीन दिस भऽ तीनू गोरे डोका बीछए लगल। ऊपरे सभमे डोका चरौर करैले निकलल रहए। डोका बीछि तीनू गोरे घुमि गेल।

दरबज्जापर आबि हीरानन्द शशि शेखरकेँ पुछलखिन- “शशि, की सभ ओइ

बच्चा सभमे देखलिऐ?"

मुँह बिजकबैत शशि बजला- "भाय, ओइ बच्चा सभकेँ देखि क्षुब्ध छेलौं। ओकरा सबहक बगए देखै छलिऐ आ मनक खुशी देखै छलिऐ! जेना दुनियाँ-दारीसँ कोनो मतलब नहि, एकदम निर्विकार। अपने-आपमे मगन छल।"

हीरानन्द- "कहलौं तँ ठीके मुदा एकटा बात तर्कक छल। अपना सबहक समाज तेते नमहर अछि जइमे भिखमंगासँ राजा धरि बसैए। एक दिस बड़का-बड़का कोठा अछि तँ दोसर दिस खोपड़ी। एक दिस औझुका विकसित मनुख अछि तँ दोसर दिस आदिम जुगक मनुख सेहो अछि। एते पैघ इतिहास समाज अपना पेटमे रखने अछि, मुदा ने ओइ इतिहासकेँ कियो पढ़निहार अछि आ ने बुझनिहार।"

"ठीके कहलौं भाय!"

"आइ धरि, हम सभ समाजक जइ रूपकेँ देखै छी ओ ऊपरे-झापरे देखै छी। मुदा देखैक जरूरत अछि ओकर भीतरी ढाँचाकेँ। जहिना समुद्रक ऊपरका पानि आ लहैर तँ सभ देखैए मुदा ओइक भीतर की सभ अछि से देखनिहार कए गोरे अछि?"

❑❑❑

❑❑

❑ **मौलाइल गाछक फूल (2009), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 100-105**

अखुनका जे जनमारा समय बनि गेल अछि
तइमे पार-घाट केना लगत। बीतल तँ बीतिये गेल,
जे पुन: घुमिकऽ नहि औत आ जे काल्हि औत
तइले काल्हि अछिए।

"बइसैयोले की कहबह, एहेन समयसँ पचास बर्खक पछाइत भेँट भेल अछि।"

अपन बात दिनमा काका समाप्तो ने केने छला कि बिच्चेमे बजलौं-

"काका, अहाँकेँ तँ पचास बरख पहिलुका देखल-भोगल समय अछि तँए पार होइमे कोनो बेसी तरद्दुत नहि हएत, मुदा अपना तँ पहिल बेर एहेन समयसँ भेँट भेल अछि से अबूह बुझि पड़ैए जे जीब कि मरब से ठेकानेपर ने चढ़ैए।"

तैबीच तमाकुल चुना दिनमो काकाकेँ देलिऐन आ अपनो ठोरमे लेलौं। कोनो अमलक एहेन सुभाव अछिए जे अमलपान करैसँ पहिने ओ अपना दिस खिंचैए, जेकरा पूर्तिक लेल लोक पैघ-सँ-पैघ अपराधियो बनैए आ अपराधो तँ करिते अछि। मुदा वएह अमल जखन पूर्ति होइए तखन दुनियाँ दिस तकैबते अछि। सएह अपनो भेल आ दिनमो काकाकेँ भेलैन। ओना, दिनमा कक्काक मनमे विचारक चकभौर चलिये रहल छेलैन मुदा अपन तँ हाटक बाटक विचार छी। दुपहरक पछाइत जहिना हाट लगैए आ साँझ पड़ैत-पड़ैत उसैर जाइए तहिना अपनो हाट-बाटक विचार छीहे। पचास बरख पहिने केहेन समय भेल छल आ ऐबेर केहेन समय भेल से अपने थोड़े तुलना कऽ सकै छी, ओ तँ दिनमे काका कऽ सकै छैथ। तैपर धियाने ने रहल। ओना, तमाकुलक सेव मन तक पहुँच गेल तँए आरो गप-सप्प करैक मन भइये गेल अछि। दिनमा काका बजला-

"घुरन धड़फड़ीमे ने ते छह?"

बजलौं- "जे धड़फड़ी अहाँ कहै छी, से नहि अछि। किए तँ रौतुका तरकारी घरमे अछिए, काल्हि-परसू ले लेब।"

दिनमा काका बुझि गेला जे दस-बीस मिनट गप-सप्प कएल जा सकैए। फेर लगले अपने मनमे भेलैन जे पचास बरख पैछला बात जँ पहिने शुरू करब तेकरा आइ धरि अबैमे बहुत समय लागत। माने गप-सप्पक क्रममे, तखन तँ अखुनका विचारे पछुआ जाएत.! आ जखने अखुनका विचार पछुआ जाएत तखने औझुका समये दुरुपयोग भऽ जाएत। से नहि तँ अखन जे टटका समस्या अछि तैपर विचार करैत पाछू मुहेँ बढ़ब बेसी नीक हएत। अपन मनक विचारसँ दिनमा काका तिरपित भऽ हमरा तिरपित करैत बजला-

"कौल्हुका-परसुका तरकारी कीनबह, सएह ने हाटक काज छह?"

बजलौं- "हँ।"

दिनमा काका बजला-

"केते गोरे हाटपर जेबे करत, केकरो पाइ आ झोरा दऽ दिहक, ओमहरसँ नेने औतह, तैबीच अपना दुनू गोरे गपो-सप्प कऽ लेब।"

ओना, दिनमा कक्काक विचार मनमे जँचल मुदा अपने मन ईहो कहए जे जँ कियो हटवाह नहि भेटत तखन तँ काज हूसिये जाएत किने। काजक रूपक बिसवास जखन मनमे जगै छै तखन ने मन बिसवास करैए जे एहेन काज करैमे केतौ राहु-केतुक प्रकोप नहि हएत। आ जँ हेबो करत तँ ओकरा ठेललो जा सकैत अछि। मन झुझुआइये रहल छल। ओना, तमाकुलक खुमारी गप-सप्प करै दिस मनक विचारकेँ ठेलिये रहल छल। मुदा तइ बिच्चेमे अपन झुझुआइत मनकेँ देखि पुन: दिनमा काका बजला-

"घुरन, एक्के काजे दुनियाँ नइ ने चलैए। विचार आ बेवहार अर्द्धनारीश्वर बनि जाबे नहि चलत, ताबे जँ चलबो करत तँ चलिये केते दिन सकत। कखनो विचार बेवहारकेँ ठेलत तँ कखनो बेवहार विचारकेँ ठेलत।"

ओना, दिनमा कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, मुदा मात्राबद्ध गीत जकाँ मनक प्रवाह प्रवाहित होइत मुहसँ निकैल गेल-

"हँ, से तँ नहियेँ चलि सकैए।"

तैबीच दिनमा काकाकेँ एकटा जुक्ति आरो मोन पड़लैन। मोन पड़िते बजला-

“घुरन, लौफावालीकेँ कहि देने छिऐ जे हाटसँ घुमै बेर हमरा-ले सजमनि आ घेरा नेने आएब। तहीमे आधा तोहूँ लिहह। जँ बँटलासँ कम हएत तँ कहि देबै जे कौल्हुका-जोकर ने भेल मुदा परसू तँ खगबे करत। हाटक अतिरिक्त अँगने-अँगने सेहो बेचिते छी, दुनू गोरे ऐठाम काल्हि बेरोमे दऽ देब।”

दिनमा कक्काक काजक सूत्रवत विचार देखि अपनो मन कहलक जे मनुक्ख जँ मनुक्खक अग्रिम काजक विचारपर बिसवास नहि करत तँ संग मिलि चलिये केते दिन सकैए। सोल्होअना बिसवास दिनमा कक्काक विचारपर करैत बजलौं-

“काका, अहूँ बड़ जोगारी छी।”

ओना, दिनमा कक्काक मनमे लहरलैन जे जीवनमे जोगारक की महत्व अछि से घुरनकेँ कहि दिऐ। मुदा फेर अपने मन रोकलकैन जे समय कम अछि आ प्रश्न-पर-प्रश्न उठबैत जाएब, तखन तँ यएह ने हएत जे कोनो प्रश्नक समुचित उत्तर नहि दए सकब। तहूमे अखन कोन जरूरी अछि जे विद्यार्थीक पढ़ैक जोगार, किसानक खेतीक जोगार, वेपारीक वेपारक जोगारक चर्च अनेरे करब। अखन तँ मात्र एतबे चर्च करब नीक हएत जे अखुनका जे जनमारा समय बनि गेल अछि तइमे पार-घाट केना लगत। बीतल तँ बीतिये गेल, जे पुन: घुमिकऽ नहि औत आ जे काल्हि औत तइले काल्हि अछिए। दिनमा काका बजला- “ऐबेर नीक ठकान ठकेलौं, घुरन।”

ओना, मनमे भेल जे दिनमा काकाकेँ कहि दिऐन जे जाबे लोक ठकाइ नहि अछि ताबे ठकविद्याक बोध नहि होइ छै, किए तँ अपन कर्मक परखलहा बेसी मजगूतीसँ काज करैए। मुदा फेर अपने मन कहलक जे नवका विद्यालयक बच्चा सभ जकाँ अपने नहि ने छी जे परिवारक धार बुझबे ने करब आ बहरवैया रूपक धार बना बहरवैया बनि जाएब। अखनो गमैया घीक बराबरी बहरबैया घी थोड़े कऽ सकैए। बजलौं- “से की कक्का?”

‘से की’ सुनिते दिनमा कक्काक मन उत्तर दइले ठनैक उठलैन, मुदा एक्के-दुइये अनेको प्रश्न सोझामे आबियो गेल छेलैन आ आबियो रहले छेलैन तँए प्रश्नकेँ जोड़ियबैत बजला- “घुरन, एकटा प्रश्न भेल पचास बरख पूर्वक समयक

समस्या, माने 1971 इस्वीक मौसम, आ दोसर भेल 2021 इस्वीक मौसम। एहने दोसर अछि 1934 इस्वीक भुमकमक समय आ 1988 इस्वीक भुमकमक समय। दुनूक दूरी सेहो करीब-करीब पचास-पचपन बर्खक बीच अछिए। मुदा से सभ अखन नहि, अखन एतबे जे रियेक्टर पैमानाक, माने भुमकम नपैबला, जे संख्या अछि ओकर एक अंकक माने भेल तीस हजार गुणा अधिक शक्तिशाली।"

भूगोलसँ कहियो अपन मिलान नहि रहल, तँए मनमे अकच्छ सेहो लगिये रहल छल, मुदा से अपना माननै थोड़े हएत।

❑❑❑

❑❑

❑ नीक ठकान ठकेलौं (2021), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 81-85

“बौआ, जहिना तितिर सभ बमन खा
तैतिरीय उपनिषद गढ़ि लेलक तहिना खुदरा-
खुदरी केते कहबह। एक्केबेर बुझि लहक जे 1967
इस्वीक रौदी 1971 इस्वीक सालो भरिक बरखा,
1987 इस्वीक बाढ़ि आ 1988 इस्वीक भुमकम, सभ
भेल, मुदा जेही घराड़ीपर घर पहिनौं छल तेतइ
अखनो अछि। ई तँ जीवनक खेल छी।
सुदृढ़ भऽ खेलैक अछि।”

जहिना कोनो विचारकर्कें ओहन समयमे जखन ओ ओहने विषयक विचार करैत होथि आ तहीकाल जँ कियो ओहने प्रश्न रखैए, जेकर जवाब विचारकक जीहक टुनगीपर रहने धाँइ-दे भेटि जाइए तहिना नीलकण्ठ बाबाकेँ सेहो भेलैन। जइसँ मन हलैस कऽ कलैस गेलैन। कलैसते बजला- “बौआ सुशील, नीक लागब वा नइ नीक लागब वैचारिक प्रश्न छी। मनुखमे दुनू समाहित अछि। माने जीवनक लेल जहिना ओकर भौतिक आवश्यकता अछि तहिना वैचारिक सेहो अछि।”

अपना बुझि पड़ल जे बाबा किछु आरो बजता मुदा बिच्चेमे मुँह बन्न कऽ लेलैन, जइ बुझैले चोटाएल साँप जकाँ अपन मन तँ उनटए-पुनटए लगल, तँए आरो बाजबसँ परहेज करैत बजलौं-

“हँ, से तँ अछिए।”

जेना कोनो महाकाव्य वा उपन्यासक कोनो अंश समाप्त भेने अध्याय बदलैए तहिना नीलकण्ठ बाबा उजड़ल-उपटल गामक खुट्टा जकाँ ठाढ़ भेल बजला- “बौआ सुशील, बहुत दिनपर गाम एलह अछि, तँए कम-सँ-कम एक पनरहिया रहह। बहुत दिनक गप-सप्प सेहो बाँकी अछि। अखन तोहूँ रस्ताक झमारल छह तँए मन भरियाएल हेतह। जइसँ नीक जकाँ गप-सप्प करैमे मन नहि लगतह।”

ओना, अपना जनैत नीलकण्ठ बाबा सामाजिक भाषामे बाजल छला, मुदा अपना बुझि पड़ि रहल छल जे मन तँ बेसी भरियाएल नहि अछि, हँ तखन देहमे थकान जरूर अछि। बजलौं- “बाबा, मन ओते भरियाएल नहि अछि जे गप-सप्प नहि कऽ सकै छी। तहूमे परदेशी छी, अपन रहैक कोनो निसचित ठौर तेहेन नहियेँ अछि जे निचेनसँ कोनो गप-सप्प करब।”

नीलकण्ठ बाबा बुझि गेला जे सुशील गप-सप्प करैक विचारमे अछि। बजला- “परिवारक की हाल-चाल छह?”

ओना, नीलकण्ठ बाबा विचारकेँ परिवार दिस मोड़ि देलैन मुदा अपन मन कहै छल जे परिवार तँ बेकतीगत भेल, जखन समाजक दू गोरे गप-सप्प कऽ रहल छी तखन सामाजिक गप-सप्प करब ने बेसी नीक हएत। बेसी नीक हएत, की कम नीक हएत ओ जगह-जगहक विचार छी। बजलौं-

“अपने सबहक दयासँ सभ नीक अछि।”

नीलकण्ठ बाबा बजला-

“बहुत दिनपर गाम घुरलह हेन।”

बजलौं- “हँ, से तँ घुरबे केलौ हेन।”

ओना, मनमे जे जेबाकालक माने जइ परिस्थितिमे गाम छोड़लौं आ तइ दिनमे जे विचार मनमे छल तइमे आ आजुक जे विचार अछि तइमे अन्तर भइये गेल अछि। नीलकण्ठ बाबा बजला- “बौआ सुशील, जहिना बजरूआ एक जीवन छी तहिना गमैया जीवन सेहो अछि। दुनूक अपन-अपन पद्धति अछि। जे बदलने जीवनक रूप-रंग सेहो बदैल जाइए।”

मने-मन अपनो सएह विचार करै छेलौं जे बात नीलकण्ठ बाबा बजला। मुदा तइसँ मन ओहिना हलैस गेल जेना टटका पढ़ल वा मुँहजुआनी याद कएल परीक्षार्थीकेँ परीक्षामे ओहने प्रश्न देखि मनमे सफलताक आशा लिखैसँ पहिनहि जगि जाइए, बजलौं- “बाबा, अपनो मन कहि रहल अछि जे जीवनक खातिर मिथिला सन पवित्र भूमि छोड़ब नेनमति भेल।”

‘नेनमति’ सुनि आकि अपन विचारक प्रवाहमे, नीलकण्ठ बाबा बजला-

“बौआ सुशील, देहधारी जीव धरतीपर बहुत अछि मुदा जहिना चिन्तनक दौड़मे मनुख सभसँ आगू बढ़ि पंचतात्विक अछि तहिना बेवहारिक जीवनमे सेहो जीबैक उच्च कोटिक कलाकार सेहो अछिए, तखन जँ.?”

अपन जीवनक बात नीलकण्ठ बाबा पेटेमे रखि चुप भऽ गेला मुदा अपन मन बेर-बेर खुरखुरा रहल छल जे नीलकण्ठ बाबा अस्सी बर्खसँ ऊपरक जीवन गमैया परिवेशमे माने गाममे बीता चुकल छैथ, हिनको तँ अपन अनुभवक एकटा नमहर इतिहास अछिए। भाय, जखन चारू जुगक आड़ि-धुरक भाँज लगि जाएत तखन जुगक भीतर जे जीवन रहल से नहियोँ बुझल रहने लोक टप्पो-टोइया करि कऽ किछुओ अनुमान तँ कइये लइए।

बजलौं- “बाबा, अपनेसँ तँ पाँच बर्ख पढ़ने छी मुदा तइ दिनमे माने पढ़ैक दिनमे जे बात मनमे नइ आएल छल, आइ ओ आएल, तेकर उत्तर तँ बाँकी अछिए।”

काकभुशुण्डी कौआक नजैर नीलकण्ठ बाबाक छैन्हे, बजला- “बौआ, जहिना तितिर सभ बमन खा तैतिरीय उपनिषद गढ़ि लेलक तहिना खुदरा-खुदरी केते कहबह। एक्केबेर बुझि लहक जे 1967 इस्वीक रौदी 1971 इस्वीक सालो भरिक बरखा, 1987 इस्वीक बाढ़ि आ 1988 इस्वीक भुमकम, सभ भेल, मुदा जेही घराड़ीपर घर पहिनौं छल तेतइ अखनो अछि। ई तँ जीवनक खेल छी। सुद्दृढ़ भऽ खेलैक अछि।”

❑❑❑

❑❑

❑ **कर्ताक रंग कर्मक संग (2020), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 88-91**

अपने भरि दिन निपत्ते रहै छैथ, असगरे माटिक मुरुत बनि ओगरबाहिक भाँजमे रहब, की यएह एक पढ़ल-लिखल नारीक कर्तव्य भेल? हजारो मील दूरसँ आबि बसल छी, बोली-वाणीसँ लऽ कऽ क्रिया-कलापमे अन्तर अछि। एहेन स्थितिमे केकरो-ऐठाम जाएब-आएब केतेक उचित हएत?

एक दिस जहिना डॉक्टर लड़का डॉक्टर लड़की संग बिआह करए चाहैए, जइसँ एक-जतिया परिवार बनि रहल अछि, तँ दोसर दिस किसान परिवारसँ डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रोफेसर, शिक्षक इत्यादि पैदा लऽ रहल अछि। तँ दोसर दिस किसानी जिनगीसँ भिन्न अनेको जिनगी ठाढ़ो तँ भेले जा रहल अछि। सार-बहिनोइक (रूक्मिणीक पिता आ मामक) मतभेद नीक जकाँ सोझहामे आबि गेल। देवानन पेशोपेशमे पड़ि गेला। कन्यादान सन यज्ञ परिवारमे हएत तैठाम एक पक्षे विरोधमे ठाढ़ भऽ जाएत। मुदा फेर मनमे उठि जानि जे अपन परिवार अपना ढंगे नइ चला सकलौं तँ पुरुखे की भेलौं एके पीपही ने ढोल-नङ्गेरा संग सेहो बजैए आ वीणा संग सेहो बजैए। खाली कनी रूपे ने बदलै छइ। अपन पुरुखपना दुनियाँकेँ की देखाएब? मुदा मन ठमकलैन। पत्नीकेँ जानकारी देब जरूरी बुझि पड़लैन।

जहिना देवानन पेशोपेशमे पड़ल छला तहिना पत्नियो पड़ि गेली। किएक तँ दुर्वासा जकाँ भाए-यशोधर कहि देलखिन जे जँ हमर विचार नइ रहत तँ हमरा कोनो मतलब बहिन-बहिनोइ आ भागिन-भगिनीसँ नइ रहत। थूक फेकए दरबज्जापर नइ आएब। एक दिस नैहर दोसर दिस सासुर, एक दिस जनमसँ अठारह बर्खक परिवार आ दोसर दिस अठारह बर्खक पछातिक परिवार, एक दिस पति दोसर दिस भाय, की करब?

अपन सभ बात दमयन्ती खोलि कऽ पतिकेँ कहि देलखिन। द्वन्द्वमे पड़ल पत्नीक विचार सुनि देवानन झोंकमे कहि देलखिन-

“जँ पुरुख भऽ कऽ जनम नेने छी, पुरुषारथक सवारीसँ परिवारकेँ पार उतारब। जँ से नहि तँ जाबे जीबै छी तेतबे दिनक कर्ता-धर्ता छी, पछाइत देखए आएब।”

रूक्मिणीक बिआह होइसँ पहिने बपहर-मात्रिकक बीच कसमकस विवाद फँसि गेल। मुदा पत्नी आ अपन सहोदर-बहिनक विचार सुनि देवानन पघिल गेला। जहिना पाथर शील पैदा करैए तहिना ने पानियो-हवा करैए। भाइक सिनेह जीवित रखैत बहिन देवाननकेँ कहलकैन-

“भैया, आइक युगमे कन्यादान परिवारक सभसँ पैघ मोटा बनि गेल अछि, ओना काजक हिसाबे परिवारक सभसँ पैघ काज नइ छी। ओहूसँ पैघ-पैघ काज अछि। मुदा भारी मोटा उठबैमे दोसराक सहारा लिअ पड़ै छै नइ तँ मोटाकेँ खसै-पड़ैक डर रहै छइ।”

बहिनक विचार देवानन मानि गेला। बिआहक भार सार (यशोधर)केँ सुमझा देलखिन। दू बीघा खेत देवाननक बेचा रूक्मिणीक बिआह कमर्शियल बैंकक किरानी संग यशोधर करा देलखिन।

बैंकक नोकरीक तीन बर्ख पछाइत सुखदेव मिलल-जुलल रहल। गामसँ, किसान परिवारसँ पहिले-पहिल शहर पहुँचल रहए। ओना असगरूआ परिवार तँए दुइए कोठरीक भाड़ाक मकानसँ काज चलबैत। अपने भानसो करैत आ हाटो-बजार। नोकरी करितो असगरूआ जिनगी जीबैत रहए।

तीन बर्ख पछाइत सुखदेवक दुरागमन रूक्मिणीक संग भेल। परिवारसँ लऽ कऽ दुनू बेकती -सुखदेवो आ रूक्मिणीओ- लेल पर्याप्त वस्तु-जातसँ लऽ कऽ नगदो आ द्रव्यो बिआहमे भेटले रहै। बिआहक किछुए दिन पछाइत सुखदेवक परमोशन सेहो भेल। सार्वजनिक जिनगीसँ भिन्न बेकतीगत जिनगीक क्रिया-कलाप सेहो होइए। प्राइवेट बैंक रहने सुखदेवक परमोशन किरानीसँ किरानी नइ भऽ क्षेत्र बदैल गेल। फील्डक काज भेटलै। बेपारी, उद्योगपतिक संग आरो-आरो केतेक रंग-बिरंगक लोकक बीच जाइ-अबैक

अवसर भेटलै। भेँट-घाँट, उपहार, भोज-भातक संग आरो-आरो अवसर सुखदेवकेँ हाथ लगलै।

दू कोठरीक मकान, वस्तु-जातसँ तेना भरि गेलै जे उठब-बैसब, चलब-फिरबमे असोकर्ज हुअ लगलै। बैंकक लेन-देनक नव-नव जानकारी सेहो भेलइ। अँटाबेशक जगह दुआरे मकान बदलैक विचार करिते सुखदेव जमीन-कीनि अपन मकान बनबैक विचार केलक।

दुनू दिसक आमदनी देखि मकान बनाएब हल्लुके बुझि पड़लै। भारी तँ ओतए होइए जेतए पेटक भूख, बेटीक बिआह आ बाल-बच्चाकेँ पढ़बैक समस्या पकड़ने अछि। भूखल पेटक जिनगी पहिने अन्न-पानि मंगैत, भलेँ ओ निवस्त्रे आ टुटले घरमे किए ने रहैत हुअए से तँ सुखदेवकेँ नहि। जइ परिवारमे जनम भेलै सेहो मध्यम परिवार छेलै, तँए भूख-पियास, वस्त्र-घरक दुखसँ अपरिचित रहबे करए। बैंकक लोन आ बाजारक वस्तुक सहयोग भेटबे केलै। नीक घर बनौलक। घर बनैबते जीवनोपयोगी आरो-आरो वस्तु-जातसँ भरए लगल। भरबो केलक। जिनगीक क्रिया दिनो-दिन बदलए लगलै। ने खाइक ठेकान आ ने पीबैक। ने रहैक ठेकान आ ने बजैक। सभ तरहक काज बेठेकान हुअ लगलै। पढ़ल-लिखल रूक्मिणी पतिक सभ आकलन करैत। मकान, गाड़ी, बेटाक पढ़ैक इत्यादि कर्जसँ दबल सुखदेव दिस नजैर उठैबते रूक्मिणीक मन कनए लगैत। नोकरीक दरमाहा भलेँ कर्जक किस्त चुकबैमे जाइत होइन कमीशनक आमदनी आ उपहारसँ कर्जक महसूस नइ होइत होइन मुदा जिनगियो तँ बेठेकाने अछि। करखन अछि आ करखन ढन-दे चलि जाएत तेकर कोन ठीक छइ। एहेन स्थितिमे कर्जक देनदार के बनत? की नोकरी अछि जे दरमाहासँ पुराएब।

सुखदेव आ रूक्मिणी दुनूक विचारधारा सदैत टकराइत। टकड़ेबो केना नइ करैत। एक दिस किसानी संस्कार आ संस्कृतिमे पलल मिथिलांगना, दोसर दिस हाल-सालमे बसल भदबरिया माछ सदृश जिनगी।

बिआहक चौदहम बर्खक आक्रमण रूक्मिणीकेँ बरदास नइ भेल, जेकर फल दुनू दिस भऽ गेल। आक्रमण भेल जे अखन धरि विपरीत दिशामे आगू बढ़ैत सुखदेव ओतए पहुँच गेल छल जेएत मिथिलाक धरोहरकेँ खेलक गेन जकाँ गुड़का लतियौल जाइत। जे सुखदेव पहिने बैंक समयसँ जाइ-अबै छल ओ

मास-मास दिन डेरासँ हेराए लगल। असगरे रूक्मिणी गुमसैर-गुमसैर घरक बीच समय गमबैत। मनमे सदिखन उठए लगलैन- 'ई कोन जिनगी भेल?' बेटा देहरादूनमे पढ़ैए, अपने भरि दिन निपत्ते रहै छैथ, असगरे माटिक मुरुत बनि ओगरबाहिक भाँजमे रहब, की यएह एक पढ़ल-लिखल नारीक कर्तव्य भेल? हजारो मील दूरसँ आबि बसल छी, बोली-वाणीसँ लऽ कऽ क्रिया-कलापमे अन्तर अछि। एहेन स्थितिमे केकरो-ऐठाम जाएब-आएब केते उचित हएत? अखन धरि घरसँ नइ निकललौं, तैठाम लोककेँ लगले चीन्हि केना लेब? तहूमे लुटिहारा समय से आबि गेल अछि। धन-धर्म सबहक लुट्टीस दिन-देखार भऽ रहल अछि। बत्तीसम बर्खक अवस्थामे सुखदेव आ रूक्मिणीक सम्बन्ध विच्छेद भऽ गेल। एकटा बेटा रहने (जे दूनमे पढ़ैए) तँइ भेल जे अपन निर्णय बेटा स्वयं करत। बाँकी सम्पैतमे अपन नैहरक देल जे किछु छेलै से लऽ कऽ रूक्मिणी पतिक घरसँ निकैल गेल। मुदा हाथक चुड़ी चुनचुनाइते छइ। अपन सासुरक अन्तिम पराउ लग रूक्मिणी गुमे-गुम पहुँच गेली, मैयाँकेँ विस्मित चेहरा देखि रूक्मिणी उत्तेजित अवाजमे बाजल- "मैयाँ, पाबैनक दिन छिऐ। तहूमे नर्क-निवारण चतुर्दशी। औझुके उपास ने नर्कक बेड़ी काटक। आकि श्राद्ध-कर्मक भरोसे रहत। की मने-मन सोचै छथिन?"

मने-मन की सोचै छथिन, सुनि सरोजनी-मैयाँक अलसाइत मन फुड़फुड़ा कऽ जागल। बजली- "रूक्मिणी, अखन अहाँ दुनियाँक तीत-मीठ ओते कहाँ बुझलौं हेन...।"

आगू बजैक बात सरोजनी-मैयाँक पेटेमे रहैन तैबीच रूक्मिणी चाँइ-दे चनचना गेली- "से किए कहै छथिन, मैयाँ?"

बाल-बोध बुझि मैयाँकेँ मिसियो भरि लहैर नइ उठलैन। पोखरिक शान्त पानि जकाँ मन असथिरे रहलैन। बजली- "रूक्मिणी, मनमे उठि गेल छल जे पैंतीसे बर्खक अवस्थामे विधवा भेल रही आ अहूँकेँ देखै छी जे अही उमेरमे पतिसँ सम्बन्ध विच्छेद भेल।"

मैयाँक बात सुनिते रूक्मिणी चमैक कऽ चमचमेली- "मैयाँ, हिनकर अखन केते उमेर छैन?"

"सत्तैरम छी।"

“परिवारमे के सभ छैन?”

“कियो ने। असगरे।”

मैयाँक असगर सुनि रूक्मिणीक मनमे ठहकल अपनो जिनगी तँ भरिसक तहिना अछि। बाजल- “असगर लेल लोक घर-दुआर बना किए रहत, ओ परिवार केना भेल?”

रूक्मिणीक प्रश्न सुनि ठहाका मारि मैयाँ हँसली। प्रश्न उठबैत बजली-

“परिवार किए ने भेल। परिवारेक समूह ने समाज छी। तइले ई कहाँ फुटौल अछि जे एक गोटेक परिवार परिवार नइ भेल आ दस-बीस गोटे रहने परिवार भेल। एक गोटेक असगरूआ परिवार भेल। मुदा जरूरतो तँ परिवारोक ओकरे हेतै किने।”

मैयाँक विचारकेँ सुहकारैत रूक्मिणी बाजल- “मैयाँ, ईहो असगरे छैथ आ हमहूँ असगरे छी। तैबीच ई पूर्ण जिनगी जीब लेलैन आ हम लसैक गेल छी। तँए हमरो हाथ पकैड़ अपना दिस खींच लौथु जइसँ हिनके जकाँ टहलैत-बुलैत जिनगी रहत।”

रूक्मिणीक आत्मा-रामकेँ अकाइन मैयाँ बजली- “रूक्मिणी, अपन जिनगीक लोक अपने मालिक छी। जेहेन बना जीबए चाहब तेहेन बना जीब सकै छी। मुदा समाजक बीच परिवार आ परिवारक बीच बेकती होइत अछि जइ दूरीकेँ टपि आगू बढ़ब असान नइ अछि। अपने बात कहै छी, जे माता-पिता बिआह करा घरसँ अलग कऽ देलैन, जैठाम केलैन ओ ठौर ढहि गेल। तैठाम अहीं कहू जे दुनियाँमे के अपन रहल। केतए जैतौं कोनो कि हमहींटा एहेन छी आकि पुरुखो सभ छैथ। गोसैंयो अस्त होइपर भेल, दोसर दिन निचेनसँ आरो गप करब।”

❑❑❑

❑❑

❑ **सधवा-विधवा (उपन्यास), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 17-23**

विचारक छलांग लोक ओतए तक मारि दइ छैथ

जे धरतीपर जेतेक मनुख छी, ओ सभ एक जाति भेलौं, मनुख जाति आ सबहक एकरंग जीवन हेबा चाही। तँए दुनियाँक कोनो कोण किए ने हउ, ओ अपन मातृभूमि भेबे कएल। ..मुदा वएह अपन जन्मदाता–माता-पिता– केँ वृद्धावस्थाक सेवा बिसैर बीरान बनियेँ रहल अछि। यएह तँ छी बुइधिक करामात..!

जहिना सघन आबादीबला मिथिला अछि तहिना केरलो अछिए आ तहिना कनी-मनी कम बंगालो अछिए। जनसंख्याक सघन घनत्वबला मैथिल आपैत-विपैत पड़लापर अपना गामसँ बाहर जा कमा कऽ आनि अपन परिवारकेँ जीवित रखलैन। समयानुकूल, जेना ऐठामक श्रमिककेँ मात्र खेतीसँ जुड़ल कलाक अनुभव छेलैन। ..ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि जे हजारो बर्ख ऊपरसँ बाहरी शासक शासन करैत रहल, जे जीवनक संग कम खेलबाड़ केने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। गुलामीक जीवनो-दर्शन आ किरियो-कलाप वेदरंग भइये जाइए। से भेबे कएल। मुदा ओ अखन नहि, अखन बस एतबे जे केना मिथिलांचलक लोक बाहर जाइ छला। दुरकाल समय भेलापर जखन जनगण बेसहारा भऽ जाइथ, तखन गामक संग इलाकाक लोक जेर बना-बना माने सामुहिक रूपमे, पूब मुहेँ जाए लगला। नेपालक इलाका होइत, बंगालक ढाका तक पटुआ, धान काटए जाइ छला। तैसंग धनरोपनी करए सेहो जाइ छला। नेपाल-बंगालक संग असाम सेहो जाइ छला। कहब जे गाड़ी-सवारीक सुविधा तँ नहि छल, तखन एते दूर केना जाइ छला? ..पएरे जाइ छला। जेना-जेना सुविधा बढ़ैत गेल तेना-तेना उपयोगमे अबैत गेल। तीनसँ छअ मास कमा लोक अबै छला आ परिवारक संग समय बितबै छला। साले-साल लोकक आबा-जाही हुअ लगल।

पछाइत, देश स्वतंत्र भेलापर अपना ऐठामक श्रमिक पूब दिशाक संग

पच्छिम दिशा पकैड़ पंजाब सेहो जाए लगला। कृषिसँ जुड़ल श्रमिककेँ कृषि काज भेटने अनुकूल रोजगार भइये गेल।

पछाइत परिवेश बदलने लोककेँ चहुमुखी पड़ाइनक रस्ता भेटल। पढ़ल-लिखल लोककेँ जहिना पढ़ै-लिखैक काज भेटल, तहिना बिनु पढ़ल-लिखल लोककेँ कारखानामे श्रमक काज सेहो भेटल। मिथिलांचलक कृषि आधारित परिवार तहस-नहस हुअ लगल। अखन एतबे।

मननदेवो आ चेतनाथो पिताक एकलौता सन्तान, दुनूक अपन कृषि अधारित ओहन परिवार अछि जे भोजन-वस्त्रक संग कौलेज तक सेहो पढ़ा सकैए। रिजल्ट निकलैसँ पहिने मननदेवो आ चेतनाथो पिताकेँ कहलैन- “हम नोकरी करए बाहर नहि जाएब।”

पिता तँ आखिर पिते छिया किने, ओ केना चाहता जे अपन अंग भंग हुअए। दुनूक पिता कहलखिन- “तोरा भगबै के छह जे बाहर भगबह। अपन सभ किछु छह, तइ बीच जे रहबह तइसँ नीक जीवन दुनियाँमे केतए भेटतह।”

किछु दिन पूर्वक परिवेश किछु आरो छल, मुदा आजुक परिवेश ओहन बनि रहल अछि जे गामक अपन सभ किछु छोड़ि बाहर जा बसैक लिलसा लोकक मनकेँ पकैड़ लेलक अछि। बाध्यता तँ ऐठामक किसानकेँ भइये गेल छैन जे बेवस्थाहीन जीवन जीब रहला अछि। सार्वजनिक बेवस्था एतेक पछुआएल अछि जे अखनो खेतमे ओहने हर चलि रहल अछि जेहेन–अढ़ाइ बीतक–हर जनकजी चलौने रहैथ।

ओना, सम्पूर्ण मिथिलाक दाही-जरती सेहो एक रंग नहियेँ अछि, किछु मौनसुनक कारणे, माने किछु प्राकृतिक बुनाबटिक कारणे आ किछु जमीनक आकारक कारणे अन्तर भइये गेल अछि। तैसंग सामाजिक बेवस्था सेहो एकरंग ने अखन अछि आ ने हजारो बर्खक गुलामीक बीच रहल। किछु बेवहार सार्वजनिक अछि, तँ किछु बेकतीगत वा जातिगत सेहो अछिए। राजा-रजबार, जमीन्दार, मास, जेठरैयति इत्यादि अनेको आम समाजक लोकक ऊपर शासन लदने छला जइसँ रंग-बिरंगक शासन पद्धति सेहो बनियेँ

गेल अछि।

अखनो समाजक बीच एकरूपताक अभाव अछिए। जहिना समाजक बीच जीवनक बेवहारमे अन्तर अछि तहिना जीवनमे सेहो अछिए। तेकर अनेको कारण अछि। अखन से सभ नहि, बस एतबे जे केना जाति, सम्प्रदाय समाजकेँ विभाजित केने अछि। एक जातिक बेवहार दोसर जातिसँ किछु भिन्नो अछि आ किछु मिलल्लो तँ अछिए, जे समाजमे दूरी बनौने अछि। तहिना सम्प्रदायक बीच सेहो अछि। एक सम्प्रदायिक रीति-रिवाज दोसरसँ भिन्न गढ़ल अछियो आ दिनानुदिन गढ़लो जाइते अछि। आजुक परिवेश, जैठम मनुक्खक निर्माणक मुख्य जगह छी, तैठाम एक-दोसरमे अन्तर अछिए। आजुक जे शिक्षण संस्थान अछि, ओकरो योगदान समाजकेँ विघटनक कारण अछिए। ओना, जखन विकास-प्रक्रिया आगू बढ़ैए, तइसँ मनुखक जीवनमे खुशहालीक सम्भावना बनैए, तखन वैचारिको आ आर्थिको विघटन हएब सोभाविक प्रक्रिया छीहे। मुदा तइमे आँखि मुनि कऽ, अन्धाधुन केलासँ नहि आँखि खोलि कऽ केलासँ अपन पूर्वजक देल विचारो आ जीवनोक रक्षा हेबे करत। जे जरूरियो अछिए। देखिते छी विचारक छलांग लोक ओतए तक मारि दइ छैथ जे धरतीपर जेतेक मनुख छी, ओ सभ एक जाति भेलौं, मनुख जाति आ सबहक एकरंग जीवन हेबा चाही। तँए दुनियाँक कोनो कोण किए ने हउ, ओ अपन मातृभूमि भेबे कएल।

..मुदा वएह अपन जन्मदाता–माता-पिता–केँ वृद्धावस्थाक सेवा बिसैर बीरान बनियेँ रहल अछि। यएह तँ छी बुइधिक करामात..! चेतनाथ बाजल-

“भाय मनन, मनुख ओहन उच्च कोटिक मननशील प्राकृतिक देन छैथ जे सामाजिक जीवनकेँ उच्च कोटिक जीवन बुझै छैथ।”

मननदेव बाजल-

“हँ, से बुझिते नहि छैथ, छथियो। तँए ने हुनकामे समाज-निर्माण करैक शक्ति सेहो छैन। मनुख अपन जीवनमे समृद्धताक मुख्य द्वार समाजेकेँ बुझै छैथ। तँए हुनकामे ईहो बल हएब जरूरी अछिए किने जे अपन समाज

निरमित करैत अपन जीवन सेहो आइक अनुकूल निरैम जाए।"

मननदेवक विचार सुनि चेतनाथमे जेना चेतना जगल तहिना सजग होइत बाजल-

"भाय मनन, अखन तक कहाँ केतौ देखै छी जे कोनो गाम एहेन भेल जइमे सभ साहित्यकारे भेला अछि आकि वैज्ञानिके। तँए ई कहब जे ओइ समाजकेँ साहित्यक खगता नै छैन, सेहो बात तँ नहियेँ अछि। जहिना कोनो-कोनो गाममे, कहियो-काल गोटेक साहित्यिक कार्यक्रम होइए। तहिना अपनो दुनू गोरे मिलि किए ने कार्यक्रम निमाहि सकै छी?"

❑❑❑

❑❑

❑ अन्तिम परीक्षा (2020), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 84-87

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाय गुम भऽ गेला। गुम ई भऽ गेला जे की रेहना चाचीकेँ यज्ञ-काजमे लियनु करा लऽ जा पाएब? की समाज एकरा पसिन करत? जे दुरकाल समय बनल जा रहल अछि ओ भरियाएल जरूर अछि। मुदा जात तर पड़ल ओंगरी जँ निकालि नै लेब, तँ जातक काज केना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या तँ पीसिया हएत वा ओंगरी पिसाएत। मुदा भविस...।

मिथिलाक जे गौरव-गाथा अछि- दुआरपर आएल बाट-बटोही, भूखल-दूखल जँ खाइबेर पहुँचैत वा जलखैए बेर पहुँचैत आकि जखन जे समय रहल, पहिने हुनकर आग्रह करिऐन। ओना, खाधुरोक अपन राज-पाट छइ। जँ से नै छै तँ ओइठामक भोजैतक कोटा हजार रसगुल्ला आ बीस किलो माछक ओरियानक पछाइत किए नतहारी ताकब छइ। ओहन नतहारी जकाँ तँ नहि मुदा हिस्सामे बखरा तँ लोक निमाहिते अछि।

कोनो गाम अबैसँ पहिने रेहना चाची बिसैर जाइ छेली जे भरि दिन खाएब की आ रहब केतए। परिवार परिवारक बीच खाली कारेबारक सम्बन्ध नहि। घन्टा-घन्टा बैस रेहना चाची अपनो जिनगी आ परिवारो-समाजोक जिनगीक खिस्सा-पिहानी सुनैत अपन कारोबार करैत आएल छेली। साइकिलपर सँ उतैर किशुन भाय, स्टेण्डपर साइकिल ठाढ़ कऽ बजला-

“चाची गोड़ लगै छी?”

किशुन भाइक गोड़ लागब रेहना चाची सुनबे ने केली जे असीरवाद दितथिन, ले बलैया उनटा कऽ पुछि देलखिन-

“बौआ, माए नीके छह किने। जहियासँ गाम छूटल, कारोबार गेल तहियासँ चीन्हो-पहचीन गेल! के केतए जीबैए आ केतए मरि गेल...! मरि गेल मनक सभ सखी-बहिनपा...!”

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाइक माथ चकरेलैन। जहिना एक-जनिया, दू-जनिया, बहु-जनिया ओछाइनो-बिछाइन चकराइत जाइए तहिना बुधिओ-बुधियारी आ चासो-बास तँ चकराइते अछि। तहिना किशुन भाइक मन चकरा गेलैन। चकरा ई गेलैन जे गाम छूटल! गाम किए छूटल? गुम-सुम भेल किशुन भाय रेहना चाचीक झूर-झूर भेल चेहरा देखए लगला, जेना खेसारी-बदामक बीड़िया झूर-झूर भेलो पछाइत गरदी तरकारीक रूप पकैड़ भोज्य भोग पबैक सुख पबैत अपन जिनगी चैनसँ गमबए चाहैए, तहिना चाचीक मन सेहो पुलकैत रहैन। मुदा बिनु बुझनौं तँ नइने लोक बुझैत। कोनो बात सुनब आ बुझब, दू भेल। बुझैले बेसी सुनए पड़ै छै, सुनै तँ लोक एकहरफियो अछि। भाय पुछलखिन-

“चाची, गाम केना छूटल?”

किशुन भाइक प्रश्न सुनि रेहना चाचीकेँ एको मिसिया बिसबिसी नै लगलैन। जेना नीक जिनगी पाबि कियो नीक सिरासँ अपन जिनगीक बाट पबिते खुशी होइए तहिना भगिन-जमाए पाबि रेहना चाची खुशी छैथ। मुदा पेटमे पेटेले झगड़ा उठि गेलैन। झगड़ा ई उठलैन जे बीतल जिनगीमे जे घटल सत बात अछि ओ बाजल जा सकैए की नहि? ओना, आब ओइ बातक खगतो नहियेँ जकाँ अछि मुदा इतिहास तँ काल-खण्ड विहीन भइये जाएत?

रेहना चाचीक मन बेकाबू भऽ गेलैन! मुदा बिसवास देलकैन। बिसवास ई देलकैन जे अबैया दिन सुखैया तँ ऐछे, तखन किए ने अपन जिनगीक बात भाइयो-भातीजकेँ कहि दिऐ। आब कियो जिनगी लूटि लेत।

बजली- “बौआ, सात-आठ बर्खसँ गाम सभ छोड़लौं, ओना, खटनी छुटने देहो हर-हरा गेल, मुदा मन अखनो कहैए जे जानि कऽ रोगा गेलौं...। गामे-गामे तेना ने छीना-झपटी हुअ लगल, जे आन गामक लोकक कारेबारेटा नहि, चलैक रस्तो कटि-खोंटि गेल।”

एक संग किशुन भाइक मनमे रंग-बिरंगक अनेको प्रश्न उठि गेलैन, मुदा जहिना मुड़ी आ टाँग कटल लहासकेँ परखब कठिन भऽ जाइए तहिना चाचीक बात सुनि भेलैन। छीना-झपटी आकि झपटी-झपटा, वएह ने जे

जहिना प्रखर वक्ता लोकैन अपन मेहिका चाउरमे मोटका चाउर फेँटि काज ससारि लइ छैथ आकि मोटके चाउरमे मेहिका फेँटि दइ छथिन..? मुदा अनेरे मन वौअबै छी। मनकेँ थीर करैत बजला-

“चाची, जहिया जे भेल, से भेल। आब नीके छी किने?”

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाची विस्मित भऽ गेली। ‘विस्मित’ ई भऽ गेली जे यएह देह छी, अपन गाम लगा पाँच गामक लोकसँ हबो-गब करै छेलौं आ खेबो-पीबो करै छेलौं, कमाइयो-खटा लइ छेलौं, से तँ छिनाइए गेल! ओना, आब अपन उमेरो ने रहल जे माथपर पथिया लऽ चारि गाम घुमि कारोबार करब। रेहना चाची बजली-

“अपन बेटा-पोता अल्ला हेरि लेलैन, मुदा फेर वएह ने देबो केलैन।”

रेहना चाचीक उत्तर किशुन भाय नीक जकाँ नै बुझि सकला। तेकर कारण भेलैन जे लगले सुनला जे ‘बेटा-पोता हेरि लेलैन’ आ लगले सुनला जे ‘प्रपौत्र बच्चा छी’ आ भगिन-जमाइक परिवारमे रहै छी...।

मनकेँ सोझरबैत किशुन भाय बजला-

“चाची, हमरा ओहिना मोन अछि, जखन माइयो आ अहूँ एकेठीन बैस खेबो करी आ नीक-अधला गपो करी।”

किशुन भाइक बात सुनि रेहना चाचीक अपन सत्तैर बर्खक जिनगी बिजलोका जकाँ मनमे चमकलैन। करियाएल मेघ, बदरियाएल मौसम, सरदियाएल रातिमे जखन बिजलोका चमकै छै तखन ओ अपन इजोतक संग आवाज करैत कहै छै जे हम लाली इजोत छी नै कि पीड़ी। पीड़ी दूर-देशक होइ छै लाली लगक। प्रमाण असतक होइ छै आकि सतक? सत तँ अपने सत भऽ सौंसे फल फड़ जकाँ अछि।

रेहना चाचीक आगूमे ठाढ़ किशुन भाइकेँ ने ‘अक’ चलैन आ ने ‘बक’। दिन सेहो लुक-झुका गेल। सुरूज तँ डुमि गेल मुदा लाली ओहिना पसरल छल। किशुन भाय बजला-

“चाची, अखन तँ दिन निसचित नै भेल मुदा अखने कहि दइ छी जे अहाँकेँ

लिऔन करै छी।"

किशुन भाइक 'लिऔन' सुनि रेहना चाचीक मन ठहकलैन। मन ठहकलैन ई जे आब वएह जुग-जमाना रहल आकि ओइसँ नीको-अधला भेल?

नीक-अधलाक बीच रेहना चाची चपा गेली। जइसँ बोथिया गेली। बोथिया ई गेली जे की सम्बन्ध छल! कोरा-काँख तर केते दिन किशुनलालकेँ नेने छी, पाबैनमे पबनौट खुएलौं आ अपने केते खेलौं, तेकर कोन हिसाब। जिनगीए ओही भरोसे बीतल किने...।

आइ ओइ किशुनलालक बेटाक बिआह छी, की आब ओतए पहुँच पाइब सकै छी? केना पाबि सकै छी? जैठाम लोक अधला काज करै छल तैठाम गंगाजलसँ सिक्त कऽ नीक बनौल जाइ छल आ अखनो बनौल जाइए। मुदा ओहन तँ जगहे खिया गेल। मुदा जैठाम गंगेजल अधला बनि जाएत, तैठाम की उपाय...।

रेहना चाचीक मन ओझरा गेलैन। मुदा सौंझुका तारा जकाँ जेना मनमे भुक-दे उगलैन- जँ कहीं काजेक चर्च पाछू पड़ि जाएत आ अनेरूए गप साँझ पड़ा देत, तइसँ नीक जे काजक नाँगैर पकैड़ धार पार होइ। बजली- "बौआ, ढौओ-कौड़ी लेलहक हेन?"

ढौआ-कौड़ीक बात सुनि किशुन भाइक मन पुलकलैन। बजला-

"चाची, बिआहक अखन गपे-सप उठल हेन, ओ सभ गप पछुआएले अछि, जखन बिआहमे एबे करब तखन सभ गप बुझा देब।"

किशुन भाइक झाँपल-तोपल बात सुनि रेहनो चाचीक मनमे उठलैन, जेते अल्ला-मियाँ परिवार सभकेँ झाँपन-तोपन दैत रहथिन तेते नीक। भगवान सभकेँ नीक करथुन। बजली-

"किशुन बौआ, देखिते छह जे अथबल भेलौं। चलै-फिड़ै-जोकर नै रहलौं, मुदा पोताक बिआह देखैक मन तँ होइते अछि, से...।"

रेहना चाचीक बात सुनि किशुन भाय गुम भऽ गेला। गुम ई भऽ गेला जे की रेहना चाचीकेँ यज्ञ-काजमे लियनु करा लऽ जा पाएब? की समाज एकरा

पसिन करत? जे दुरकाल समय बनल जा रहल अछि ओ भरियाएल जरूर अछि। मुदा जात तर पड़ल ओंगरी जँ निकालि नै लेब, तँ जातक काज केना चलत। कोनो एकेटा ने हएत या तँ पीसिया हएत वा ओंगरी पिसाएत। मुदा भविस...।

❑❑❑

❑❑

❑ लजबिजी (2014), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 33-37

विपरीत हवामे देखए पड़ैत जे कोनो देशक लोक चरितवान
अछि तँ सरकारी महकमा चरितहीन आ केतौ सरकारी महकमा
चरितवान अछि तँ लोक चरितहीन। तँए कि ओहन नै अछि जैठाम
दुनू चरितहीनो अछि आ चरितवानो? अछि! जैठाम अछि तैठामक
लोक जिनगीक ऊँचाइ छुबि रहल अछि आ जैठाम नै छै, तैठाम
धरतीक इर्द-गिर्द कोल्हूक बरद जकाँ घुमि रहल अछि! उपाध्याय
आ आचार्यक भेद मेटा गेल अछि! देशक नदीकेँ जोड़ि खेतीक
पटौनीक सुविधा बनौल जाए, मुदा लेबड़ाक साए रूपैआ
जकाँ किछु ओइमे गेल, किछु तइमे गेल रूपैआ भेल
गोल आब एक्केबेर सभ कहियौ 'हरि बोल'।

गाममे दाही भेल। तेहेन दाही भेल जे गामक उपजावाड़ी तँ गेबे कएल जे बाधक घासो-पात सड़ि-गलि कऽ पचि गेल। अदहासँ बेसी गामक गाए-महींस आ बरद मरि गेल। ओना, सुपतलालोक मरल मुदा खुटापर सातटा माल रहने पाँचटा बँचल। अगिलग्गीक पछाइत, भुमकमक पछाइत, रौदी-दाहीक पछाइत जहिना पशुपतिनाथक दर्शन आ अपन बेपार दुनू संगे होइत तहिना बहरबैया खेतबला सभ एक्के-दुइए गाम पहुँचल। सुपतलालकेँ सुतरल। सुतरल ई जे ने स्थायी मनखप लेब आ ने उपजा देब। सालक मनखप लेलौं, समय खराप भऽ गेल, रौदी-दाही भेने अहाँक पूजी -खेत- तँ धोखैर कऽ समुद्रमे नै चलि गेल, मुदा हमर लगता तँ चलि गेल।

..विचारि कऽ सुपतलाल पाँच बीघा जमीन एकटा माशसँ लेलक। अपन खेत, अपना जुतिये उपजाएब जे मन मानत सएह उपजाएब, उपजला पछाइत अनुमानित कण निर्धारित हएत, सबहक अपन-अपन नजैर रहत।

पाँचो बीघा गोरहा खेतमे कमो पानि भेने गामक चारू भागक पानि बोहि कऽ चलि अबैत, जइसँ बाधक जमीनसँ बेसी सुविधा भऽ जाइत। सुपतलालक

भाग जागल। मनखप बटाइसँ पहिने सुपतलालकेँ अपन कीनल पाँचे कट्ठा जमीन मुदा ओ पाँचो कट्ठाकेँ बरह-मसिया खेती-जोकर बनौने। बरह-मसिया ई जे तीनू मौसमक तीन फसल उपजैत। ओना, हरि अनन्त हरि कथा जकाँ तर्को-वितर्कक अनन्त उत्तर छइ। ईहो तँ भऽ सकैए जे बरह-मसिया गाछीए लगौल जाए। मुदा प्रश्न तँ ईहो उठैए जे बरह-मसिया ओकरा तँ नै कहबै जे सालमे एकबेर उपजा देत। मुदा तेकरा मानब उचित हएत? उचित तँ यएह ने जे बारहो मास ओइमे श्रम लगौल जाए आ बारहो मास उपज आबए। जँ से नै औत तँ खाली समयमे, जइ समय उत्पादन नै हएत, उपजौनिहार जीवित केना रहत? तेकरो तँ उपयक जरूरत ऐछे। खाएर जे हौउ, सुपतलाल अपन पाँचो कट्ठा जमीनकेँ धरोहर बुझि उपजाबऽ लगल। मध्यम किसिमक जमीन। पाँचो कट्ठामे तरकारी उपजाबऽ लगल। एतेक उपजा होइ जे अप्पन परिवारक भोजनक अदहाक संग नगदो-नारायण भऽ जाइ।

एक दिन दुनू भाँइ, सुपतलाल-कुपतलाल, घरक काज सम्हारि गाम घुमैक विचार केलक। तेहेन रौदियाह समय जे दस बजेक पछाइत बाधमे लू चलए लगैत। ओ गामो-घर दिस एबे करैत। गाछ सबहक पत्ता झड़ैक-झड़ैक अधसुखू भऽ गेल। सौंसे बाधमे केतौ हरियरीक दरस नहि। टोलसँ निकैलते दुनू भाँइ गामक बाध-बोन देखि सिहैर गेल। आगू बढ़ैक साहस नै भेलइ।

कुपतलाल सुपतलालकेँ कहलक– “भैया, गाम बीरान भऽ गेल। जइ गामक माटि-पानि मरि जाएत तइ गामक गाछ-बिरीछ आकि जीवे-जन्तु केना ठाढ़ रहत?”

कुपतलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल बाँहि पकैड़ बाजल–

“बौआ, से केना बुझै छहक?”

सुपतलालक प्रश्नक उत्तर दइले जेना कुपतलालक मन तर-ऊपर करइ, तहिना जेठ भाइक पुछब सुनि कुपतलाल बाजल–

“भैया, जखन खेतमे अन्न आकि आने कोनो उपजा नै हएत तखन लोक केना जीवित रहत? बिना कोयला-पानीसँ तँ लोहा चलबे ने करैए आ मनुख तँ सहजे मनुख छी। लाखो रंगक परसाद पबैबला!”

कुपतलालक ओजाएल जिज्ञासा देखि सुपतलाल बाजल–

“बौआ, अपने दुनू भाँइ छी आ दू दियादिनी आँगनमे छैथ। जहिना चारू गोरेकेँ अपन-अपन जिनगी आ जिनगीक काज अछि तहिना ने सबहक छइ। एककेँ नष्ट भेने तँ पर्यावरण बिगड़ए लगै छै आ जखन एक भागेक सभ किछ नष्ट भऽ जाएत तखन की हेतै?”

“हँ से तँ हेबे...।”

“अपना दुनू भाँइकेँ एतबे ने बुझैक काज छह। जँ अपन काजपर ठाढ़ हेबह तँ अदहा भक्त कमाल जकाँ हेबह, नै जँ बाँकियोहो अदहा पुरा लेबह तँ सोलहन्नी हेबह। जइसँ भेद-अभेद मेटा जाइ छइ।”

“हँ, से तँ ठीके भैया!”

“बौआ सुनह, जे बात हम बुझै छिऐ ओ तोरा कहला पछाइते ने तहूँ बुझबहक, तहिना ने तोरो बात आ घरो लोकक बात सुनला पछाइते ने अपनो बुझब?”

“हँ से तँ ठीके।”

“बौआ, आब तँ सहजे केते दिनसँ खेती करै छी, मुदा जहिया नहियोँ करैत रही तहियेसँ कोसी नहैर सुनै छी जे गामे-गाम बनत, डैमसँ बिजली बनतै आ ऐठामक किसानकेँ करखन्ना जकाँ चौबिसो घन्टा खेतीक काज चलतै।”

“भैया, ई बहुत भेल। छोड़ह ऐगला गप। कान भरैत-भरैत तेना भरि गेल जे काने बन्न भऽ गेल। दिन-राति जे काजे करत आ खा-पी कऽ सुतत नहि, तखन भगवानसँ एकाकार केना हएत?”

“धुर बुड़िबक! अहिना बुझै छीही, जहिना कारखानामे चौबिसो घन्टा काज छै तहिना खेतियोमे अछि। खेतेक उपजासँ चौबिसो घन्टा कारखाना चलैए। जँ पचपन खान चलबैए तँ पैंतालीस खेतो चलबैए।”

कुपतलाल जेना अकैछ गेल। अकछबो केना ने करैत। ने ओते ओकरा समय छै आ ने समेट कऽ रखैक कोठी...। बाजल– “भैया, जाबे अपन घड़ी-घण्टा बजा अपना मन्दिरमे पूजा नै करबह ताबे तक तेहेन-तेहेन घड़ी-घण्टाक

आवाज सुनैत रहबहक जे अनेरे कानमे तेते झड़ परतह जे काने झड़ा जेतह। काननी कामनी बनि अनेरे औनाए लगबह।”

कुपतलालकेँ अकछाइत देखि सुपतलालक मन खुशी भेल। खुशी ई भेल जे भने समटल मन आ समटल बुधि छै, नै तँ अनेरे भरि दिन तासपर बैस पाइकेँ कागत बना देत। जखने पाइ कागत भेल तखने अन-पानि, गाछ-बिरीछ, सोना-चानी सभटा पाइए बनि जाएत। तखन कोन खगता छै जे खेतसँ धान उपजौल जाए? ओ तँ रस्तो-पेरा भऽ सकै छइ।

गामक ओहन परिवार सुपतलाल-कुपतलालक बनि कऽ ठाढ़ भेल जे ओहन स्थान जकाँ अद्भुत बनि गेल, जैठाम हजारो मन्दिरक बीच गोटे कोनो अद्भुत रहैए! छेहा किसान परिवार। दुनू भाँइ सुपतलालो मानैत जे अनेरे गामक चक्कर-भक्करमे पड़ि नीककेँ अधला किए बनाएब। ने दरबार धरब आ ने दरबारीलाल बनब...।

मुदा तँए कि सुपतलाल गामकेँ छोड़ि देलक? नै छोड़लक, गामक किसान अखनो ठेकनगर किसान बुझि पूसा-ढोली, सबौरक किसान-मेलामे गामक किसानक संग जाइते अछि। सालो भरिक डायरी, खेती-वाड़ी करैक छोट-छोट पुस्तिका, छोट-छोट खेतीक ओजार-पाती अनिते अछि...।

ओना, गौंआँक संग सुपतलाल पुड़िते अछि मुदा गामक माटि, पोखैर, गामक जमीनक किस्म, जमीनक माटि इत्यादि नै भेने मन झुझुआइते रहै छइ। गामक छक्कर-बक्करकेँ ओ धु-बन्हू छागर जकाँ बुझैत अछि। चाहे देवालयमे चढ़ाउ, चाहे भोजनालयमे! दुनू ठाम लेल तैयार। दुनियाँक विपरीत हवामे देखए पड़ैत जे कोनो देशक लोक चरितवान अछि तँ सरकारी महकमा चरितहीन आ केतौ सरकारी महकमा चरितवान अछि तँ लोक चरितहीन। तँए कि ओहन नै अछि जैठाम दुनू चरितहीनो अछि आ चरितवानो? अछि! जैठाम अछि तैठामक लोक जिनगीक ऊँचाइ छुबि रहल अछि आ जैठाम नै छै, तैठाम धरतीक इर्द-गिर्द कोल्हूक बरद जकाँ घुमि रहल अछि! उपाध्याय आ आचार्यक भेद मेटा गेल अछि! देशक नदीकेँ जोड़ि खेतीक पटौनीक सुविधा बनौल जाए, मुदा लेबड़ाक साए रूपैआ जकाँ किछु ओइमे गेल,

किछु तइमे गेल रूपैआ भेल गोल आब एक्केबेर सभ कहियौ 'हरि बोल'।

बिहारक समस्या कहियो नै बुझल गेल जे खाली बिहारेक पनिचलाउ धारकेँ ढंगसँ पूबसँ पच्छिम धरि जोड़ि देल जाए आ समुचित देख-रेख होइ तँ की खेतीक समस्याक समाधानक एक कड़ी हएत की नहि?

समय बीतल। अधउमेरेमे सुपतलाल बीमार पड़ल। एक तँ गाम-घरक जिनगी तैपर इलाजोक नीक सुविधा नहि। आठे दिनक बीमारीक पछाइत सुपतलालक मन कनी-कनी धोखरए लगल। धोखरैत मनमे भेलै जे ऐ काँच माटिक देहक कोनो ठेकान अछि जे कखन फुटि जाएत। कुपतलालकेँ सोर पाड़ि बाजल– "बौआ, हमर कोनो ठेकान नै छह, परिवारक सभ एकठाम बैसह, अपन हिसाब तोरा सभकेँ दइए देबह। अनेरे मरैकाल माथपर एकटा बोझ चढ़ल रहत।"

अखन धरि कुपतलाल सुपतलालक ओहन अज्ञापालक रहल जे जे किछु सुपतलाल कहैत ओतबे बुझैत आ ओतबे करितो रहए। जेठ भाइक प्रति जेना पूर्ण समरपित। ओना, फल अधला कुपतलालकेँ भेल। भेल ई जे कुपतलालकेँ कहियो कोनो काजकेँ परखैक खगता नै भेल। जइसँ सभ काजक लूरि रहितो उजड़लहा-उपटलहा गामक इतिहास नै बनि सकल। केना बनैत? दुनियाँक इतिहास गढ़निहार व लिखनिहारक मने उचैट गेलैन जे हमरो गाम-घर अही दुनियाँमे अछि।

परिवारक सभ समांग एकठाम भेल। ओना, जइ डरे सुपतलाल भीन भेल सएह हिस्सामे आबि गेलइ। मुदा परिवार तँ परिवार छी जाधैर एक-दोसराक दुख-दर्द, नीक-अधला दोसर नै बुझि अपन बनौत ताधैर परिवारक गाड़ी केना ससरत...।

अबिते पत्नी बजली–

"सभ दिन ओछाइने पकड़ने रहब आकि उठबो करब?"

पत्नीक बात सुनि सुपतलाल किछु ने बाजल। जहिना रणभूमि जाइसँ पहिनहि सिपाही बाटेमे घेरा जाइए तहिना सुपतलालक मन घेरा गेलइ। जिनगीक संगी। जँ गाड़ीक एक पहिया टुटने वा जुता-चप्पलक एक संगी

विरहेने केतौ फेका जाइए, तहिना सुपतलालोक मनमे घेरा लगि गेल।

सुपतलालकेँ गुम-सुम देखि कुपतलाल बाजल–

“भैया, राजा-दैवक कोनो ठेकान नै छै, जेते दिन दुनू भाँइ संगे परिवारक गाड़ी जोतलह से जोतलह। जँ तूँ मरबह तँ हमरो मरले बुझियहऽ। लूरि ने हमरा देलह मुदा बुधि तँ तोहीं ने नेने जेबह, तखन खाली टीन ढनढ़नौने कथी हएत?”

सुपतोलालक आ कुपतोलालक बेटा बी.ए.क विद्यार्थी। तीन मासक पछाइत परीक्षा हेतै, स्नातक भऽ जिनगी शुरू करत। अपन आभार व्यक्त करैत सुपतलाल बेटो आ भातिजोक- सुगमलाल आ कुगमलाल- बीच बाजल–

“बाउ, अखन धरिक परिवारक गाड़ी खींचलौं। जँ बीमारीसँ छुट्टी भेटत तैयो नीक, जँ नै भेटत तैयो नीक। जे समय बीतल ओ अहाँ दुनूक बीच अनुकूलताक समय भेल। जे आगू अछि ओ प्रतिकूलताक भेल। अपनो मन कहैए जे स्नातक बना परिवारकेँ ठाढ़ करी, अपना जनैत करैत एलौं, एतेक तँ जरूर गारंटी देब जे जहियासँ परिवारक गाड़ी कन्हापर उठा घीचलौं, मनुख बनि जे आएल ओकरा मरए नै देलिऐ। मुदा दुनू भाँइकेँ देखि एते तँ मन खनहन ऐछे जे ऐगला गाड़ी खींचनिहार परिवारमे भइये गेल। केते परिवार गाममे अछि जे अहाँ सभ जकाँ कौलेजमे पढ़लक। मुदा अपन विचार, अपन काज अनकापर लादैक नै अछि, देखबैक अछि, कहैक अछि। बस एतबे कहब।”

सुगमलाल बाजल–

“बाबू, अहाँ विचारे की होय?”

सुगमलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल जिज्ञासाक नजैरसँ कुगमलाल दिस तकलक, ओहो तँ कौलेजेमे पढ़ैए। किछु तँ अपनो बात जोड़त मुदा अदौसँ अबैत परिवारक जेठ-छोटक विचारक संग विचार नै मिलेबाक चलैन रहल। अपन अलग प्रश्नक रूप मानल गेल। मुदा से नै बापेक बेटा कुगमलालक मनमे उठलै, दुनू भाँइ विचारि कऽ करब। तँए कोनो विकार मनमे नहि। सुपतलाल बाजल– “बौआ, समैयक संग चलैक अछि। बहुत आशासँ दुनू

भाँइ तोरे सभले खेत कीनलौं, सम्पैत अरजलौं। जँ एकरा छोड़ि चलि जेबह तँ अनका आड़ि-धुरमे चलि जेबह। बेसी अखन नै कहबह अखन तोरा अपन परीक्षाक तैयारी करैक छह। मुदा एते जरूर कहबह जे तोरे सभ दुआरे अपन खेत बनेलौं, नहि तँ ओही समयमे बँटैत ऐबतौं तँ जम्मे ने होइत। मुदा जे भेल, खेती जे साधनक अभावमे केलौं ओकरा पुरबैत गाइक जे पुरना खाँढ़ अछि ओकरा समायानुकूल बनबैत चलबह तँ किसानक खतियान बना किसानक देश कहेबह, नहि तँ सरकारी खजाना जकाँ तमादी हेतह। सुनि लएह, खेत ओहन विशाल गाछ पैदा करैक शक्ति रखैए जे जेते ओइमे खाद-पानि देल जाएत ओते विशालसँ विशालतम बनैत जाएत। तँए लक्ष्मण रेखाक बीच रहि जाधैर चलैत रहबह ताधैर लंकाक कोन बात जे लंकापतियो बुते किछु ने बिगाड़ल हएत।”

सुगमलाल–

“तखन?”

“तखन यएह जे समाजेक लत्ती लतरैत अमरलत्ती जकाँ दुनियाँमे लतैर जाइए, मुदा पहिने ओकर जड़ि बिटिया कऽ पकड़बऽ तखने ने?”

❑❑❑

❑❑

❑ अप्पन-बीरान (2014), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 70-77

“अपना की बुझि पड़ैए लक्ष्मण भाय जे हमहूँ हरिश्चन्द्रे जकाँ काशीक असमसान घाटक रखवारि करब। ओ त्रेते युग छल तँए हरिश्चन्द्रकेँ छजलैन जे अपन राज-पाट अपना सपना तरे दान कऽ देलखिन। अखुनका जकाँ जँ कलयुग रहैत तँ लोक गट्टा पकैड़ पुछबे करितैन जे राज-पाट जनताक छिऐ आकि अहाँक अप्पन छी। जखन अप्पन नइ छी तखन अहाँ दान केनिहार के? जँ राज-पाट नइ रहत तखन बेर-बिपैत, मौका-कुमौका, समय-कुसमयमे केकर के मददगार हएत।”

लक्ष्मण भाइक मुँहक रूखि देखि तरहत्थीपर राखल नोइस नाक लग नइ लऽ जाइत रही जे लक्ष्मण भाय खटकर्मा लोक छैथ, नाकमे नोइस लेब आ जँ कहीं हुनका बजैसँ पहिने छिक्का भऽ जाएत तँ मुँहफट लोक छथिए, लगले कहि देता जे केहेन बुड़िवाण अबण्ड अछि जेकरा ने दिनक आ ने समयेक होश-ठेकान अछि। बजैसँ पहिने छिक देलक। ..तँए नोइस नइ ली, ओमहर रामलाल कक्काक आँखि दिस देखी तँ बुझि पड़ए जे सौनक मेघ जकाँ कखन हरहरा कऽ बून छोड़ता तेकर ठीक नहि।

तैबीच लक्ष्मण भाइक मन सेहो जेना निच्चाँ मुहेँ खसलैन। जइसँ अपना थोड़ेक शान्ति सेहो भेल। अगुआ कऽ बजलौं- “भाय, चेहरा उदास बुझि पड़ैए?”

बिच्चेमे रामलाल काका टोन मारलैन- “उदासे चेहरा ने दुनियाँक उदासी देखि दुनियाँकेँ छोड़ि एक कात भऽ जाइ छैथ।”

धरमागती कहै छी, अपने रामलाल कक्काक विचार नीक जकाँ नइ बुझलौं, मुदा लक्ष्मण भाय सुनैसँ बेसी बुझि गेला। बजला- “काका, बिपैतमे पड़ि गेलौं हेन.!”

विपतिक नाओं सुनि अपनो मन विपतिया गेल। आँखि जेना नोराइक सुर-

सार करए लगल। मुदा रामलाल काका, अप्पन जेते अन्दाज छल तइसँ कम सकपकेला। तँए कहब जे सोल्होअना नहियेँ सकपकेला सेहो बात नहियेँ अछि। बजला-

“लक्ष्मण, एकटा तोहीं एहेन छह जे बिपैतमे पड़ल छह आ दुनियाँक सब निचेनसँ सुतल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। धरतीपर कियो एहेन भेटतह जे कहतह हम बिपैतमे नइ पड़ल छी। सबकेँ अपन-अपन जहिना बर अछि तहिना बिपैत सेहो अछिए।”

अपना नइ रहल गेल। ने रामलाल कक्काक इशाराक तीर बुझी आ ने लक्ष्मण भाइक। एते तँ बुझल अछिए जे जहिना लक्ष्मण भाय त्रेता युगक दशरथक बेटा लक्ष्मणसँ तीन गुणा बीस छैथ, माने त्रेतासँ द्वापर होइत कलयुगक, तहिना रामलाल काका सेहो रामे जकाँ केतौ परब्रह्म बनि जाइ जाइ छैथ, केतौ फागु-जोगीरा गाबए लगै छैथ तँ केतौ गाछ-बिरीछसँ सीताक समाद पुछै छथिन। ..लक्ष्मण भाय बजला-

“काका, चारि पहर भोरेमे नीन टुटि गेल, तखनेसँ मन कछमछाए लगल जे सभसँ पहिने रामलाल काकासँ भेँट कऽ सब बात कहबैन। मुदा बुझिते छिऐ..।”

इशारेमे लक्ष्मण भाय बजला आ इशारेमे रामलाल काका सेहो स्वीकृतिक भावमे मुड़ी डोला देलखिन, बीचमे अपने किछु बुझबे ने केलौं। मन नइ मानलक, बजलौं-

“लक्ष्मण भाय! कलयुग छिऐ, त्रेतायुग नइ छिऐ, तँए तत्सम शैली कम करू आ जनशैलीमे कहियौ जे की बिपैतमे पड़ल छी।”

रामलाल काकाकेँ सेहो सतरंजक गोटी जकाँ सह भेटलैन, बजला-

“बुझिते छिऐ, की बुझिते छिऐ से कहाँ बजलह?”

लक्ष्मण भायकेँ पछड़ैत देखि बजलौं-

“लक्ष्मण भाय, अपन गाम छी, अपन समाज छी, अपने सबकोइ छी, तखन मन किए थरथराइए?”

चाह पीलाक पछाइत जहिना थाकल मनक थाकैन कमैए तहिना लक्ष्मण भायकेँ हमर विचार पीलाक पछाइत भेलैन। बजला-

“काका! अधरतियामे सपना देखलौं, तखनेसँ मनमे उड़ी-बिड़ी लगि गेल जे रामलाल काकासँ विमर्श करब आवश्यक अछि। मुदा भोरमे जखनसँ उठलौं तखनसँ दू बजे दिन तक अपने दैनिक काज सम्हारैमे लागि गेल। तँए नइ आबि भेल।”

लक्ष्मण भाइक विचारसँ रामलाल काकाकेँ जेना तुष्टि भेटलैन तहिना बजला-

“यहए ने कैविलती छी जे प्रतिदिन अपन जीवनक बाट-घाटकेँ पहिने सम्हारि ली, पछातिक काज पछाइत हएत।”

लक्ष्मण भाइक मन मानि गेलैन जे अधिक बिलम्म नहि भेलौं अछि। बजला-

“काका, हरिश्चन्द्र जकाँ अपने सपनेलौं जे अपन सब राज-पाट दान दऽ देलिऐ। सपना देखि जखन नीन टुटल तखनसँ मनमे उड़ी-बिड़ी लगि गेल जे पहिने काकासँ विचार करब तखने प्रायश्चित कटेलाक पछातिक फल पेलहा जकाँ मन हल्लुक हएत।”

लगेमे अपनो बैसल रहबे करी, लक्ष्मण भाइक विचार अनसोहाँत लगल। बजलौं-

“लक्ष्मण भाय, हरिश्चन्द्र राजा छला। हुनका राज-पाट छेलैन, तेकर सिहिन्ता अहूँ करै छी। अहाँक कोन राज-पाट चलि गेल जे एना तवाह भेल छी?”

ओना, रामलाल कक्काक मनमे ई जरूर उठलैन जे गामो-समाजमे देखिते छी जे एहेन धारणा लोकक बीच बनले अछि जे जँ सपनोमे किछु दान कऽ देलिऐ तँ ओकर फल स्वर्गमे भेटबे करत। मुदा मने-मन विचारकेँ मनेमे घुरियबैत-फिरियबैत रहि गेला, बजला किछु ने। अपने नइ रहल गेल बजलौं-

“अपना की बुझि पड़ैए लक्ष्मण भाय जे हमहूँ हरिश्चन्द्रे जकाँ काशीक असमसान घाटक रखवारि करब। ओ त्रेते युग छल तँए हरिश्चन्द्रकेँ छजलैन जे अपन राज-पाट अपना सपना तरे दान कऽ देलखिन। अखुनका जकाँ जँ कलयुग रहैत तँ लोक गट्टा पकैड़ पुछबे करितैन जे राज-पाट जनताक छिऐ आकि अहाँक अप्पन छी। जखन अप्पन नइ छी तखन अहाँ दान केनिहार

के? जँ राज-पाट नइ रहत तखन बेर-बिपैत, मौका-कुमौका, समय-कुसमयमे केकर के मददगार हएत।”

लक्ष्मण भाइक मन जेना झुकलैन। जे भाव रामलाल काका बुझि कऽ अपन भाव शक्तिकेँ अध्यात्म शक्तिसँ जोड़ि लेलैन आ बजला-

“लक्ष्मण, अखन दुनियाँमे केते लोक अछि?”

ओना, रामलाल कक्काक प्रश्न लक्ष्मण भाय निमिते छेलैन मुदा अपने दू साल पहिलुका बुझल छल जे सात अरब लोक दुनियाँमे अछि, बीचमे कोरोना आ यूक्रेनक लड़ाइमे केतेक मरल आ केतेक मरि रहल अछि, से ठीकसँ नइ बुझल रहने अपन विचारकेँ अपना मनेमे रखि औंटए-पौड़ए लगलौं जे देखाचाही लक्ष्मण भाय की बजै छैथ।

..लक्ष्मण भाय बजला-

“काका, अपने दुनियाँ-दारीसँ कोनो मतलब रखने छी जे अनेरे अनकर हिसाब जोड़ैमे भरि दिन लागल रहब। अपने परिवारक तेतेक हिसाब पछरल अछि जे तेकरे जोड़ियाएब ने पार लगैए।”

लक्ष्मण भाइक ऊपर जेते पीत लहरल छल से जेना एकाएक मोमवत बनि गेल। मोमवत बनैक कारण भेल जे अखन तकक जे रूप लक्ष्मण भाइक छेलैन, जैपर तामस चढ़ल छल, से जखन अपना मुहेँ अपन परिवारक हिसाबकेँ अथाह कबूल कऽ लेलैन तखने ने हृदयक इमान चमैक उठलैन जइसँ मन मोसिया गेल तँए मोमवत बनि गेल। बजलौं-

“काका! अपने ने समाजक श्रृष्ठ भेलिऐ, लक्ष्मण भाय तँ संगिये छैथ। अपने जे विचार देबइ सएह ने हमसब शिरोधार्य करब।”

अपन सम्मान सुनि रामलाल काका बजला- “दुनू गोरेकेँ सम्मिलिते स्वरे कहै छिअ। दुनियाँमे जेते लोक अछि, तेते सपनो अछि। जँ से नइ अछि तँ तोहीं कहह, एकक सपना दोसरसँ मेल किए ने खाइए?”

जहिना रामलाल काका बजला तहिना अपना मनकेँ अपन जिनगी दिस दौड़ेलौं तँ बुझि पड़ल जे दोसराक कोन बात जे अपने जे सभ दिन देखै छी,

माने सपना देखै छी, सेहो एकरंग दोहरा कऽ तँ नहि देखै छी, तखन दोसर तँ सहजे दोसर भेला। बजलौं-

“की लक्ष्मण भाय, सब दिन गामेमे रहै छी आ एतबो ने बुझल अछि जे गामक लोकक मूल मंत्र छी, जे ‘सपना देखि रही मन मोइ, अप्पन देखी अनका होइ’।”

अपन विचार सठलो ने छल कि बिच्चेमे रामलाल काका भभाकऽ हँसला। हुनकर हँसी देखि अपनो मुँहसँ फुटिकऽ हँसी निकलए लगल।

❑❑❑

❑❑

❑ **जीवन दान (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 72-78**

मिथिलाक भूमि जीवनक विचारक संग
जीवन-निरमानी भूमि सेहो छीहे। बुझल बात
अछिए जे जेते मन बढ़त तेते ओझरी
जिनगीमे सेहो बढ़बे करत।

अपना गतिये जहिना प्रकृति चलैए तहिना रूपौली गामो चलैए आ रूपौली गामक रूपचन काका सेहो चलिते छैथ। बाढ़िक इलाका छीहे। कहब जे धारे-धार बाढ़ि अबैए आ चलि जाइए से नहि, मिथिलांचलकेँ पहियाकऽ उत्तरसँ शुरू करैए आ दच्छिनमे गंगामे जा ठेका दइए। वएह गंगा ने जीवनक वैतरणी सेहो पार करै छैथ। बुझले बात अछि जे सतासीक बाढ़िमे गंगासँ उत्तर झंझारपुर तकक पानिक एक लेभेल भऽ गेल रहइ। माने एकरंग जलो-दीप छल। ई तँ भेल बाढ़िक गति, मुदा तैसंग झाँट-बिहाड़ि सेहो अछिए। मौसमक हिसाबसँ भरि गरमी माने मार्चसँ नवम्बर तक दू रूपमे झाँट-बिहाड़ि अबैए। सुखारक समयमे सेहो आ बरसातक समयमे सेहो अबिते अछि। अप्पन रूपक ठेकान एकरो ने अछि, माने केते विराट रूपमे औत आकि साधारण रूपमे।

तँए कहब जे मैथिल ऐ सभसँ डेरा जेता से बात नहि अछि। मिथिला-भूमि अखनो वएह भूमि अछि जे परिवार नियोजन सन सरकारक योजनाकेँ कोनो मोजरे ने दइए, आ अप्पन जनसंख्याक बढ़वारिकेँ बे-लगाम घोड़ा जकाँ छोड़ि देने अछि। एकर माने ई नइ बुझब जे मिथिलांचल मनुक्खेक उपजा टाक भूमि छी। मिथिलाक भूमि जीवनक विचारक संग जीवन-निर्माणक भूमि सेहो छीहे। बुझल बात अछिए जे जेते मन बढ़त तेते ओझरी जिनगीमे सेहो बढ़बे करत।

खाएर जे अछि, अपना ऐठाम झाँट-बिहाड़ि मात्र समुद्रेटा सँ नहि, धरतीसँ सेहो पैदा लइए। चैत-बैशाखक सूर्जक तापसँ तपित भऽ धरती बिर्ड़ो-बिहाड़िक सृजन सेहो करैए। जेकर फलाफल मिथिलांचलकेँ ई भेटैत रहल जे

गामक-गाम चैत-बैशाख आ जेठक आगिमे स्वाहा भऽ जाइ छल आ लोक गाछ-बिरीछक संग-रौद-तापमे मासो-मास जीवन-यापन करै छला। तहिना वरसातक समयमे सेहो झाँट-बिहाड़िक प्रकोप होइए, तइले सभकेँ बुझले अछि जे हथियाक झाँट केहेन होइत आबि रहल अछि, गाम-गामक घर-दुआर खसि पड़ै छल आ लोक झाँट-बिहाड़िमे खुलल असमानक बीच मासो-मास दिन गुदस करै छला, अखनो करै छैथ। यएह छी मिथिलाक साधना भूमि जे दुनियाँमे केतौ ने अछि। ने मिथिलांचल जकाँ उपजाऊ भूमि अछि आ ने मौसम। अन्नसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक जे बढ़वारि मिथिलांचलमे अछि ओ आनठाम नइ अछि। अपना ऐठाम जहिना अन्नक खेती बारहो मास होइए, तहिना तीमन-तरकारी, फल-फलहरीक सेहो अछि। बरहमसिया जहिना फल अछि तहिना फूल सेहो अछिए।

प्रकृति जहिना रंग-रंगक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ चर-अचर निरमबैए तहिना मनुक्ख बुधिसँ लऽ कऽ बेवहार सेहो निरमैबते अछि। अही प्रक्रियाक बीच रूपौली गामक रूपचन काका छैथ। कौलेज छोड़ला पछाइत रूपचन कक्काक मन विचारसँ एते भरि गेलैन जे गामक बीच एकलव्य जकाँ अपन साधना भूमि निर्धारित केलैन। ओना, कौलेज तक रूपचन कक्काक जीवनमे कोनो नबपन नइ आएल छेलैन मुदा कौलेज-जीवनक पछाइत अपना जीवनकेँ तीन दिशामे विभाजित केलैन। पहिल अपन बेकतीगत जीवन केना पारिवारिक बनत आ पारिवारिक जीवन केना सामाजिक जीवन बनि पथ-प्रदर्शन करत।

मध्यम श्रेणीक किसान परिवारमे रूपचन कक्काक जन्म भेल छैन। शुरूमे पिताक बेवहार माने रूपचन कक्काक पिताक, ओते नीक नहि छेलैन, जेतेकक जरूरत परिवार-समाजमे अछि। मुदा बेटाकेँ माने रूपचन काकाकेँ, जखन कौलेजमे नाम लिखा देलखिन तखन विचारक संग बेवहारोमे बदलाव अनलैन। बदलाव अनैक परिस्थिति ई बनलैन जे बेटाकेँ घरसँ बाहर पढ़ैले पठाएब, एक समाजसँ दोसर समाजमे जाएत, केना मेल-मिलानसँ रहत इत्यादि। ओना, तैबीच जे संघर्ष रूपचन काकाकेँ भेलैन ओ नीक जकाँ

एकपीढ़ीए-लोक बुझलकैन। जेना, मध्यवर्गीय किसान परिवारमे कौलेजक शिक्षा केतेक भारी छल, ओ पछिले पीढ़ीक लोक ने देखि-बुझिकऽ वा भोगनिहारे ने नीक जकाँ जानि रहला अछि।

❑❑❑

❑❑

❑ अप्पन साती (2022), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 39-41

जेकरा अपना सभ क्रीम ब्रेन कहै छिऐ, ओ छी वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर इत्यादि। ओ सभ आन-आन देश जा अपन बुधिकेँ पाइबलाक हाथे बेच लइ छैथ। भलेँ किछु अधिक पाइ कमा लैत हेता मुदा ओ ओइ धनिककेँ आरो धन बढ़बै छैथ जे नव-नव मशीन, नव-नव हथियारक अनुसन्धान कऽ कऽ पछुएलहा देशपर आक्रमण कऽ वा बेपारिक माल बेच आरो पछुअबैए।

"महेन्द्र भाय, अहाँ तँ डॉक्टर छी। पढ़ल-लिखल लोकक बीच सदिखन रहबो करै छी। अहाँ किए एहेन बात कहि रहल छी? हम तँ जाबे मास्टरी केलौं ताबे धिया-पुताकेँ पढ़ेलौं आ जखन नोकरी छोड़ि गाममे रहै छी तखन जेहेन समाजमे रहै छी से देखबे करै छी।"

महेन्द्र- "भाय, अहाँ जे बात कहलौं ओ तँ आँखिक सोझमे जरूर अछि मुदा अहाँमे मनुख चिन्हैक आ ओकर चलैक रस्ताक लूरि जरूर अछि। अहाँ अपनाकेँ छिपा रहल छी।"

महेन्द्रक बात सुनि रमाकान्तकेँ मनमे उठलैन- जे आदमी घरसँ हजारो कोस दूर हटि कमा कऽ एते बनेलक ओ अपनाकेँ एते कमजोर किए बुझि रहल अछि? मुदा दुनू संगीक बीच नै आबि रमाकान्त गुम्मे रहला। बैसले-बैसल एक नजैर महेन्द्रकेँ देखैथ आ एक नजैर सुबुधकेँ।

अपनाकेँ छिपाएब सुनि सुबुध बजला- "महेन्द्र भाय, जइ प्रश्नक बीच अहाँ ओझरा रहल छी ओ प्रश्न ओतेक ओझराएल नइ अछि। मुदा असानो नइ अछि। सिरिफ आँखिमे ज्योति आनि देखि-देखि कऽ चलैक अछि।"

सुबुधक उट-पटाँगों बातसँ महेन्द्रकेँ दुख नइ होइ छेलैन। हल्लुको बातमे ओ गम्भीर रहस्यक अनुमान करए लगला। भलेँ ओ गम्भीर नहि, हल्लुके किएक ने होइ।

महेन्द्रक गम्भीर मुद्रा देखि सुबुधकेँ बुझि पड़लैन जे आब ओ गम्भीर बात बुझैक चेष्टामे उताहुल भऽ रहल छैथ तँए जिनगीक गम्भीर बातकेँ खोलि देब उचित होएत। बजला-

“महेन्द्र भाय, अपना गाममे सभसँ अगुआएल परिवार अहाँक अछि। चाहे धन-सम्पैतक हुअए वा पढ़ाइ-लिखाइमे। मुदा कनी गौर करि कऽ देखियौ जे एतेक धन-सम्पैतक उपरान्तो धनेक पाछू घरसँ हजारो कोस हटि कऽ रहै छी। अहीं कहू जे केते धन भेलापर मनमे संतोख होएत। मुदा ऐ प्रश्नक दोसरो पक्ष अछि, ओ अछि, ‘विश्व-बन्धुत्व’क विचार। अपनो ऐठामक महान-महान चिन्तक ऐ विचारकेँ सिरिफ मानबे नै केलैन बल्कि बनबैक प्रयासो केलैन। ओना, सैद्धान्तिक रूपमे विश्व-बन्धुत्वक विचार महान अछि मुदा जेते महान अछि ओइसँ कनियोँ कम बेवहारिक बनबैमे असान नइ अछि। लोक गामक वा आन गामक देवस्थानमे दीप जरबैसँ अर्थात् साँझ दइसँ पहिने अपना घरक गोसाँइ-आगूमे दीप जरबैए, जे उचिते नहि गम्भीर विचारक दिग्दर्शन सेहो छी। तहिना सभकेँ अपना लगसँ जिनगीक लीला शुरू करक चाहिऐ। अपनासँ आगू बढ़ि समाज, समाजसँ आगू बढ़ि इलाका, इलाकासँ आगू बढ़ि देश-दुनियाँ दिस बढ़ैक चाहिऐ। जँ से नै कऽ कियो परिवार-समाज छोड़ि आगू बढ़ि करैए तखन केतौ-ने-केतौ गड़बड़ जरूर हेतइ। जहिना दुनियाँमे समस्याग्रस्त मनुख असंख्य अछि तहिना तँ ओइ समस्यासँ मुकबलो करैबला मनुख असंख्य छैथ। एक्के आदमीक केलासँ तँ दुनियाँक समस्या नै मेटा सकत। तँए, जे जेतए जन्म नेने छैथ ओ ओतइ इमानदारी आ मेहनतसँ कर्ममे लगि जाइथ।”

सुबुधक प्रश्नकेँ स्वीकार करैत महेन्द्र बजला- “हँ! ई दायित्व तँ मनुखमात्रक छी।”

सुबुध- “जखन ई दायित्व सभ मनुखक छी तखन अपने गाममे देखियौ- ऐ सालसँ, जखन सभकेँ खेत भेलै, थोड़-बहुत खुशहाली गाममे आएल। मुदा ऐसँ पहिने तँ देखबे करै छेलिऐ जे ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छेलै, ने भरि देह वस्त्र आ ने रहैले सुरक्षित घर छेलइ। ओना, अखनो नै छै आ ने रोग-बियाधिसँ बँचैक सुरक्षित उपाय। बाजू, छेलै की नै छेलइ?”

धीमी स्वरमे डॉक्टर महेन्द्र बजला- “हँ से तँ ठीके।”

“आब अहीं कहू जे हमर-अहाँक जन्म तँ अही समाजमे भेल अछि। की हम ओते कमजोर छी जे गाम छोड़ि पड़ा जाइ, पड़ाइक मतलब जेतए पेट भरत ओतए जाएब। जँ कियो पड़ाइए तँ ओकरा कायर-कामचोर छोड़ि की कहबै? मुदा तैयो लोक जाइ किए अछि? एकरो कारण छइ। एकर कारण छै अधिक पाइ कमाएब वा कम मेहनतसँ जिनगी जीब। मुदा कम मेहनत आ असानीसँ जिनगी जीनाइ ताधैर सम्भव नइ अछि, जाधैर मेहनतसँ देशकेँ समृद्धिशाली नहि बना लेब। अगर जँ किछु गोरेकेँ समृद्धशाली भेने देशकेँ समृद्धशाली बुझब तँ ओ बुझनाइ नेने-नेने गुलामीक जीनजीरमे बान्हि देत। कोनो देश गुलाम नै होइए, गुलाम होइए ओइ देशक मनुख आ गुलाम होइ छै ओकर जिनगीक क्रिया। पाइबला सबहक जादू समाजमे ओइ रूपे चलि रहल अछि जे जहिना हम-अहाँ पोखैरमे कनी बोर दऽ बनसी पाथि दइ छिऐ आ नमहर-नमहर माछ खेनाइक लोभे फँसि जाइए तहिना मनुखोक बीच चलि रहल अछि। जेकरा नजैर गड़ा कऽ देखए पड़त।”

सुबुधक विचारकेँ महेन्द्र मुड़ी डोला मानि लेलैन। मुदा मुड़ी डोलौला पछाइतो मनमे किछु शंका रहबे करैन। जे मुँहक हाव-भावसँ सुबुध बुझि गेलखिन। पुनः अपन विचारकेँ आगू बढ़बैत सुबुध बजला- “अपना ऐठामक दशा देखियौ। जेकरा अपना सभ क्रीम ब्रेन कहै छिऐ, ओ छी वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर इत्यादि। ओ सभ आन-आन देश जा अपन बुधिकेँ पाइबलाक हाथे बेच लइ छैथ। भलेँ किछु अधिक पाइ कमा लैत हेता मुदा ओ ओइ धनिककेँ आरो धन बढ़बै छैथ जे नव-नव मशीन, नव-नव हथियारक अनुसन्धान कऽ कऽ पछुएलहा देशपर आक्रमण कऽ वा बेपारिक माल बेच आरो पछुअबैए। एकटा सवाल आरो मनमे अबैत होएत। ओ ई जे अपना देशमे ओतेक साधन नइ अछि जे ओ अपन बुधिक सदुपयोग कऽ सकता। तँए अपन बुधिक सदुपयोग करैले आन देश जाइ छैथ। मुदा हमरा बुझने ऐ तर्कमे कोनो दम्म नइ अछि। आइ धरिक जे दुनियाँक इतिहास रहल ओ यएह रहल जे सम्पन्न देश सदिखन कमजोर देशकेँ माने पछुआएल देशकेँ लूटैत रहलै। चाहे लड़ाइक माध्यमसँ होइ वा बेपारक माध्यमसँ। जइसँ जेहो सम्पैत-साधन ओइ देशकेँ रहत, ओहो लूटा जाइए। जखन ओ लूटा जाएत तखन आगू-मुहेँ केना ससरत?”

माथ कुड़ियबैत महेन्द्र बजला- "तखन की करक चाही?"

सुबुध- "आँखि उठा कऽ देखियौ जे दुनियाँमे कियो बिना अ-आ पढ़ने विद्वान बनि सकल। वा बनि सकै छैथ? जँ से नहि, तखन पछुआएल देश वा लोक केना बिना कठिन मेहनत केने आगू बढ़ि सकैए? ..तँए पछुआएल देशक लोककेँ ऐ बातकेँ बुझए पड़तैन। जँ से नइ बुझि अगुएलहाक अनुकरण करता तँ पुनः गुलामीक बाटपर चढ़ि जेता। केते लाजिमी बात छी जे हम अपने बनौल हथियारसँ अपने घाइल होइ। आब दोसर दिस चलू... ।"

डॉक्टर महेन्द्रक चेहरा दिस देखैत पुन: सुबुध बाजए लगला- "अपना ऐठाम जे पारिवारिक ढाँचा अदौसँ रहल ओ दुनियाँमे सभसँ नीक रहल अछि। आइक चिन्तनमे दुनियाँ परिवारवाद दिस बढ़ल अछि। जे हमरा सबहक संयुक्त परिवारक धरोहर रूपमे अछि। मनुखक जिनगी केतेटा होइ छै, ऐपर नजैर दियौ। तीन अवस्था तँ सबहक होइ छइ। बच्चा, जुआनी आ बुढ़ाड़ीक। ऐमे दू अवस्था बच्चा आ बुढ़ाड़ीमे सभकेँ दोसराक मदैतक जरूरत पड़ै छइ। जे एकाकी परिवारमे नइ भऽ पाबि रहल अछि। आइक जे एकाकी परिवार बनि गेल अछि, ओ कुम्हारक घराड़ी जकाँ भऽ गेल अछि। जहिना कुम्हारक घराड़ी बेसी दिन धरि असथिर नै रहैत तहिना भऽ रहल अछि। बाप-माए केतौ, बेटा-पुतोहु केतौ आ धिया-पुता केतौ रहए लगल अछि। मानवीय सिनेह नष्ट भऽ रहल अछि। सभ जनै छी जे काँच बरतन जकाँ मनुख होइए। कखन की ऐ शरीरमे भऽ जाएत तेकर कोनो गारंटी नहि। स्वस्थ अवस्थामे तँ मनुख केतौ रहि जीब सकैए मुदा अस्वस्थक अवस्थामे तँ से नइ भऽ सकैत अछि। तखन केहेन कष्टकर जिनगी मनुखक सामने उपस्थित भऽ जाइ छइ। तोहूपर तँ नजैर दिअ पड़त।"

सुबुधक विचार महेन्द्रकेँ झकझोड़ि देलकैन। देहमे कम्पन आबि गेलैन। बोली थरथराए लगलैन। कनी काल धरि असथिर भऽ मनकेँ थीर केलैन। मन थीर होइते महेन्द्र बजला- "सुबुध भाय, भलेँ हाइ स्कूल धरि संगे-संग पढ़लौं मुदा जिनगीकेँ जइ गहराइसँ अहाँ चिन्हलौं ओ हम नै चीन्हि सकलौं। सच पुछी तँ आइ धरि अहाँकेँ साधारण हाइ स्कूलक शिक्षक मात्र बुझै छेलौं मुदा ओ भ्रम छल। संगी रहितो अहाँ गुरु छी। कखनो काल, जखन एकांत होइ छी, अपनो सोचैत रहै छी जे एतेक कमाइ छी, मुदा तैयो दिन-राति खटैत-

खटैत बेचैने किए रहै छी, कखनो चैन किए ने भऽ पबै छी। कोन सुखक पाछू बेहाल छी से बुझिए ने रहल छी। टी.भी. घरमे अछि मुदा देखैक समय नइ भेटैए। खाइले बैसै छी तँ चिड़ै जकाँ दू-चारि कौर खाइत-खाइत मन उड़ि जाइए, जे फल्लाँकेँ समय देने छिऐ, नै जाएब तँ आमदनी कमि जाएत। तहिना सुतैयोमे होइए। मुदा एते फ्रिसानीक लाभ की भेटैए तँ सिरिफ पाइ। की पाइए जिनगी छी..?"

महेन्द्रक बदलल विचार सुनि, मुस्कियाइत सुबुध बजला- "भाय, पाइ जिनगी चलबैक मात्र साधन छी, नइ कि जिनगी। पाइक भीतर एते पैघ दुर्विचार छिपल अछि जे मनुखकेँ कुकर्मी बना दइए। कुकर्मी बनलापर मनुषत्व समाप्त भऽ जाइ छइ। जइसँ चीन-पहचीन सेहो समाप्त भऽ जाइ छइ। तेतबे नहि, अपराधिक वृत्ति सेहो पनपए लगै छइ। अपराधिक वृत्ति मनुखमे एलापर पैघ-सँ-पैघ अपराधमे स्वत: धकला जाइए। तँए अपन जिनगीकेँ देखैत परिवार आ समाजक जिनगी देखब जिनगी छी। ओना, मनुख मात्रक सेवा-ले सेहो सदिखन तत्पर रहक चाही, जहाँ धरि भऽ सकए, करबो करी। मुदा कर्मक दुनियाँ बड़ कठिन अछि। एतेक कठिन अछि जे कर्मठ-सँ-कर्मठ लोक रस्तेमे थाकि जाइ छैथ। मुदा ओ थाकब हारब नहि, जीतब छी। जे समाज रूपी गाछ मौला गेल अछि ओइ जड़िमे तामि-कोरि-पटा कऽ नव जिनगी देबाक अछि। जइसँ ओ अनवरत फुलाइत रहत। ऐ काजमे अपनाकेँ समरपित कऽ देबाक अछि।"

सुबुधक संकल्पित विचारसँ महेन्द्रक विचार सक्कत बनए लगलैन। आँखिमे प्रखर ज्योति आबए लगलैन।

❑❑❑

❑❑

❑ **मौलाइल गाछक फूल (2009), जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या: 182-186**

समाजक मनुखो तँ सभ रंगक अछि, कियो अनका दुखकेँ अपन दुख बुझि कनैए, तँ कियो हँसैए। जे विपैत छै ओ एक गोरे बुत्ते केना मेटौल जाएत। जँ नै मेटौल जाएत तँ लोक मरैत केहेन परिस्थितिमे अछि?

देवनन्दनक नजैर बढ़लैन जे समाजमे केते परिवारसँ दोस्ती अछि आ केतेसँ दुश्मनी। नजैर खिरबए लगला तँ बौआ गेला। माएकेँ पुछलखिन- "माए, आइ तँ समाजक काज पड़त। केते परिवारसँ बाबूकेँ दोस्ती छेलैन?"

दोस्तीक नाओं सुनिते सुभद्रा हरा गेली। जेना शरीरसँ मन उड़ि गाममे बौआए लगलैन। मोन पड़लैन संग मिलि गाएल कुमरम, बिआह, शामा आ घरक गोसाँइसँ लऽ कऽ दुर्गास्थान धरिक गीत।

सासुकेँ एकाग्र होइत देखि शीला बजली- "बुड़ही तँ जनु नीन पड़ि गेली!"

नीनक नाओं सुनिते आँखि खोलि सुभद्रा बजली-

"नै कनियाँ, नीन कहाँ पड़लौं हेन। मोन पड़ि गेल आमक गाछीक धिया-पुता। भगवानो बड़ अनर्थ केने छथिन जे केकरो ढेरीक-ढेरीक चीज देने छथिन तँ केकरो ढेरीक-ढेरी खेनिहार। पाकल-पाकल आम जखन बच्चा सभकेँ दइ छिऐ आ ओकर हृदए जुड़ाइ छै तँ अपनो आत्मा जुरा जाइए...।"

मुस्की दैत शीला बजली-

"बुड़ही फेर ओंघा गेली।"

बोलीमे जोर दैत शीला फेर बजली- "बेटा पुछै छैन, गाममे केते गोरेसँ दोस्ती छैन?"

"एहेन गप किए पुछलह बौआ! ने कियो दोस अछि आ ने कियो दुश्मन।"

देवनन्दन बजला- "जखन गाम पहुँचब तँ बाबूकेँ जरबैले तँ लोक सभकेँ

कहए पड़त किने?”

बेटाक बात सुनि सुभद्रा बजली-

“छिया, छिया। मिथिलाक समाज छी। ऐ समाजमे मुरदा जरबैले, केकरो घरक आगि मिझबैले, केकरो-साँप-ताँप कटने रहल आकि गाछ-ताछपर सँ खसल रहल तेकर जिगेसा करैले, केकरो कियो कहै नइ छइ। ई सामाजिक काज छी, तँए अपन काज बुझि सभ अपने तैयार भऽ जाइत अछि।”

माइक बात सुनि देवनन्दन नमहर साँस छोड़लैन। गामक सीमापर अबिते सभ चुप भऽ गेला। अपन गाछी लग पहुँचते देवनन्दन गाड़ी रोकबौलैन। रघुवीर भायकेँ अबैत देखने रहथिन।

एक बेर पच्छिमसँ कमला आ पूबसँ कोसीक बान्ह टुटि गेल। बरखो खूब होइत रहइ। नेपालक पहाड़सँ तराइ धरिक पानि सेहो टघैर-टघैर वेग बनि अबैत रहए। पानियोँ किए ने औत? आखिर ओकरो तँ समुद्रमे समेबाक लिलसा छइ। तहूमे मिथिलांचल बीच बाटपर अछि ओकरा किए ने होइत जाएत। गामक उत्तरसँ बाढ़िक पानि ढुकल आ एक दिससँ पसरैत दच्छिन-मुहेँक रस्ता धेलक। जाधैर पानि वासभूमिसँ हटि बाधक रस्ता धरि रहल ताधैर केकरो चिन्ता नै भेलइ। मुदा जखन पानि मोटा कऽ अँगना-घर ढुकए लगल तखन सभकेँ चिन्ता हुअ लगलै। गामक एकटा टोल गहींरगरमे बसल, चारू दिससँ पानि चढ़ैत-चढ़ैत अँगना-घर ढूकि गेल। एक तँ ओहिना, बरखामे टटघरो आ भीतघरो ढहिए-ढनमना गेल रहइ। तैपर सँ बाढ़िक वेग अबिते भीतघर खसए लगल, टटघर सभ मचकी जकाँ झुलए लगल। घर खसैत देखि टोलक सभ मालो-जाल आ चीजो-वौस आ धियो-पुतोकेँ लऽ लऽ पोखैरक महार दिस विदा भेल। पच्चीस परिवारक टोल। बेदरा-बुदरी लगा एक साए तीस आदमी। चालिस-पैंतालीसटा गाए-महींस, पच्चीस-तीसटा बकरियो। मालो-जाल बाढ़िक पानि आ आवाज सुनि डरे थरथर कँपैत! कोनो-कोनोकेँ आँखिसँ नोरो खसैत। मुदा एक्कोटा ने खाइले डिरियाइत आ ने पानि पीबैले। सभ अपन-अपन माल जालक डोरी खोलि देलक। डोरी खुजिते आगू-पाछू जोरिया सभ पानिक वेगसँ ऊपर भेल। मुदा

एकाएक पानि नै चढ़ल जइसँ एक्कोटा जान-मालक नोकसान नै भेल।

टोलक समाचार सुनिते रघुनन्दन करिया काकाकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“एमहर आबह हौ बटु।”

करिया काकाकेँ दुलारूसँ ‘बटु’ कहैत रहथिन। अबिते कहलखिन-

“सुनै छी जे पुबाहि टोलमे बाढ़िक पानि चढ़ि गेलै हेन से चलह तँ देखिऐ?”

बिना किछु बजने करिया काका संग भऽ गेलैन। थोड़े आगू बढ़ला तँ देखलैन जे चेतनसँ लऽ कऽ धिया-पुता धरि किछु-ने-किछु माथपर उठौने, भीजैत-तीतैत गामक ऊँचका जगह दिस जा रहल अछि।

मनमे उठलैन जेतए जा रहल अछि ओतए रहत केना? मुदा आँखि उठा कऽ तकैयोमे लाज होइन। जे जनिजाति कहियो सोझहामे बजबो ने करैत, ओ सभ साड़ीक फाँड़ बन्हने कियो अन्न, तँ कियो ओछाइन, तँ कियो बरतन-बासन नेने बच्चा सबहक पाछू-पाछू जा रहल अछि। लोकक दशा देखि करिया काकाकेँ कहलखिन-

“बटु, सभकेँ अपना ऐठाम लऽ चलह, जहाँ धरि सकरता धरत तहाँ धरि पार लगेबै।”

दुनू गोरे सभकेँ संग केने अपना घरपर एला। समस्या तँ देशक नै सिरिफ एक टोलक अछि मुदा पहाड़ोसँ नमहर। समाजक मनुखो तँ सभ रंगक अछि, कियो अनका दुखकेँ अपन दुख बुझि कनैए, तँ कियो हँसैए। जे विपैत छै ओ एक गोरे बुत्ते केना मेटौल जाएत। जँ नै मेटौल जाएत तँ लोक मरैत केहेन परिस्थितिमे अछि?

मनमे बुकौर लगि गेलैन, कोनो बाटे नै सुझैत रहैन। सभसँ पहिल समस्या अछि लोको आ मालो-जालकेँ पानिसँ बँचैले जगह। अपना घरे कएटा अछि। तहूमे सभ व्योतले अछि! अँगनाक घर अन-पानिसँ आ जारैन-काठीसँ भरल अछि। लऽ दऽ कऽ एकटा दरबज्जा खाली अछि। जे परिवारक प्रतिष्ठा छी, दोसराक आश्रम-स्थल। रघुनन्दनक मनमे नव आशा जगलैन जे जे विपैतमे पड़ल अछि ओ तँ अपन विपैतक मुकाबला करैले सेहो

अछि। मुहसँ हँसी निकललैन। अँगनासँ दरबज्जा धरि सभकेँ ठौर धड़ौलैन। माल-जालकेँ तत्खनात तँ बान्हेपर, माने रस्तेपर खुट्टा गाड़ि-गाड़ि बन्हैले कहलखिन। खाइक ओते जरूरी नै बुझलैन जेते माल-जालक ठौरक। करिया काकाकेँ कहलखिन-

“बटु, तत्खनात तँ सभ असथिर भेल। पहिने मनुखो आ मालो-जालकेँ खाइक ओरियान करह। तेकर बाद ऐगला काज देखबै।”

❑❑❑

❑❑

❑ जीवन-मरण, 2009, जगदीश प्रसाद मण्डल, पृष्ठ संख्या : 27-30

परिचय : उमेश मण्डल

जन्म : 31 दिसम्बर 1980, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार), माता-पिता : श्रीमती रामसखी देवी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, पत्नी : श्रीमती पूनम मण्डल, सन्तान: पल्लवी मण्डल, तुलसी कुमारी, मानव अनीश मण्डल, शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा ग्रामीण माहौलमे। बी.ए. (प्रतिष्ठा) 2001 इस्वीमे, एल. एन. जनता कॉलेज- झंझारपुर (मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा) सँ, एम.ए. 2012 इस्वीमे आ राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) 2015 इस्वीमे तथा शोध–पीएच.डी.– 'मैथिली साहित्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनामे परिवर्तनक स्वर', 2021 इस्वीमे, बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय- मुजफ्फरपुरसँ।

प्रकाशित कृति : (1) निश्तुकी (पद्य संग्रह, 2009), (2) संस्कार गीत (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक सङ्कलन, 2010)। (3) 'मिथिलाक जीव-जन्तु', (4) 'मिथिलाक वनस्पति' आ (5) 'मिथिलाक जिनगी' (डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, 2011)। (6) विदेह मैथिली लघुकथा संग्रह, (7) विदेह मैथिली बीहनि कथा संग्रह, (8) विदेह मैथिली पद्य संग्रह, (9) विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना, (10) विदेह मैथिली नाट्य उत्सव तथा (11) विदेह मैथिली शिशु उत्सव (संग सम्पादन कार्य, 2012 इस्वीमे)। (12) टुटैत मनक जुड़ाव (कथा संग्रह, 2018), (13) पंचदेव (100 खण्ड-ग्रन्थ, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक बीछल कथाक सङ्कलन, 2018), (14) भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद, 2018, मूल लेखक- श्री गीतेश शर्मा), (15) दुध-पानि फराक-फराक (कथा-पाण्डुलिपि-छाया-संस्करण, 2018), (16) देवाश्रम (35 खण्ड-ग्रन्थ, विचारोत्तेजक पाम्फलेट सङ्कलन, 2019), (17) मुक्तपुरुष (शोध आलेखक संग्रह, 2021)। (18) हेन्डबुक सँ फेसबुक धरि, (19) समस्या सँ समाधान धरि, (20) निर्विकल्प, (21) अभ्यन्तर आ (22) जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (विचारोत्तेजक गद्यांश सङ्कलन, क्रमशः 2021-2022 इस्वी), (23) जगदीश

प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण, 2022)।

संस्थापक : पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल), योगदान : प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक 09 दर्जन पोथीक मुद्रण एवम प्रकाशनक अलावे अनेको अन्य रचनाकारक सात दर्जनसँ ऊपर ग्रन्थक अक्षर संयोजन अवैतनिक। 'सगर राति दीप जरय'क 80म, 88म, 100म (शतांक) आ 107म गोष्ठीक संयोजनक अलावे दर्जनो परिचर्चा-संगोष्ठीक आयोजन। ठाम-ठाम दर्जनो मैथिली पोथी-प्रदर्शनी।

सम्मान/पुरस्कार : (1) विदेह युवा पुरस्कार (2013 इस्वीमे, निश्तुकी पद्य संग्रह लेल), (2) सहयोग पुरस्कार (2021 इस्वीमे, शकुन्तला-भुवनेश्वरी मैथिली-संस्कृत सम्वर्द्धन न्यास- हैदरावादसँ) तथा (3) लोकचिन्तन विशिष्ठ सेवा सम्मान- 2022

स्थायी पता : ग्राम+पोस्ट- बेरमा, वार्ड नं.: 03,भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, बिहार- 847410, सम्प्रति: तुलसी भवन, जे. एल. नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार- 847452